# चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान




राजीव अग्रवाल
धीरेन्द्र कुमार सिंह
रोहित कुमार नामदेव

# चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान

**डॉ. राजीव अग्रवाल**

डीन-शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

**धीरेन्द्र कुमार सिंह**

M.Ed., M.A.(Geography)

**रोहित कुमार नामदेव**

M.A. (Economics), B.Ed.

# चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल
धीरेन्द्र कुमार सिंह
रोहित कुमार नामदेव

**© सर्वाधिकार सुरक्षित**

**E-Book संस्करण : 2021**

**मूल्य : ₹49/-**

**ISBN : 978-93-5473-773-2**

**प्रकाशक-**
रोहित कुमार नामदेव
H.N.- 23/7004 तुलसी नगर थाना-अतर्रा
तहसील-अतर्रा जनपद-बाँदा, 210201
Mob.- 09140030148
E -mail- rohitnamdev369@gmail.com

# प्राक्कथन

भारतवर्ष की पुण्य भूमि युगों-युगों से महापुरुषों के आविर्भाव से कृतार्थ होती रही है, आज भी हो रही है और निश्चय ही भविष्य में भी होती रहेगी। हमारे देश में फैली बुराइयों एवं कुरीतियों को खण्डित कर देशवासियों का उत्थान करने में स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे अनेक महापुरुषों ने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था। ऐसे ही एक महापुरुष स्वामी चिन्मयानंद जी थे। इन्होंने लोगों के बीच जाकर शैक्षणिक व धर्मार्थ कार्य, कृषि विकास, रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण, अकाल निवारण अनाथालय एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवा कार्य किये। धार्मिक पुस्तकों के मर्म के माध्यम से स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपनी अमृतवाणी द्वारा उपदेश दिए। इस प्रकार अनेक साधु, संत, महात्मा, धर्माचार्य एवं महापुरुष हुए, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। यहाँ धर्म पर आधारित शिक्षा भारतीय जीवन का आवश्यक अंग एवं संस्कृति की आधारशिला रही है। धार्मिक शिक्षा से लोगों में अच्छे संस्कार उत्पन्न होते हैं। संस्कृति से हमारी चेतना, आचार-विचार, व्यवहार आदि भी परिमार्जित होते हैं। धार्मिक शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण व संवर्धन, व्यावहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति तथा भावी पीढ़ी का नव-निर्माण निहित है। हमारे महापुरुषों की प्रेरणा द्वारा भारतीय संस्कृति के मूल संस्कारों से सम्पन्न ब्रह्मचारी विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपनी ज्ञान ज्योति से विश्व को आलोकित किया।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान** है। इस लघु शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

**प्रथम अध्याय** में भारत में शिक्षा का विकास, भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा नैतिक व धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न आयोगों के सुझाव आदि पर प्रकाश डाला गया है।

**द्वितीय अध्याय** में शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है।

**तृतीय अध्याय** में चिन्मयानन्द जी का आरम्भिक जीवन, सामाजिक सेवाएं एवं शिक्षा-दीक्षा का उल्लेख किया गया है।

**चतुर्थ अध्याय** में चिन्मय मिशन का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

**पंचम अध्याय** में चिन्मय शिक्षा आन्दोलन का उल्लेख किया गया है।

**षष्ठ अध्याय** में चिन्मय विद्यालय नवीन सेवाश्रम न्यास, प्रयागराज की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

**सप्तम अध्याय** में निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन के सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक

कि वह जन-सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों आदि का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण त्रुटियाँ से अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यंत आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

**05/07/2021**

**राजीव अग्रवाल**

**धीरेन्द्र कुमार सिंह**

**रोहित कुमार नामदेव**

# अनुक्रमणिका


| अध्याय | विषयवस्तु/ तालिका सूची/ चित्र सूची | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| **प्रथम अध्याय** | **अध्ययन परिचय** | **01-28** |
| 1.1 | प्रस्तावना | |
| 1.1.1 | शिक्षा: विकास की प्रक्रिया | |
| 1.1.2 | भारत में शिक्षा का विकास | |
| 1.1.2.1 | प्राचीन काल में शिक्षा | |
| 1.1.2.2 | मध्य काल में शिक्षा | |
| 1.1.2.3 | आधुनिक काल में शिक्षा | |
| 1.1.2.3.1 | स्वतन्त्रता के पूर्व शिक्षा | |
| 1.1.2.3.2 | स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा | |
| 1.1.3 | भारतीय शिक्षा की समस्याएं | |
| 1.1.3.1 | शिक्षा का व्यावसायीकरण | |
| 1.1.3.2 | शिक्षा का राजनीतिकरण | |
| 1.1.3.3 | नैतिक शिक्षा से संबंधित समस्याएं | |
| 1.1.3.4 | धार्मिक शिक्षा में समस्याएं | |
| 1.1.3.5 | शिक्षा में सांस्कृतिक नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास | |

| | |
|---|---|
| 1.1.4 | नैतिक व धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न आयोगों के सुझाव |
| 1.1.4.1 | वुड का घोषणा पत्र |
| 1.1.4.2 | भारतीय शिक्षा आयोग |
| 1.1.4.3 | विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग |
| 1.1.4.4 | माध्यमिक शिक्षा आयोग |
| 1.1.4.5 | कोठारी आयोग |
| 1.1.5 | शिक्षा धर्म और नैतिकता |
| 1.1.5.1 | धार्मिक और नैतिक शिक्षा का महत्व |
| 1.1.5.2 | शिक्षा धर्म व नैतिकता में सम्बन्ध |
| 1.1.5.3 | शिक्षा का धर्म से विमुखीकरण |
| 1.1.6 | विभिन्न समाज सुधारकों का उदय |
| 1.1.7 | विभिन्न धार्मिक संस्थाओं का उदय |
| 1.2 | समस्या का प्रादुर्भाव |
| 1.3 | समस्या कथन |
| 1.4 | अध्ययन समस्या का औचित्य |
| 1.5 | समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या |
| 1.5.1 | चिन्मय मिशन |
| 1.5.2 | शैक्षिक |
| 1.5.3 | योगदान |

| | | |
|---|---|---|
| 1.6 | अध्ययन के उद्देश्य | |
| 1.7 | अध्ययन का सीमांकन | |
| 1.8 | अध्ययन विधि: व्यक्तिगत विधि | |
| 1.9 | शोध उपकरण | |
| 1.9.1 | प्रेक्षण | |
| 1.9.2 | साक्षात्कार | |
| 1.10 | अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता | |
| **द्वितीय अध्याय** | **संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन** | **29-39** |
| 2.1 | प्रस्तावना | |
| 2.2 | शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन | |
| 2.3 | अध्ययन संबंधित पत्र- पत्रिकाएं, पुस्तकें आदि | |
| 2.4 | निष्कर्ष | |
| **तृतीय अध्याय** | **स्वामी चिन्मयानन्द जी का जीवन परिचय** | **40-52** |
| 3.1 | आरम्भिक जीवन | |
| 3.2 | स्नातकोत्तर | |
| 3.3 | रुझान | |
| 3.4 | दीक्षा | |
| 3.5 | देहांत | |
| 3.6 | सामाजिक सेवाएं | |

| | | |
|---|---|---|
| 3.7 | जीवन की नई दिशाएं | |
| 3.8 | स्वामी जी के कार्य | |
| 3.9 | स्वामी जी की विरासत | |
| 3.10 | स्वामी चिन्मयानन्द जी की शिक्षा | |
| **चतुर्थ अध्याय** | **चिन्मय मिशन का परिचयात्मक विवरण** | **53-66** |
| 4.1 | चिन्मय मिशन की स्थापना | |
| 4.2 | सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट | |
| 4.2.1 | सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट की स्थापना | |
| 4.3 | एक आयोजन जो आंदोलन बन गया | |
| 4.4 | चिन्मय मिशन के उद्देश्य | |
| 4.5 | चिन्मय मिशन के वर्तमान प्रमुख | |
| 4.6 | चिन्मय मिशन का अर्थ | |
| 4.7 | चिन्मय मिशन विजन | |
| 4.8 | मिशन स्टेटमेंट (वाक्य) | |
| 4.9 | चिन्मय मिशन आदर्शवाक्य | |
| 4.10 | दैदीप्यमान दृष्टि | |
| 4.10.1 | संदीपनी साधनालय | |
| 4.10.2 | आचार्यगण | |
| 4.10.3 | ज्ञान यज्ञ | |
| 4.10.4 | आध्यात्मिक शिविर एवं आवासी पाठ्यक्रम | |

| | | |
|---|---|---|
| 4.10.5 | चिन्मय प्रकाशन | |
| 4.10.6 | चिन्मय क्रिएशन | |
| 4.11 | चिन्मय मिशन की अन्य सुविधाएं एवं सामग्री | |
| 4.11.1 | केन्द्र एवं आश्रम | |
| 4.11.2 | शिशु विहार | |
| 4.11.3 | बाल विहार | |
| 4.11.4 | चिन्मय युवा केंद्र | |
| 4.11.5 | चिन्मय सेतुकारी | |
| 4.11.6 | चिन्मय स्वाद्याय मण्डल | |
| 4.11.7 | देवी ग्रुप | |
| 4.11.8 | बालप्रस्थ संस्थान | |
| 4.11.9 | चिन्मय विभूति | |
| 4.11.10 | चिन्मय आर्गेनाइजेशन फॉर रूरल डेवलपमेंट | |
| 4.11.11 | चिन्मय मिशन हॉस्पिटल | |
| **पंचम अध्याय** | **चिन्मय शिक्षा आन्दोलन** | **67-82** |
| 5.1 | चिन्मय शिक्षा अभियान | |
| 5.2 | शिक्षा पर पूज्य गुरुदेव | |
| 5.3 | चिन्मय शिक्षा आन्दोलन की उत्पत्ति | |
| 5.4 | अभिप्राय और उद्देश्य | |
| 5.5 | चिन्मय विद्यालय का आदर्शवाक्य | |

5.6 चिन्मय मिशन और विद्यालय की प्रतिज्ञा

5.7 चिन्मय विद्यालय गीत

5.8 चिन्मय विद्यालय ध्वज

5.9 चिन्मय दृष्टि कार्यक्रम

5.10 सी.सी.एम.टी. शिक्षा प्रकोष्ठ

5.11 चिन्मय शिक्षा छात्रवृत्ति

5.12 चिन्मय शिक्षा पुरस्कार

5.13 चिन्मय विद्यालय की उपलब्धियाँ

5.13.1 शैक्षणिक गुणवत्ता

5.13.2 खेल में उत्कृष्टता

5.13.3 संस्कृति प्रदर्शन

5.14 चिन्मय विद्यालय एक विशिष्ट विद्यालय

5.15 भारत में चिन्मय मिशन के प्रमुख शैक्षिक संस्थान

5.16 उत्तर प्रदेश के चिन्मय मिशन के प्रमुख शैक्षिक संसथान

**षष्ठ अध्याय चिन्मय विद्यालय नवीन सेवाश्रम न्यास तेलियरगंज,प्रयागराज : एक अवलोकन 83-97**

6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

6.2 चिन्मय विद्यालय की स्थापना

6.3 विद्यालय के उद्देश्य

6.4 विद्यालय का प्रकार

6.5 विद्यायल की मान्यता

6.6 विद्यालय की अवस्थिति

6.7 विद्यालय का वातावण

6.8 विद्यालय का प्रबंधन

6.9 विद्यालय की वित्तीय स्थिति

6.10 विद्यालय के प्रधानाचार्य

6.11 विद्यालय के शिक्षक

6.12 विद्यालय भवन

6.13 विद्यालय का पाठ्यक्रम

6.14 पाठ्यक्रम सहगामी क्रियांए

6.15 विद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया

6.16 विद्यालय का निर्धारित शुल्क

6.17 विद्यालय की दिनचर्या

6.18 विद्यालय की वेशभूषा

6.19 कम्प्यूटर शिक्षा

6.20 सामाजिक सेवा कार्य

6.21 विद्यालय की उपलब्धियाँ

6.22 पत्र-पत्रिकाएं

6.23 विद्यालय की गतिविधियाँ

6.23.1 विद्यालय में महोत्सव

6.23.2 प्रतियोगिता का आयोजन

| | | |
|---|---|---|
| 6.23.3 | पुरस्कार वितरण | |
| 6.23.4 | सेमिनार का आयोजन | |
| 6.23.5 | स्वास्थ्य परीक्षण | |
| 6.24 | अन्य गतिविधियाँ | |
| 6.24.1 | आश्रम | |
| 6.24.2 | मन्दिर | |
| 6.24.3 | वानप्रस्थ | |
| **सप्तम अध्याय** | **निष्कर्ष एवं सुझाव** | **98-102** |
| 7.1 | निष्कर्ष | |
| 7.2 | शैक्षिक उपादेयता | |
| 7.3 | अध्ययन के सुझाव | |
| 7.4 | भावी शोध हेतु सुझाव | |



If you do not have the right knowledge,
the experience is useless!

– Swami Chinmayananda

# प्रथम अध्याय

# अध्ययन परिचय

## 1.1 प्रस्तावना

भारत प्राचीन काल से ही समृद्धि के शिखर पर रहा है। उसके शिखर पर रहने का मुख्य आधार उसमें अपने अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने की क्षमता है। हमारे पूर्वजों ने जीवन को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखा और **सर्व भूते हिते रतः** होना ही अपना कर्त्तव्य समझा।

भारत एक ऐसा देश है, जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, आदर्शों एवं परम्पराओं का ही प्रभाव था कि सम्पूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार हुआ।

सैकड़ों हजारों वर्षों से ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य की चिन्तन शक्ति में भी वृद्धि हो रही है। यह मानव यात्रा जहाँ जैविक क्षेत्र में कुण्डलाकार है अथवा जन्म शैशव-युवावस्था मृत्यु के वृन्त में घूम रही है, वहीं ज्ञान के क्षेत्र में वह निरन्तर प्रगति पर है। उसकी प्रगति का मूल आधार उसकी जिज्ञासा है।

मनुष्य सदैव अपने वातावरण को जिज्ञासा की दृष्टि से देखता है। उसे समझने तथा नियन्त्रित करने का प्रयास करता है। बहुधा उसकी दृष्टि अन्तर्मुखी हो जाती है और वह अपने को भी समझने का प्रयास करता है। जिज्ञासु मानव की शक्ति असीमित है। जैसे ही उसके सामने कोई समस्या आती है, उसकी समस्त शारीरिक एवं मानसिक शक्तियाँ उस समस्या का समाधान कर लेती हैं।

सम्पूर्ण विश्व में समय-समय पर विभिन्न चिन्तन, सम्प्रदाय, मानव प्रकृति, सम्बन्ध उपासना, जीवन-जगत कतिपथ विषयों पर मानवता के परिष्कृतम सांसारिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु महामानव अवतरित होने आये हैं। संसार के समस्त प्राणियों की बौद्धिक चेतना इन समस्त महामानवों से अनुप्राणित, परिचर्चित, प्रभावित एवं लाभान्वित होती रही है।

इन समस्त महामानवों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी- विविध जातियों वाले इस बड़े भू-भाग की सामाजिक संस्कृति में जो विविधता है, उसमें एकता और तारतम्य स्थापित करने वाला यही एक बिन्दु था। ऐसी रत्न प्रवासिनी वसुधा भारतवर्ष में **स्वामी चिन्मयानन्द जी** ने जन्म लिया। धर्म और संस्कृति ही किसी राष्ट्र की आत्मा होती

है। उसके आच्छादिम हो जाने पर जनता के मन में दुर्बलता आ जाती है। उसे दूर करने के लिए देश के विद्वानों ने अनेक धार्मिक सुधार के आन्दोलन प्रारम्भ किये। उसी समय सन् 1991 में सनातन धर्म को आधार बनाकर चिन्मय आन्दोलन का उदय हुआ। इस आन्दोलन के प्रवर्तक 'स्वामी चिन्मयानन्द जी' थे।

उन्होने स्वामी शिवानन्द से सन्यास की दीक्षा ली थी और स्वामी तपोवन महाराज से वेदान्त ग्रन्थ पढ़े थे तथा उनके निर्देशन मे आध्यात्मिक साधना की थी। उनके सामने भावी राष्ट्र का एक आदर्श चित्र था। उसे मूर्तिमान करना चाहते थे। उसके लिए उन्होंने ज्ञान यज्ञों की योजना बनायी। इसका सिलसिला 8 अगस्त सन् 1953 को 'चिन्मय मिशन की स्थापना' के साथ प्रारम्भ हुआ।

अतः प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ नयी परिस्थिति में चिन्मय मिशन के शैक्षिक योगदान के अध्ययन का एक प्रयास है। समाज शिक्षा को प्रभावित करता है, विभिन्न पक्षों पर विचार करता है तथा लक्ष्य निर्धारित करता है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति करना ही मानव जीवन का उद्धेश्य है। शिक्षा इन उद्धेश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान एवं कौशल विकसित होते हैं, जो पुनः दर्शन को नवीन रूप प्रदान करते हैं। नवीन दर्शन, नवीन शिक्षा को जन्म देकर इस चक्र को गतिशील बनाता है।

### 1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

बालक में कुछ शक्तियाँ जन्म के समय से ही रहती हैं, जिन्हें जन्मजात शक्तियाँ कहतें हैं। बालक इन्हीं जन्मजात शक्तियों के आधार पर व्यवहार करता है। शिक्षा इन जन्मजात शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा बालक को उनकी संस्कृति, रीति-रिवाज, परम्परा, व्यवहार, नैतिक चरित्र, सामाजिकता, रूढ़िवादिता, बौद्धिक, मानसिक, शरीर, धार्मिक आदि गुणों का विकास करती है। शिक्षा छात्रों को इस योग्य बनाती है कि वे सांस्कृतिक विकास में योगदान दे सकें। यह प्रक्रिया केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव है, जिससे मनुष्य अपने जीवन के महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है।

विद्धानों एवं शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार, "शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सामाजिक अन्तः क्रिया होती है, तो वे एक-दूसरे की भाषा, विचार और आचरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। इसी प्रभाव के फलस्वरूप सीखने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है और जब यह कार्य कुछ निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर किया जाता है, तो उसे ही शिक्षा कहते हैं। शिक्षा समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों से सम्बन्धित होती है। अतः यह कहना उचित है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।"

शिक्षा सदैव गतिशील रहकर बालक को देश, काल और परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर अग्रसर करती है। समाज में निरन्तर परिवर्तन के कारण शिक्षा के प्रारूप में भी परिवर्तन आता है। निरन्तर विकास परिवर्तन के कारण ही विकास की गति भी प्रभावित होती है।

शिक्षा के दो पक्ष होते हैं - प्रथम, जो प्रभावित करता रहता है (शिक्षक) और द्वितीय, वह जो प्रभावित होता है (शिक्षार्थी)।

**जॉन एडम्स के अनुसार** - "शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, जिससे कि उसके व्यवहार में परिवर्तन हो सके।"

**जॉन डी. वी. के अनुसार** – "शिक्षा की प्रक्रिया में अध्यापक और छात्रों के बीच अन्तः क्रिया का कोई न कोई आधार अवश्य होता है और वह आधार समाज है। क्योंकि बालक का विकास समाज में रहकर ही होता है।"

अतः उन्होंने शिक्षा प्रक्रिया के तीन आधारभूत स्तम्भ बताये हैं-

(1) शिक्षक (2) बालक (3) पाठ्यक्रम

आधुनिक समय में शिक्षा का स्वरूप काफी बदल गया है। अब शिक्षा को केवल विद्यालय और पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। सामाजिक, आर्थिक क्रियाकलापों का भी शैक्षिक महत्व है। विद्यालय के अतिरिक्त अन्य औपचारिक तथा निरौपचारिक साधनों को भी शिक्षा का साधन माना जाता है क्योंकि उनकी रूचि के आधार पर साधनों के चयन की स्वतन्त्रता प्रदान की जा रही है। इसमें शिक्षा का प्रचलित स्वरूप, पूर्णकालिक शिक्षा, अंश कालिक शिक्षा, पत्राचार द्वारा शिक्षा एवं सूचना के स्रोतों का उपयोग करने वाले स्वशिक्षा के अनेक रूप भी सम्मिलित हैं।

### 1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरन्तर विकासशील पाते हैं। सूत्रकाल तथा लोकायत के बीच शिक्षा की सार्वजनिक प्रणाली के पश्चात हम बौद्धकालीन शिक्षा को निरंतर भौतिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होते देखते हैं।

प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट भी थी। लेकिन कालान्तर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ। विदेशियों ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया

जिस अनुपात में होना चाहिए था। अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियाँ व समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियाँ व समस्याएँ हमारे सामने हैं। सन् 1850 तक भारत में गुरूकुल की प्रथा चलती आ रही थी। परन्तु मैकाले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन शिक्षा का अन्त हो रहा था। भारत में कई गुरूकुल तोड़े गए और उनके स्थान पर कान्वेंट और पब्लिक स्कूल खोले गए।

### 1.1.2.1 प्राचीन काल में शिक्षा का विकास

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक तथा औपचारिक दानों प्रकार के शैक्षणिक केन्द्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। औपचारिक शिक्षा मन्दिरों, आश्रमों और गुरूकुलों के माध्यम से दी जाती थी। उच्च शिक्षा के केन्द्र भी ये सब ही थे। जबकि परिवार, पुरोहित, पण्डित, सन्यासी और व्यवहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होती थी।

विभिन्न धर्मसूत्रों में इस बात का उल्लेख है कि माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरू है। कुछ  विद्वानों ने पिता को बच्चे के शिक्षक के रूप में स्वीकार किया है। जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ, वैसे-वैसे शैक्षणिक संस्थाएँ स्थापित होने लगीं।

गुरूकुलों की स्थापना प्रायः वनों, उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी। वनों में गुरूकुल बहुत कम होते थे। अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास, अध्ययन तथा चिन्तन पसन्द करते थे। वाल्मिकी, सन्दीपनी, कण्व आदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थें। इनके यहाँ दर्शनशास्त्रों के साथ-साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र भी पढ़ाये जाते थे।

मनु के अनुसार - "ब्रह्मचारों को गुरू के कुल में, अपनी जाति वालों में तथा कुल बान्धवों के यहां से भिक्षा याचना नहीं करनी चाहिए, यदि भिक्षा योग्य दूसरा घर नहीं मिले, तो पूर्व गृहों का त्याग करके भिक्षा याचना करनी चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि गुरूकुल गांवों के सन्निकट ही होते थे।"

कभी-कभी राजा भी अनेक विद्वानों को आमंत्रित करके दान में भूमि देकर तथा जीविका निश्चित करके उन्हें बसा लेते थे। उनके बसने से वहाँ एक नया गांव बन जाता था। इन गांवों को 'अग्रहार' कहते थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न हिन्दु सम्प्रदायों एवं मठों के आचार्यों के प्रभाव से ईसा की दूसरी शताब्दी के लगभग मठ शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गये। इनमें शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य आदि के मठ प्रसिद्ध हैं।

### 1.1.2.2 मध्यकाल में  शिक्षा

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिन्दू, अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गयीं, साथ ही मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारम्भिक शिक्षा के केन्द्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। वे पढ़ना, लिखना, गणित अर्जीनवीसी और चिट्ठीपत्री भी सीखते थे। इनमें हिन्दू बालक भी पढ़ते थे।

मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ प्रधानतः धार्मिक शिक्षा दी जाती थी; साथ ही साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढाई होती थी।

राजकुमारों कें लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबन्ध था। राज्यव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून, आदि का ज्ञान गृहाशिक्षक से प्राप्त होता था। राजकुमारियाँ भी शिक्षा पाती थीं। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। वे विद्वान और सच्चरित्र होते थे। छात्र और शिक्षकों का आपसी सम्बन्ध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्या, प्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परम्परा थी। प्रश्नोत्तर, व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पढ़ाया जाता था। कोई परीक्षा प्रणाली नहीं थी।

अध्ययन अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्वता के विषय में तथ्य प्राप्त करते थे। दण्ड प्रयोग किया जाता था। जीविकोपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा आदि मुस्लिम शिक्षा के केन्द्र थे। मुसलमान शासकों के सरंक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन, ग्रन्थों की रचना और उनका पठन-पाठन बराबर होता रहा।

### 1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत में आधुनिक काल में शिक्षा को दो भागों में बांट सकते हैं-

(1) स्वतन्त्रता के पूर्व शिक्षा

(2) स्वतन्त्रता के पश्चात शिक्षा

### 1.1.2.3.1 स्वतन्त्रता के पूर्व शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्म-प्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गयी। उन्होंने कई विद्यालयों की स्थापना की। प्रारम्भ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ-साथ इतिहस, भूगोल, व्याकरण, गणित साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बन्द रहता था। अनेक शिक्षक छात्रों की पढ़ाई अनेक श्रेणियों में कराते थे।

प्रायः 150 वर्षों के बीतते-बीतते व्यापारी ईस्ट इण्यिा कम्पनी राज्य करने लगी। सन् 1780 ईसवी में कलकत्ता में कलकत्ता मदरसा और सन् 1791 ईसवी में बनारस में संस्कृत कालेज कम्पनी द्वारा स्थापित किये गये। 1813 के आज्ञा पत्र के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चिय किया गया। किस प्रकार शिक्षा दी जाए, इस पर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। अन्त में लॉर्ड मैकाले के तर्क-वितर्क और राजा राममोहन राय के समर्थन से प्रभावित हो 1835 ई. में लॉर्ड बेंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य और यूरोपीय इतिहास, विज्ञान इत्यादि की पढ़ाई हो और इसी में 1813 के आज्ञापत्र में अनुमोदित धन का व्यय हो।

सन् 1853 में शिक्षा की प्रगति की जाँच के लिए एक समिति बनी। इस समिति के निर्णय के आधार पर 1854 के बुड के घोषणा पत्र में संस्कृत, अरबी और फारसी का ज्ञान आवश्यक समझा गया। सन् 1882 में सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में प्राथमिक शिक्षा के लिए सुझाव दिये। व्यावसायिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा पर बल दिया। आयोग ने कहा कि माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी भाषा में दी जाये।

### 1.1.2.3.2 स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा

स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा की बागडोर भारतीयों के हाथ में आ गयी। शिक्षा में धार्मिकता व आध्यात्मिकता का एकदम लोप हो गया था। इसीलिए आजादी के बाद राधाकृष्णन आयोग (1948-49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953), विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (1956), कोठारी आयोग (1964), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968), नई शिक्षा नीति (1986) के द्वारा भारतीय शिक्षा व्यस्था में सुधार के लिए समय-समय पर सही दिशा देने के लिए गंभीर कोशिशें की गयी। आयोग की सिफारिशों को बड़ी तत्परता के साथ कार्यान्वित किया गया, जिससे उच्च शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा प्राथमिक शिक्षा में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा में प्रगति होने लगी। विश्व भारती, गोकुल

अरविन्द आश्रम, जामिया इस्लामिया, विद्या भवन, वनस्थली विद्यापीठ, श्री श्री रविशंकर विद्यामंदिर इस्कान, चिन्मय आश्रम आदि आधुनिक भारतीय शिक्षा के विद्यालय और प्रयोग हैं।

## 1.1.3 भारतीय शिक्षा की समस्याएँ

शिक्षा जीवन जीने की कला है। किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की बात करें, तो पाएंगे कि शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले प्रयास सकारात्मक नहीं हैं। आजकल जिस प्रकार की शिक्षा विद्यालयों में दी जा रही है, उसका जीवन के साथ कोई सरोकार नहीं दिखता। हर देश की अपनी संस्कृति, सामाजिक संरचना, आवश्यकता और भौगोलिक विशेषता होती है। यदि उस पर हम किसी अन्य व्यवस्था को थोपने का प्रयास करेंगे, तो परिणाम विपरीत ही होंगे क्योंकि जहाँ अनुकूलता नहीं होती वहाँ प्रतिकूलता विद्यमान रहती है। शिक्षा के क्षेत्र में हम यही कर रहे हैं। जिसके आधार पर भारत बना है, खड़ा है और जो उसकी पहचान है, वही हम आज खोते जा रहे हैं। अपनी शिक्षा पद्धति में उसे रखने पर हमारे अन्दर हेय की भावना आ रही है।

इस प्रकार आज हमें अपनी शिक्षा पद्धति के दोषों को निकालकर अपनी भारतीयता और वास्तविकता को समाहित करने की जरूरत है, जिससे भारतवासियों की समस्याओं का निदान हो सके। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा में निम्न समस्याएँ हैं-

### 1.1.3.1 शिक्षा का व्यावसायीकरण

आधुनिक शिक्षा पद्धति की अपनी अलग ही विशेषता है, पर दुर्भाग्य है कि यह केवल जीवन में आर्थिक निर्भरता प्रदान करने तक ही सिमट कर रह गयी है। सामाजिक समृद्धि एवं प्रतिष्ठा का इसमें समावेश है, पर इसका उपयोग कैसे किया जाये? इसकी अनभिज्ञता का प्रमुख कारण है - शिक्षा का व्यावसायीकरण। आज शिक्षा सिर्फ एक व्यवसाय का माध्यम बनकर रह गयी है। बाहरी जगह में व्यावहारिकता एवं समाज के सामने स्वयं की एक उत्कृष्ट प्रस्तुति का सही ताल-मेल भी शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। आज की शिक्षा में इन मूलभूत बातों का कोई महत्व नजर नहीं आता।

व्यावसायिकता की इस अंधी दौड़ में शिक्षा-रूपी व्यवसाय तो जरूर फल-फूल रहा है, पर शिक्षा का मूल उद्देश्य खत्म हो गया है।

### 1.1.3.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली को परतंत्र काल की शिक्षा प्रणाली माना जाता  है। यह ब्रिटिश शासन की देन मानी जाती है। इस प्रणाली को लॉर्ड मैकाले ने जन्म दिया था। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का समान स्तर था। परन्तु वर्तमान समय में ऐसा नहीं है। शिक्षा में भेदभाव होने लगा, आर्थिक स्तर का भेदभाव होने लगा, शिक्षा का राजनीतिकरण भी होने लगा। आज के समय में शिक्षा का स्तर राजनीति के चलते लगातार नीचे जा रहा है। कोई भी शिक्षा नीति लागू नहीं हो पाती और यदि लागू हो गयी, तो सही ढंग से चल नहीं पाती है। इसलिये शिक्षा का राजनीतिकरण नहीं बल्कि सामान्यीकरण लागू होना चाहिए, जिससे शैक्षिक कार्यों में समस्या उन्पन्न न हो।

### 1.1.3.3 नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ

नैतिक शिक्षा से व्यक्ति अपना जीवन एवं समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करता है। नैतिक शिक्षा व्यक्ति को समाज में किस तरह से रहना है, यह सिखाती है और व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाती है। इसलिए भौतिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा की भी आवश्यकता होती है। आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा समाप्त हो रही है, जिससे सामाजिक बुराइयाँ उन्पन्न हो रही हैं। नैतिकता के अभाव में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति पर बुरा असर पड़ रहा है। आज के व्यक्ति की मनोदशा खराब होती जा रही है। जगह -जगह  पर चोरी, बलात्कार, लड़ाई-झगड़े जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इसलिये बालक को नैतिक शिक्षा देना अनिवार्य कर दी जाये। नैतिक मूल्यों का विकास धार्मिक विश्वासों में होता है, इसीलिये व्यक्ति को धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा देनी चाहिए।

### 1.1.3.4 धार्मिक शिक्षा में समस्याएँ

आज के भौतिकवादी युग में लौकिक शिक्षा की असीम आवश्यकता है। किन्तु इस शाश्वत सत्य को विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए कि धर्म व्यक्ति के जीवन और चरित्र का प्रधान आधार-स्तम्भ है। आधुतिक भारतीय शिक्षा की परिधि में से धर्म को बाहर निकाल कर इस आधार-स्तम्भ को हटा दिया गया है। इसके कुत्सित परिणाम,भारत के लिए लूटमार करना, काम-वासना की तृप्ति के लिए अबलाओं का अपहरण करना ये सभी बातें धर्मविहीन शिक्षा की द्योतक है। इसके कारण आज के भारतीय अपने आदि पूर्वजों की बर्बत अवस्था की ओर अन्यन्त त्वरित गति से बढ़ रहे हैं।

इससे उनकी रक्षा तभी की जा सकती है, जब मुस्लिम शिक्षा का अनुकरण करके, आधुतिक भारतीय शिक्षा में भी धार्मिक और लौकिक शिक्षा का समन्वय किया जाये।

### 1.1.3.5 शिक्षा में सांस्कृतिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति गुरू केन्द्रित थी। गुरू का दर्जा ईश्वर से भी ऊपर था। गुरूकुल पद्धति में अध्ययन कर संसार में अपना नाम अमर करने वालों और जगत का उपकर करने वालों के सिर्फ नामों भर से एक विशाल पुस्तक की रचना हो सकती है। इतिहास गवाह है कि उन्हीं लोगों ने भारत को विश्वगुरू का दर्जा दिलवाया था। भारत को सदियों से अपनी कला, संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर गर्व रहा है। परन्तु आज पारस्परिक अविश्वास व आस्था हीनता की दशा में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल हो रहे हैं।

आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा, अस्तित्ववादी जीवन अनात्तपरक, नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण पर तर्क प्रधान चिन्ताकरण, अतीत में विश्वास, 'स्व' में अनास्था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गये हैं। इसी कारण हम अपने प्राचीन आदर्शों, मूल्यों एवं सांस्कृतिक विरासत से उदासीन होते चले जा रहे हैं। उसके स्थान पर विदेशी चिंतन प्रणाली को प्रतिष्ठित कर रहे हैं, जिससे मूल्यों का विघटन हो रहा है।

इस संकट की स्थिति को ध्यान में रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय संस्था यूनेस्कों ने भी मूल्य शिक्षा पर बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई है कि विद्यालय बच्चों में उचित मूल्यों का निर्माण करने में अक्षम है और इस बात पर बल दिया कि विद्यालयों को अपने इस उत्तरदायित्व को पूरा करना चाहिए। देश के अन्दर अनेक सामाजिक धार्मिक संस्थाएँ भी चल रही हैं, जो मूल्य परक शिक्षा देने में प्रयासरत हैं।

## 1.1.4 नैतिक व धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्नआयोगों के सुझाव

### 1.1.4.1 वुड का घोषणा-पत्र (1854)

इस आदेश पत्र में भारतीय शिक्षा के अंग-प्रत्यंगों पर विचार किया गया। इसमें कहा गया कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बौद्धिक, चारित्रिक तथा आर्थिक विकास करना है।

#### 1.1.4.2 भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन 1882-1883)

सन् 1882 में 'भारतीय शिक्षा-आयोग' का गठन सर विलियम हण्टर की अध्यक्षता में हुआ। इस आयोग द्वारा यह सुझाव दिये गये कि कॉलेज के छात्रों का नैतिक व धार्मिक स्तर का उत्थान करने के लिए उनको प्रकृति, धर्म और मानव धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराया जाना चाहिए।

#### 1.1.4.3 विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग 1948-49)

राधाकृष्णन आयोग या विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग भारत सरकार द्वारा सन् 1948 में भारतीय विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था पर रिपोर्ट देने के लिये नियुक्त किया गया था।

सन् 1947 में भारत के आजाद होने के बाद इस बात की आवश्यकता अनुभव की गयी कि देश की विश्वविद्यालयी शिक्षा की पुनर्रचना की जाए ताकि वह राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पुनरूत्थान में सहायक हो, साथ ही वैज्ञानिक, तकनीकि एवं अन्य प्रकार के मानवशक्ति का विकास सुनिश्चित करे। इस आयोग के अध्यक्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे।

#### 1.1.4.4 माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन 1952-1953)

इस आयोग ने सुझाव दिया कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास करना है, नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करना एवं व्यावसायिक कौशल का विकास करना है। आयोग ने पाठ्यचर्या में विविधता लाने, एक मध्यवर्ती स्तर जोड़ने, त्रिस्तरीय पाठ्यक्रम शुरू करने इत्यादि की सिफारिश की। इस आयोग की अध्यक्षता डॉ. ए. लक्ष्मणस्वामी मुदालियर ने की।

#### 1.1.4.5 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग 1964-66)

सन् 1964 में भारत सरकार ने डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में स्कूली शिक्षा प्रणाली को नया आकार देने के उद्देश्य से एक आयोग का गठन किया, जिसे कोठारी आयोग के नाम से जाना जाता है। कोठारी आयोग या राष्ट्रीय शिक्षा आयोग भारत का ऐसा पहला शिक्षा आयोग था, जिसने अपनी रिपोर्ट में सामाजिक बदलावों को ध्यान में रखते हुए कुछ ठोस सुझाव दिये।

कोठारी आयोग के अनुसार - "देश के आर्थिक विकास, सच्चे जनतन्त्र का निर्माण, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने, मूल्यों को जीवित रखने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। शिक्षा राष्ट्र की संपन्नता एवं कल्याण हेतु आवश्यक हैं।"

## 1.1.5 शिक्षा, धर्म एवं नैतिकता

प्राचीन भारत में अक्षमों, मुस्लिमकाल के मकतबों और मदरसों एवं हिंदुओं की पाठशालाओं में धार्मिक और नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग थी। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा नीति को धार्मिक और नैतिक शिक्षा से बिल्कुल पृथक रखा। उन्होंने राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों में शिक्षा का पूर्ण निषेध करके धार्मिक तटस्थता की नीति का अनुसरण किया। स्वतंत्र भारत ने भी उसी नीति को अपनाया। शिक्षा के बदले स्वरूप में धर्म ने भी अपना स्थान लिया। शिक्षा से तात्पर्य है, प्रत्येक को इस धर्म की अनुभूति कराना तथा उस पर आधारित व्यवहार का प्रशिक्षण प्रदान करना। मानव जीवन आज विकास की उस चरम सीमा पर पहुँच चुका है, जिसमें उसकी अहम वादी प्रवृत्ति नीव्रता से सामाजिक व्यवस्था को आधार पहुंचाने लगी है। मानवीय व्यक्तित्व और क्रिया जीवन में व्याप्त अधार्मिकता और अनैतिक प्रवृति का मूलभूत कारण यही है कि शिक्षा के सारथ धर्म एवं नैतिकता को पूर्णरूपेण जोड़ा नहीं गया है। निःसन्देहमानवतावादी धर्म पर आधारित नैतिक शिक्षा समय की मांग है।

### 1.1.5.1 धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का महत्व

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने ठीक लिखा है- चरित्र के विकास में धार्मिक नैतिक शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह शिक्षा अच्छे गुणों और आदतों का निर्माण करती है। यथा -उत्तरदायित्व की भावना, सत्य की खोज, उत्तम आदर्शों की प्राप्ति, जीवन दर्शन का निर्माण, आध्यात्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति इत्यादि।

धर्म और नैतिकता चिरकाल से भारतीयों की सांस्कृतिक विरासत के अंग रहे हैं। अतःछात्रों को धार्मिक और नैतिक शिक्षा आवश्यकता है। इस शिक्षा से छात्रों में सदाचारिता, कर्तव्यपरायणता सामाजिकता तथा उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है।

### 1.1.5.2 शिक्षा, धर्म व नैतिकता में संबंध

शिक्षा, धर्म व नैतिकता का एक-दूसरे से गहरा संबंध है। इनको अलग नहीं किया जा सकता है। इनको एक-दूसरे का पूरक कहा जा सकता है। हरबर्ट का कथन है- "समग्र रूप से नैतिक शिक्षा, शिक्षा से पृथक नहीं है।" जहाँ तक धर्म और नैतिकता की बात है, इन दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर है। इसी बात को हम जी. स्प्रिंग के इन शब्दों से कह सकते हैं- “धर्म के बिना नैतिकता का और नैतिकता के बिना धर्म का अस्तित्व नहीं है।” इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा, धर्म और नैतिकता एक-दूसरे में इस प्रकार गुथे हुए हैं कि उनका संबंध- विच्छेद करना असंभव है। अतःशिक्षा धार्मिक भी होनी चाहिए, नैतिक भी होनी चाहिए जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके और वह एक महान व्यक्ति बन सके।

### 1.1.5.3 शिक्षा का धर्म से विमुखीकरण

रास के अनुसार, ‘‘आज अधिकाधिक विचारशील लोगों का विश्वास यह हो गया है कि यदि हम शिक्षा द्वारा उच्च कोटि की सभ्यता का निर्माण करना, उसको बनाये रखना एवं कुछ समय के बाद होने वाली पशुता के प्रदर्शन से उसकी रक्षा करना चाहते हैं, तो शिक्षा धर्म पर आधारित किया जाना आवश्यक है, जिसका ह्रास होता गया।”

शिक्षा की शुरूआत प्राचीन काल में धर्म के आधार पर हुई। प्राचीन काल में शिक्षा और धर्म का नजदीकी सम्बन्ध था। धर्मगुरू द्वारा शिक्षा की प्राप्ति विद्यार्थियों को होती थी। धार्मिक शिक्षा के कारण समाज में नैतिकता वास करती थी। सामाजिक जीवन पर धर्म का भय रहता था, लेकिन विज्ञान युग की शुरूआत ने धार्मिक कल्पनाओं को झूठा साबित कर दिया। धर्म में लोगों की जो आस्था थी, वह अनास्था में परिवर्तित हो गई। धीरे-धीरे शिक्षा का स्तर बदलता गया। शिक्षा से धर्म व नैतिक मूल्यपरक तत्त्वों का  ह्रास होने लगा। ऐसी शिक्षा केवल जीवन में आर्थिक निर्भरता प्रदान करने तक ही सिमट कर रह गयी।

धीरे-धीरे शिक्षा का व्यवसायीकरण होने लगा। देश में समय-समय पर शिक्षा में सुधार, परिवर्तन एवं विकास करने के लिए अनेकों महापुरूषों ने योगदान दिये, जिनमें कई धर्म गुरू, समाज सुधारक एवं क्रांतिकारी सम्मिलित थे।

### 1.1.6 विभिन्न समाज सुधारकों का अभ्युदय

मध्यकालीन भारत में अनेक बुराइयों ने, कई कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया था, जिसका तत्कालीन समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ रहा था। कई बार भेद-भाव और शोषणकारी कृत्य लंबे समय के लिये सामाजिक बुराई का रूप ले लेता है और किसी भी सभ्य समाज के कि चहरे पर धब्बे के समान हो जाता है।

हर देश के उसके इतिहास में, कई सारे ऐसे चमकदार व्यक्तित्व होते हैं, जो समाज के दबे-कुचले लोगों की प्रगति के लिये जीते और कार्य करते हैं। उनके इन्हीं सार्थक प्रयासों से जातियता, सती प्रथा जैसे उच्च स्तर पर फैली सामाजिक बुराइयों को समाप्त करना मुमकिन हो पाया है।

भारत सौभाग्यशाली देश है कि उसके इतिहास में कई असाधारण इन्सान हुए, जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाज को बेहतर बनाने और दबे-कुचले वर्ग के लोगों को ऊपर उठाने में लगा दिया। जैसे- राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, डॉo भीमराव अम्बेडकर, ज्योतिबा फुले, ऐनी बेसेंट, मदर टेरेसा, विनोबा भावे आदि।

**महात्मा बुद्ध**

महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे, जिनका जन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। उनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ था। सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की अवस्था में अपना गृह-त्याग दिया, जिसे बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है। अनेक वर्षों की तपस्या के बाद उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया, जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया है। इसके बाद इन्होंने कई जगह धर्म का प्रचार प्रसार किया। लोगों को अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक किया।

**महावीर**

जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थकर हुए। महावीर का जन्म 540 ईसा पूर्व कुण्डाग्राम (वैशाली) में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक कुल के सरदार थे औश्र माता त्रिशला लिच्छ्वि राण चेटक की बहन थी। महावीर स्वामी ने भी धर्म का प्रचार-प्रसार कर अपने धर्म को आगे बढ़ाया और बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया।

## कबीरदास

कबीरदास एक युगदृष्टा तथा क्रांतिकारी कवि थे। राजनैतिक वातावरण में सजीत सामाजिक और धर्मिक सिद्धान्तों के प्रवर्तक कबीरदास ने प्राचीन मान्यताओं का खण्डन किया और समाज में परिवर्तन की धारा को प्रवाहित किया था। कबीरदास ने ज्ञान के रथ पर चढ़कर सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक चेतना जागृत करने का प्रयत्न किया। कबीरदास को समाज से घृणा, तिरस्कार, अपमान और अवहेलना ही मिली। कबीरदास एक विद्रोही कवि बन गए। उन्होंने समाज की रूढ़ियों तथा आडम्बरों का विरोध किया।

## राजा राममोहन राय

19 वीं शताब्दी के शुरूआत में, भारतीय समाज कई सारी समस्याओं से घिरा हुआ था; जैसे- सती प्रथा, जाति प्रथा, धार्मिक अंधविश्वास आदि। राजा राममोहन राय पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने ऐसी अमानवीय प्रथाओं को पहचाना और इनके खिलाफ लड़ने का प्रण किया। इन्हें **भारतीय पुनर्जागरण का शिल्पकार** और **आधुतिक भारत का पिता** माना जाता है।

20 अगस्त 1829 ई. को राजा राममोहन राय ने **बह्म समाज** की स्थापना की। इस संगठन का कार्य एक ऐसा आन्दोलन चलाना था, जो एकेश्वरवाद को बढ़ावा दे, समाज को ब्राहमणवादी सोच से बाहर निकाले एवं सती प्रथा, बाल-विवाह आदि जैसी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेके। इस संस्था ने हिन्दू समाज में व्याप्त अन्य बुराइयों जैसे- बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जाति प्रथा आदि का भी कठोर विरोध किया।

## स्वमी विवेकानन्द

स्वमी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरू थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था।

उन्होंने 9 मई सन् 1897 ई. को **रामकृष्ण मिशन** की स्थापना की। इसका मुख्यालय कोलकाता के निकट बेलूर में है। इस मिशन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य 'वेदान्त दर्शन का प्रचार-प्रसार' है। रामकृष्ण मिशन दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्मयोग मानता है, जो कि हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।

रामकृशण मिशन का ध्येय वाक्य है- "आत्मनो मोक्षार्थ जगद् हिताय च" (अपने मोक्ष और संसार के हित के लिए)। रामकृष्ण मिशन को भारत सरकार द्वारा 1996 में डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार से और 1998 में गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

**स्वामी चिन्मयानन्द**

स्वामी चिन्मयानन्द जी का जन्म 8 मई 1916 को दक्षिण भारत के केरल प्रान्त में एक सम्राट परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम बालकृष्ण था। उनका पूरा जीवन लोगों को आन्तरिक जीवन का महत्व समझाने में व्यतीत हुआ। जो भी युवा पूजा व्रत उनके सम्पर्क में आये उन्होंने प्रेम और करुणा से भरकर बस एक ही पाठ पढ़ाया- "अपने अन्दर सच्चिदानन्द को खोजो जो तुम्हारा आत्म स्वरूप ही है।" उन्होंने 42 वर्षों तक अनवरत देश और विदेश सब जगह आध्यात्मिक ज्योत जगाने का अभियान चलाया। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर असंख्य साधकों एवं जिज्ञासुओं का जीवन सुंदर व आनंदमय हुआ और अभी भी हो रहा है। इस युग के महान दृष्टा स्वामी चिन्मयानन्द जी ने आध्यात्मिक पुनर्जागरण का जो अभियान चलाया, वह अद्वितीय है। उन्होंने उपनिषदों का अमूल्य ज्ञान आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इतने सुन्दर ढंग से वार्ता की, जिसने भी पाया वह धन्य हो गया। इसी दौरान स्वामी जी ने चिन्मय मिशन की स्थपना की।

## 1.1.7 विभिन्न धार्मिक संस्थाओं का अभ्युदय

समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु कई धार्मिक संस्थानों का भी अभ्युदय हुआ, जिन्होंने समाज को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया। विभिन्न शिक्षण संस्थान ज्ञान के मन्दिर हैं। मन्दिर इसीलिए कि ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ है ही नहीं।

" न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विधते।"

वेद कहता है कि ज्ञान और बह्म पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी कहते हैं कि ज्ञान पवित्र पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी कहते हैं ब्रह्म ज्ञान मात्र है। ज्ञान का आधार विद्या है। शिक्षित व्यक्ति ही किसी देश की संस्कृति और सभ्यता है। इस देश में ज्ञान का इतना सम्मान है कि वेदव्यास, वाल्मीकि व पाणिनि जैसे मनीषियों को भगवान मान लिया क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है और जीवन व ईश्वर में आस्था पैदा करता है।

हमारे अध्यात्म के चार भाग हैं- आत्मा, मन, बुद्धि और शरीर। शरीर और बुद्धि शिक्षा में तथा आत्मा और मन धर्म के विषय बन गए। शिक्षा धर्मनिरपेक्ष हो गई। तब व्यक्ति स्वधर्म की पहचान कहाँ सीखेगा? शिक्षा के मूल धरातल पर आदिदैविक, आदिभौतिक एवं आध्यात्मिक तो खो ही गए, व्यक्तित्व विकास भी पीछे छूट गया। योग-क्षेम की परिभाषा ही बदल गई। ज्ञान छूट गया तथा विज्ञान रह गया। ब्रह्म छूट गया तथा माया रह गयी। सम छूट गया तथा कृति रह गयी। यानि संस्कृति खंड-खंड हो गयी। वसुधेव-कुटुम्बकम निजी स्वार्थ में बदल गया।

त्रेता और द्वापर में राम और कृष्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए वाल्मिकी एवं संदीपनी के आश्रम में जाते थे। गुरूकुल समाज से मिली दीक्षा पर आधारित थे। गुरूकुल में पात्रता के आधार पर शिक्षा दी जाती थी। समय परिवर्तन के साथ ही द्वापर बीत गया।

भारतीय पारंपरिक संस्कृति विरासम को जाग्रत करने के लिए तथा प्राचीन शिक्षण पद्धति को लागू करने के लिए देश के अन्दर विभिन्न धार्मिक संस्थओं का अभ्युदय हुआ। ये संस्थाएं भारतीय संस्कृति को बनाए रखने के लिए व तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रही हैं। उदाहरणार्थ -विद्याभारती, सरस्वती विद्या मन्दिर, रामकृष्ण मिशन, **चिन्मय मिशन आश्रम** शैक्षिक संस्थान आदि प्रमुख हैं।

### 1.1.8 चिन्मय मिशन आश्रम

8 अगस्त 1953 को स्वामी जी से प्रभावित कुछ भक्तगणों ने अध्ययन और विचार विमर्श हेतु एक फोरम बनाने का निश्चय किया। स्वामी जी उस समय उत्तरकाशी में थे। उन्होनें उत्साह के साथ अपनी योजना व ‘चिन्मय मिशन’ नामक नये संगठन के निर्माण हेतु स्वामी जी को पत्र लिखा। उनका उत्तर आया कि मेरे नाम से किसी संगठन का निर्माण न करें। मैं यहाँ प्राचीन सन्तों का संदेश देने आया हूँ। मैं उनसे लाभान्वित हुआ हूँ। यदि मैनें तुम्हें किसी प्रकार से लाभान्वित किया हो तो तुम भी इसे जारी रखो। भक्तों ने स्वामी जी को फिर लिखा कि ‘चिन्मय’ शब्द परमात्मा का वाचक है, इसलिए हमनें उसी नाम से **चिन्मय मिशन** का प्रारम्भ किया।

## 1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसमें और जिसके द्वारा बालकों के ज्ञान, चरित्र और व्यवहार को एक विशेष ढाँचे में ढाला जाता है। शिक्षा कार्य सम्बन्धी अर्जित आदतों का संगठन है, जो व्यक्ति को उसके सामाजिक और भौतिक पर्यावरण के योग्य बनाती है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति को पर्यावरण में इस सीमा तक व्यस्थापित करना है, जिससे व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए महान सन्तोषजनक लाभ प्राप्त हो सके।

हमारे देश में विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाएँ चल रही हैं, जिनकी शिक्षा व्यवस्था में भिन्नता दिखायी देती है। चिन्मय आश्रम ट्रस्ट में विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही नैतिक मूल्यों, संस्कार, राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षित किया जाता है।

श्री चिन्मय मिशन आश्रम की स्थापना का लक्ष्य भारत की पारम्परिक शिक्षा को बनाये रखने तथा बालक में सांस्कारिक व नैतिक मूल्यों के साथ श्रेष्ठ प्रतिभाओं को आगे बढ़ाना है।

उन सब कारणों को दृष्टिगत रखते हुए इस संस्थान की शिक्षा से सम्बन्धित नियम-कानून, विद्यालय वातावरण, शैक्षिक विचारों, पाठ्यक्रम व भौतिक स्वरूप को जानने के लिए शोधकर्ता ने इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

## 1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य के लिये जिस समस्या का चुनाव किया गया है उसका शीर्षक इस प्रकार है-

**'चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान'**

## 1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

अभिनव भारत, अपने अतीत के बोझ से दबा हुआ है क्योंकि लगभग सभी प्रबुद्ध वर्ग ने आधुनिक समाज के लिए मूल्यपरक शिक्षा का नवीन ढाँचा परम्परागत तथा इतिहास की पृष्ठभूमि पर तैयार किया।

यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक देश ने सुसंस्कृत नागरिकों के निर्माण की महत्ता को समझते हुए विभिन्न आधुनिक विधियों व शैक्षिक तकनीकी को आधार बनाया, जिससे मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रभावित भी हुआ तथा विज्ञान

की सदी में मनुष्य ने आकाश से लेकर पाताल तक के कई रहस्यों को प्रकाशवान किया। परन्तु इस स्थिति तक आने के पश्चात् भी क्या मनुष्य स्वयं को मूल्यहीनता, अस्पृश्यता, रंगभेद, नस्लभेद, धार्मिक उन्माद, मानसिक व शारीरिक विकृतियों, विश्व-बन्धुत्व की दिशा में अवरोध तथा आतंकवाद आदि से मुक्त कर पाया? इससे यह स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं हमारी शिक्षा प्रक्रिया में लचीलापन रह जाता है। आज शिक्षा का स्वरूप कैसा हो? इस सम्बन्ध में चिन्मय स्वामी जी के विचार प्रासंगिक हो सकते हैं।

शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए बहुत से समाज सुधारकों ने इस ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया और विभिन्न प्रकार की संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा को धर्म व नैतिक मूल्य से जोड़ने के लिए प्रयास किये गये। उपरोक्त मानदण्ड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोधकर्ता द्वारा चुनी गई समस्या वर्तमान परिस्थितियों में निश्चित रूप से उचित एवं मौलिक सिद्ध होगी।

## 1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

### 1.5.1 चिन्मय मिशन

चिन्मय मिशन सन् 1953 में स्थापित एक आध्यात्मिक शैक्षिक तथा धार्मिक संस्था है। इसकी स्थापना स्वामी चिन्मयानन्द ने की थी। इसका परिचालन सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट के रूप में स्वामी जी द्वारा किया जा रहा है। विश्व के अन्य भागों में इसके 300 से अधिक केन्द्र चल रहे हैं।

### 1.5.2 शैक्षिक

प्रस्तुत लघुशोध में शैक्षिक से तात्पर्य है-'शिक्षा के क्षेत्र या शिक्षा से जुड़ा क्षेत्र अर्थात् शिक्षा सम्बन्धी क्षेत्र।' शिक्षा एक विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें शैक्षिक का आशय है- शिक्षा प्रणाली का कोई भी कार्य, प्रयोग, सहयोग, क्षेत्र इत्यादि।

शब्दकोष के अनुसार

- शिक्षा देने वाला या जिससे शिक्षा मिले ।
- शिक्षा का एजुकेशनल वह रूप, जो शिक्षा वेदांग का ज्ञाता या पंडित हो।
- शिक्षा का या शिक्षा से सम्बन्धित।

### 1.5.3 योगदान

प्रस्तुत लघुशोध में योगदान से तात्पर्य शैक्षिक क्षेत्र में किये जा रहे विभिन्न प्रयासों से है। किसी परिणाम के लिए किसी व्यक्ति द्वारा किया गया सहयोग 'योगदान' कहलाता है। अंग्रेजी में इसे 'Contribution' कहते हैं। योगदान का अर्थ है- सहयोग करना या हाथ बटाना। अतः योगदान का आशय है- किसी कार्य में, किसी विषय में सहयोग करना या सेवा प्रदान करना।

## 1.6 अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- चिन्मय मिशन के शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।
- चिन्मय मिशन के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- चिन्मय मिशन के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना।
- चिन्मय मिशन के शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।
- चिन्मय मिशन के शैक्षिक क्रियाकलापों का अध्ययन करना।

## 1.7 अध्ययन के परिसीमांकन

प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है। उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते हैं।

प्रस्तुत शोध की निम्न सीमाएं हैं-

- प्रस्तावित शोध उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज स्थित चिन्मय नवीन सेवाश्रम न्यास तक ही सीमित होगा।
- प्रस्तावित शोध में स्वामी चिन्मयानंद जी द्वारा शिक्षा में दिये गये योगदान को सम्मिलित किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध में चिन्मय मिशन आश्रम के क्रियाकलापों, भौतिक सुविधाओं आदि को सम्मिलित किया जाएगा।
- चिन्मय मिशन आश्रम से सम्बन्धित अनुशासन एवं वित्तीय व्यवस्था को सम्मिलित किया जाएगा।

## 1.8 अध्ययन विधि

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जिसके कारण शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षण का महत्व बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार के शोध विधि का प्रयोग किसी सम्बन्ध की खोज करने अथवा शैक्षिक व सामाजिक पहलुओं के अध्ययन हेतु प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तावित शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि इसके अंतर्गत वर्तमान की घटनाओं, तथ्यों तथा सम्बन्धों के अध्ययन को अधिक बल दिया जाता है तथा यह भी ज्ञात किया जाता है कि उसका वर्तमान स्वरूप कैसा है?

### व्यक्तिगत अध्ययन

प्रस्तुत समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन, विश्लेषण तथा सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करने के बाद अनुसन्धानकर्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि इस अध्ययन के लिए व्यक्तिगत अध्ययन विधि उपयुक्त है।

सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान में जो अनुसन्धान किये जाते हैं, उनके लिए मुख्यतः दो प्रकार के उपागमों का उपयोग किया जाता है-

(1) मात्रात्मक उपागम, एवं

(2) गुणात्मक उपागम।

गुणात्मक उपागम के अंतर्गत ही वैयक्तिक अध्ययन विधि आती है।

वैयक्तिक अध्ययन विधि वह विधि है, जिसमें एक सामाजिक इकाई के सम्पूर्ण स्वरूप की खोज, विवेचना सम्बन्धी छोटा, सूक्ष्म और गहन अध्ययन किया जाता है। इसमें सामाजिक इकाई को सम्पूर्ण रूप में देखते हुए पर्याप्त सूचनाओं का व्यवस्थित संकलन करके अतीत और वर्तमान का समन्वय करते हुए गुणात्मक अध्ययन किया जाता है।

## व्यक्तिगत अध्ययन विधि की विशेषताएँ-

व्यक्तिगत अध्ययन विधि की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है-

1. व्यक्तिगत अध्ययन विधि में किसी एक ही इकाई का किसी एक समय में अध्ययन किया जाता है।

2. व्यक्तिगत अध्ययन विधि में अध्ययन सूक्ष्म और गहन होता है। इसलिए इसमें सामाजिक इकाई से सम्बन्धित सभी बातों को बहुत महत्व दिया जाता है।

3. व्यक्तिगत अध्ययन विधि में अध्ययन की इकाई के एक या कुछ पहलुओं का अध्ययन नहीं किया जाता है, बल्कि उसके जीवन और संघटकों से सम्बन्धित सभी पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

4. व्यक्तिगत अध्ययन विधि में अनुसन्धानकर्ता अध्ययन इकाई से सम्बन्धित सभी पक्षों के आंकड़ो और तथ्यों का संकलन बड़े ही व्यवस्थित ढंग से करता है, जिससे कि उस अध्ययन इकाई की खोज और विवेचना सही ढंग से की जा सके।

## व्यक्तिगत अध्ययनों के प्रकार

रौबर्ट बर्न्स ने छः प्रकार के व्यक्तिगत अध्ययन बताये हैं, जो इस प्रकार हैं-

### 1. ऐतिहासिक व्यक्तिगत अध्ययन

यह अध्ययन किसी संगठन/व्यवस्था के दीर्घकालीन विकास का पता लगाता है। बचपन से लेकर जवानी तक एक वयस्क अपराधी का अध्ययन इसका एक उदाहरण है। इस प्रकार का अध्ययन साक्षात्कारों, अभिलेखों तथा दस्तावेजों पर अधिक निर्भर करता है।

### 2. अवलोकन व्यक्तिगत अध्ययन

यह अध्ययन एक शराबी, अध्यापक, छात्र, यूनियन नेता, कोई गतिविधि घटना या लोगों के विशेष समूह के अवलोकन पर केन्द्रित होता है। यद्यपि इस प्रकार के अध्ययन में अनुसंधानकर्ता शायद ही पूर्ण भागीदार या पूर्ण अवलोकनकर्ता होते हैं।

**3. मौखिक इतिहास व्यक्तिगत अध्ययन**

आमतौर पर किसी व्यक्ति द्वारा किये गए कथन होते हैं, जो कि अनुसंधानकर्ता किसी व्यक्ति से गहन साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र करता है। उदाहरणार्थ, एक मादक पदार्थ सेवन करने वाला व्यक्ति या एक शराबी या एक वेश्या या रिटायर्ड व्यक्ति जो अपने बेटे के साथ परिवार में समायोजन करने में असफल रहता है। इस उपागम का प्रयोग उत्तरदाताओं के सहयोग और स्वभाव पर अधिक निर्भर करता है।

**4. स्थितीय व्यक्तिगत अध्ययन**

प्रकार के अध्ययन में विशेष घटनाओं का अध्ययन होता है। घटना से संबधित सभी व्यक्तियों के विचार लिये जाते हैं। उदाहरणार्थ, एक साम्प्रदायिक दंगा- यह दो भिन्न धर्मों के दो व्यक्तियों के बीच संघर्ष से कैसे शुरू हुआ, किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ने उस स्थान पर उपस्थित अपने धर्मके लोगों का समर्थन माँगा। पुलिस को कैसे सूचित किया गया, किस प्रकार पुलिस ने एक विशेष धार्मिक समूहके  लोगों को गिरफतार किया, किस प्रकार अभिजात वर्ग नेदखलन्दा जी की और पुलिस पर दबाव डाला, जनता और मीडिया ने कैसे प्रतिक्रिया की आदि। इन सभी विचारों को एक साथ रखकर घटना का गहनता से अध्ययन किया जाता है जो कि उसे समझने में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

**5. चिकित्सकीय व्यक्तिगत अध्ययन**

इस उपागम का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति को गहराई से समझने के उद्देश्यों से किया जाता है। जैसे कि अस्पताल में एक मरीज, जेल में एक बन्दी की प्रतिक्रिया आदि ।इन सभी विचारों को एक साथ रखकर घटना का गहनता से अध्ययन किया जाता है जो कि उसे समझने में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

**6. बहु-व्यक्तिगत अध्ययन**

यह एक वैयक्तिक अध्ययनों का संग्रह होता है या एक प्रकार की पुनरावृत्ति अर्थात् बहु-प्रयोग। उदाहरणार्थ हम तीन वैयक्तिक अध्ययन लेकर पुनरावृत्ति के तर्क पर उनका विश्लेषण कर सकते हैं। तर्क यह है कि प्रत्येक मामला या तो विरोधी निष्कर्ष देगा या समान निष्कर्ष देगा। नतीजा या तो प्रारम्भिक प्रस्थापना का समर्थन करेगा या फिर अन्य मामलों से पुनः परीक्षण और पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता को दर्शाएगा। बहु-प्रकरण अभिकल्प का लाभ यह है कि साक्ष्य अधिक सशक्त हो जाते हैं। फिर भी इस उपागम में अधिक प्रत्यय और समय की आवश्यकता होती है।

व्यक्ति का एकल अध्ययन एक से अधिक सूचनाओं के आधार पर किया जा सकता है। व्यक्ति के जीवनचक्र की अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं, जिनका विश्लेषण तथा अध्ययन उस व्यक्ति से सम्बन्धित तथ्यों के विस्तार से अवलोकन द्वारा किया जाता है।

**समूह का एकल अध्ययन**

इसमें समस्त समूह को समस्या के संदर्भ में विशेष ध्यान दिया जाता है। समस्याओं के सापेक्ष में समूहों की सम्भावनाओं की निष्पत्ति में ये सावधानियाँ ली जाती हैं। समूह की गति एवं विश्लेषण के लिए अधिकतर सामाजिक मापनी का प्रयोग किया जाता है। मुख्यतःपाँच पदो का प्रयोग एकल अध्ययन के लिए किया जाता है, जो निम्नवत हैं-

(i) स्थिति का स्तर ज्ञात करना

(ii) आंकड़ों का संकलन करना

(iii) कारण प्रभाव तथ्यों का निदान तथा पहचान करना

(iv) अगला समायोजन उपचार तथा सान्तवना देना तथा

(v) समायोजन के कार्यक्रमों का अनुसरण या कार्यक्रम की प्रभावशीलता।

## 1.9 शोध उपकरण

प्रत्येक और सभी प्रकार के अध्ययन के लिए हमें निश्चित प्रकार के शोध उपकरणों की आवश्यकता होती है, जो नये क्षेत्रों के वास्तविक तथ्यों को एकत्र करने में सक्षम होते हैं। इन उपकरणों को उसी प्रकार 'टूल्स' कहा जाता है, जिस प्रकार श्रमिक अपने उपकरणों को 'टूल्स' कहकर पुकारता है। शैक्षिक अध्ययनों में विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न प्रकार के शोध उपकरणों का उपयोग आंकडों को एकत्रकर उन्हें परिभाषित करने के लिए किया जाता है।

प्रत्येक उपकरण आंकड़ों को एकत्र करने के लिए एक निश्चित माध्यम होता है। सफल अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि उपयुक्त शोध उपकरण का चयन किया जाये। विभिन्न उददेश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाएं एकत्र करने के लिए अनेक प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं। एक या अधिक उपकरणों का प्रयोग शोधार्थियों

द्वारा अपने उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने आंकड़ें एकत्र करने के लिए प्रश्नोत्तरी को मुख्य उपकरण के रूप में प्रयोग किया है। चूंकि सामान्यतया प्रश्नोत्तरी शब्द का अभिप्राय 'प्रश्न करना' और उत्तरदाता द्वारा उसका उत्तर देने के रूप में समझा जाता है।

### 1.9.1 प्रेक्षण

शोधों के अन्तर्गत आधार सामग्रियों के संकलन हेतु निरीक्षण की प्रविधि सर्वाधिक आदिम एवं आधुनिक है। अपने विकास क्रम में मनुष्य जब से अपने आसपास की घटनाओं को देख-सुनकर उन्हें समझने का प्रयास करने लगा तभी से निरीक्षण की तकनीकी का विकास हुआ। इसे अवलोकन, प्रेक्षण आदि नामों से भी जाना जाता है।

**पी. बी. यंग** के शब्दों में-

"प्रेक्षण हमारे चक्षुओं के माध्यम से किया गया स्वाभाविक घटनाओं के सम्बन्ध में एक ऐसा क्रमबद्ध एवं विचारपूर्वक अध्ययन है, जो कि उनके घटित होने के समय किया जाता है। प्रेक्षण का उद्देश्य विषम सामाजिक घटनाओं, संस्कृति के प्रतिरूपों अथवा मानव व्यवहार के अन्तर्गत सार्थक अनंत सम्बन्धित तत्वों के स्वरूप तथा विस्तार को ज्ञात करना होता है।"

निरीक्षण की इस परिभाषा का सम्बन्ध यहाँ साधारण तथा प्राकृतिक निरीक्षण से ही है। इस प्रकार के निरीक्षण को ही अनियन्त्रित और कभी-कभी असंरचित निरीक्षण भी कहा जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निरीक्षण की प्रविधि इन्द्रियानुभविक तथ्यों को संकलित करने के प्रति प्रवृत्त होती है। यह विशिष्ट प्रकार की स्थितियों में प्राणियों से सम्बन्धित उन व्यवहारों तथा सन्दर्भों का चयन उत्तेजन, अभिलेखन तथा कूट संकेतन है, जो शोध उद्देश्यों के अनुकूल हो।

प्रेक्षण दो प्रकार का होता है-

1. प्रत्यक्ष निरीक्षण (Direct observation)

2.अप्रत्यक्ष निरीक्षण (Indirect observation)

चूंकि शोध कार्य में प्रत्यक्ष निरीक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अतः प्रत्यक्ष निरीक्षण का अर्थ है- व्यवहार जैसा हो रहा है उसी रूप में अवलोकन करना प्रत्यक्ष निरीक्षण है। विदेशी संस्कृति का अध्ययन, पशुओं का अध्ययन,

बाल विकास का अध्ययन, किसी संस्थान आदि का अध्ययन प्रत्यक्ष विधि से करते हैं। इसमें विषय की क्षमता का प्रभाव नहीं पड़ता तथा उसकी इच्छा-अनिच्छा का भी प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रत्यक्ष निरीक्षण भी दो प्रकार का होता है-

(अ). सहभागिक निरीक्षण।

(ब). असहभागिक निरीक्षण।

यहाँ उल्लेखनीय है कि सहभागिक निरीक्षण का सामाजिक अनुसंधानों में विशेष रूप से प्रयोग हो रहा है, जबकि असहभागिक निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता अध्ययन किये जाने वाले समूह के मध्य केवल उपस्थित रहता है किन्तु समुदाय के क्रियाकलाप में भाग नहीं लेता।

### 1.9.2 साक्षात्कार

शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार प्रश्नावली का दूसरा रूप है। इसको व्यापक ढंग से परिभाषित करते हुए मूरे ने लिखा है - "किसी उद्देश्य से किया जाने वाला वार्तालाप ही साक्षात्कार है।"

**कैन्मेल तथा कोहेन** के अनुसार- "यह दो व्यक्तियों के मध्य किया जाने वाला ऐसा वार्तालाप है, जो साक्षात्कारकर्ता प्रारम्भ करता है और जिसके माध्यम से वह अनुसन्धान सम्बन्धी प्रासंगिक सूचनाओं को संकलित करता है।"

**जान डब्ल्यू. बेस्ट** के शब्दों में- "साक्षात्कार एक प्रकार से मौखिक प्रकार की प्रश्नावली है। इसके अन्तर्गत उत्तर लिखने के स्थान पर आमने-सामने की स्थिति में विषयी मौखिक उत्तर देता है। वास्तव में व्यवहारपरक विज्ञानों में साक्षात्कार से तात्पर्य अनुसन्धान की एक प्रविधि से है। अतीत में साक्षात्कार का प्रयोग निदान, उपचार व चयन आदि के लिए किया जाता रहा है। परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक युग में इसका उपयोग अनुसन्धान की एक वैज्ञानिक प्रविधि के रूप में किया जाने लगा है। वैज्ञानिक स्तर पर इसका उपयोग सम्भवतः प्रथम महायुद्ध में अल्फा बुद्धि परीक्षण में किया गया था। इसका अंग्रेजी रूपान्तर ( Interview) है जो कि दो शब्दों Inter+View से मिलकर बना है। Inter का अर्थ है- आन्तरिक तथा View का अर्थ है- निरीक्षण। इस प्रकार साक्षात्कार का एक सम्मिलित शाब्दिक अर्थ है- आन्तरिक निरीक्षण।

**मैक्कोवी तथा मैक्कोवी** के शब्दों में- "साक्षात्कार से अभिप्राय एक ऐसी स्थिति से है, जिसमें एक व्यक्ति साक्षात्कारकर्ता, आमने-सामने के पारस्परिक मौखिक आदान-प्रदान से दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को सूचना देने अथवा अपने विचार तथा विश्वास व्यक्त करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता है।"

**करलिंगर** के अनुसार- "साक्षात्कार अन्तर व्यक्तिगत भूमि की ऐसी स्थिति है, जिसमें एक व्यक्ति या साक्षात्कारकर्ता, एक-दूसरे व्यक्ति जिसका साक्षात्कार किया जा रहा है, अथवा उत्तरदाता से उन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना चाहता है, जिसकी रचना सम्बन्धित अनुसन्धान समस्या के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए की गयी है।"

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि साक्षात्कार आधुनिक वैज्ञानिक युग में एक साधारण प्रक्रिया नहीं है, बल्कि अब इसने एक अविकसित कला तथा अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति का रूप धारण कर लिया है। अब साक्षात्कारकर्ता एक सामाजिक स्थिति में केवल पारस्परिक वार्तालाप से ही सम्बन्धित नहीं रह गया है, बल्कि साक्षात्कार में अब उनकी भूमिका अति सक्रिय तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है।

आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने सर्वप्रथम साक्षात्कार अनुसूची के निर्माण हेतु 20 कथनों का चयन किया था। शोध निर्देशक के परामर्श के उपरान्त 8 कथनों को ही साक्षात्कार अनुसूची के लिए उपयुक्त पाया गया।

## 1.10 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

वैदिक काल से ही शिक्षा नैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर दी जाती थी। धीर-धीरे शिक्षा में नैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होने लगा, जिससे बालकों में सामाजिकता एवं मानवीयता का अभाव पाया जाने लगा। यदि हम सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते हैं, तों शिक्षा को नवीन प्रयोगों के साथ-साथ पारम्परिक शिक्षा के साथ जोड़ना अति आवश्यक है। जब तक बालक के अन्दर मानवीय व नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा, वह समाज व राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता।

आज आधुनिक युग में इन मूल्यों की आवश्यकता को देखते हुए अनेक समाज सुधारकों व आयोगों ने मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। अनेक समाज सुधारक देश के अन्दर विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से जीवन मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य व नैतिक गुणों के साथ-साथ नवीन तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

**राधाकृष्णन आयोग** (1948-49) ने सांस्कृतिक व मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया है। इस आयोग ने निम्न सुझाव दिए हैं-

- कुछ मूल मूल्यों को विकसित करना जैसे- मन की निडरता, विवेकशक्ति आदि।
- ज्ञान के विकास के द्वारा जीवन जीने की सहज क्षमता को जगाना।
- अपनी सांसकृतिक विरासत के उत्थान के लिए विद्यार्थियों को इससे परिचित कराना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, आजादी के बाद के इतिहास में एक अहम कदम था। इस नीति का उद्देश्य राष्ट्र के प्रगति को बढ़ाना, सामान्य नागरिकता, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करना था। उसने शिक्षा प्रणाली के सर्वांगीण पुनर्निमाण तथा हर स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता को ऊंचा उठाने पर जोर दिया गया था। साथ ही इस शिक्षा नीति में विज्ञान एवं तकनीकी पर नैतिक मूल्यों को विकसित करने तथा शिक्षा एवं जीवन में गहरा रिश्ता कायम रखने पर भी ध्यान दिया गया था।

पाश्चातय विचारकों में **प्लेटो** नैतिकता के विकास के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार नैतिकता समस्त शिक्षा योजना का मेरूदण्ड है। नैतिकता से मनुष्य में सौन्दर्य, न्याय तथा प्रेम का समावेश होता है। प्लेटों ने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया था।

(क) शारीरिक उन्नयन

(ख) विद्या संस्कार

(ग) संगीत की शिक्षा

गांधी जी भी नैतिक सांस्कृतिक व चारित्रिक विकास के प्रबल समर्थक थे। उन्होनें अपनी आत्मकथा में लिखा है- “मैंने सदैव हृदय की संस्कृत अथवा चारित्रिक निर्माण को प्रथम स्थान दिया है तथा चरित्र निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है।”

अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से संस्था द्वारा संचालित शैक्षिक क्रियाविधि, उनके विचार, उनके भौतिक स्वरूप, सांस्कृतिक क्रियाकलापों व दैनिक दिनचर्या के बारे में गहन अध्ययन कर बालकों को सांस्कृतिक, सामाजिक

मूल्यों के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा प्रदान की जा सकती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

# द्वितीय अध्याय

## सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन

### 2.1 प्रस्तावना

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य, अनुसन्धान से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित व अप्रकाशित अनुसन्धान प्रबन्धो, पत्रकों, विचार-विमर्श, शब्दकोषों, अभिलेखों तथा अन्य सूचना स्रोतों में उपलब्ध विविध प्रकार की सामग्री से होता है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी अनुसन्धान समस्या के चयन, अनुसन्धान परिकल्पना के निरूपण, अनुसन्धान प्रारूप के विकास कार्यों के क्रियान्वयन एवं प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। अतीत वर्तमान तथा भविष्य की दिशा निर्धारण का माध्यम है। सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का अर्थ है- अनुसन्धान की रिपोर्टस का पठन व्यापम और मूल्यांकन, साहित्यिक पुनर्निरीक्षण, नैतिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानव विज्ञान की बहुत-सी अनुसन्धान योजनाओं का आधार है। सम्बन्धित साहित्य का पुनर्निरीक्षण अनुसन्धानकर्ता को उस पिछले कार्य की जानकारी प्रदान कराता है, जो हो चुका है। यह उन साधनों को अवगत कराता है, जिनसे समस्या के समाधान की दिशा में बहुत समीप पहुंच जाते हैं।

**गुड,बार तथा स्केट्स** के अनुसार-

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे। इसी प्रकार शिक्षा की जिज्ञासु छात्र के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।" *

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के लक्ष्यों का विश्लेषण निम्नानुसार करते हैं-

यह प्रदर्शित करने के लिए कि बिना आगामी अन्वेषण किए ही क्या उपलब्ध साक्ष्य समस्या का समाधान उपयुक्त ढंग से कर सकता है? समस्या मुझे व्यवस्थापन की दृष्टि से उपयोगी विचार सिद्धान्त, व्याख्याता, उप कल्पना उपलब्ध कराना समस्या के अनुकूल शोध प्रणाली प्रस्तावित कराना परिणामों की व्याख्या करने की दृष्टि से उपयोगी रचनात्मक बातों की खोज करना शोधकर्ता की सामान्य विदिशा में योग प्रदान करना।



* एस0 पी0 गुप्ता, पृष्ठ-56

## सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का औचित्य

केवल सन्दर्भ ग्रन्थों की जानकारी प्राप्त कर लेना ही आवश्यक नहीं होता है, सामग्री एवं सूचना के स्रोतों का ज्ञान प्राप्त करना ही अनुसन्धानकार्य श्रंखला की एक कड़ी है जिसका मुख्य कार्य को अपने अनुसन्धान से सम्बन्धित सूचना एवं सन्दर्भों को एकत्रित करना होता है। इन स्रोतों, ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की कहां कितनी सूचनाएं अपने अनुसंधान में उपयोगी हैं, उन्हें निकालकर एकत्र करना तथा अनुसन्धान प्रतिवेदन में यथा स्थान उनका प्रयोग करना संबंधि साहित्य के सर्वेक्षण का वास्तविक औचित्य होता है, जो निम्न बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

- चयनितपत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य सम्बन्धित ग्रंथों का अध्ययन।
- महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंशु विचार बिंदु एवं अनुपयोगी सामग्री का संक्षेप में अभिलेखन।
- अन्तिम में समस्त अभिलिखित सामग्री का शोध प्रबन्ध अथवा प्रतिवेदन में प्रयोग।

## सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का कार्य

शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धांतों, धारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करना है, जो निम्न बिंदुओं में स्पष्ट है-

- ❖ सम्बन्धित क्षेत्र में जो व्यक्ति कार्यरत है, उसकी समझ में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पता लगाना।
- ❖ यह अनुसन्धान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार करता है तथा प्रत्येक धारणा को स्पष्ट करता है।
- ❖ वर्तमान में तथा पिछले वर्षों में किन समस्यायों पर अनुसन्धान किया गया है, ज्ञात करना।
- ❖ अनुसन्धान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रस्तुत उपकरण, आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- ❖ अनुसन्धान कार्य के सीमा तक सरल व उपयोगी बनाया जा सकता है।
- ❖ इसका मुख्य कार्य समस्या के सीमांकन और परिकल्पना निर्माण में सहायता करना है।

### साहित्य का सर्वेक्षण का महत्व

अनुसन्धान कार्यों में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्त्व स्वयं सिद्ध है। अनुसन्धान क्षेत्र से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसन्धानकर्ता का कार्य अन्धेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है। साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसन्धानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है?, किस क्षेत्र में क्या करना शेष है? एवं अनुसन्धान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है। अनुसन्धान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार व्यक्त किये हैं।

सम्बन्धित साहित्य को निम्नलिखित रूप से सूचीबद्ध किया जा सकता है-

- यह सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र में किये जा चुके कार्य की जानकारी प्रदान करके अपेक्षित अनुसन्धान कार्य को रेखांकित करता है।
- यह चयनित समस्या की सार्थकता और सत्ता के महत्व को स्पष्ट करता है एवं आपेक्षित परिणामों के निहितार्थों को इंगित करता है।
- यह समस्या के सीमांकन करने, परिभाषिककरण करने, परिकल्पना के निरूपण तथा अनुसन्धान अभिकल्प के निर्माण में सहायक होता है।
- यह अनुसन्धान कार्य को समय, श्रम व व्यय की दृष्टि से मितव्ययी बनाकर उसे अनुसन्धानकर्ता के लिए व्यावहारिक तथा सम्भव बनाता है।
- यह अनुसन्धान कार्य से प्राप्त परिणामों की व्याख्या करने एवं तदनुसार निष्कर्ष निकालकर नवीन ज्ञान के के में सहायक होता है।

## 2.2 शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

- **गुप्ता,अर्चना कुमारी (1999)** ने महात्मा गांधी एवं विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का नवीन शिक्षा नीति के परिपेक्ष में आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-

  आचार्य विनोबा भावे ने शिक्षा के सभी क्षेत्रों को अपने ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया है। यह क्षेत्र भले ही शिक्षा के उद्देश्य फिर छात्र अनुशासन रहे हो किंचित भी उनके चिन्तन से अछूता नहीं रहा है।

- नवीन शिक्षा नीति में शिक्षा के कई क्षेत्रों में परिवर्तन करने का प्रयास किया गया है।

- उनका विचार यह था कि शिक्षा के द्वारा मनुष्य के शरीर, मन, हृदय और आत्मा का विकास करना चाहिए। अतः गांधी जी किताबी शिक्षा को शिक्षा ना मानकर व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर अधिक महत्व देते थे। वह बालक को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर देते थे।
- गांधी जी ने बेसिक शिक्षा को व्यावहारिक रूप प्रदान किया है क्योंकि गांधी जी की अभिलाषा थी कि शिक्षा ऐसी हो जिसे गरीब, अमीर, छोटा- बड़ा सभी वर्ग जाति के व्यक्ति प्राप्त कर सकें। अतः गांधी जी ने अपनी शिक्षा में आत्मनिर्भरता पर अधिक महत्त्व दिया है।
- विनोबा जी भी व्यक्ति को कर्मशील तथा समाज उन्नत बनाने में विश्वास करते थे।
- गांधी जी का कार्य भारत की स्वतंत्रता का था तथा विनोबा जी का कार्य सामाजिक पुनरुत्थान का था।

❖ **सिंह,रेनू (2008) ने** भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक विशेष रूप से दलितों के उत्थान में अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-

- वास्तविक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है।
- शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकतावाद एवं अध्यात्मवाद से सम्बन्धित बताया है।
- हरिजन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, जन साधारण की शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया है।
- शाहू जी के अनुसार शिक्षा में एक ऐसी परीक्षा पद्धति को लाना चाहिए जो मात्र बौद्धिक विकास का हीरा पन्ना ना हो, बल्कि ज्ञानार्जन का मापदंड हो एवं सर्वांगीण विकास का साधन हो।
- व्यवसाय शिक्षा पर जोर देकर कहा है कि व्यक्ति को उसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो उसे बेरोजगारी से मुक्ति दिलाकर उसका जीविकोपार्जन कर सके। ऐसी स्थिति में शाहू जी द्वारा समर्थित हस्तशिल्प जो आज व्यावसायिक शिक्षा एवं व्यावसायिक विज्ञान की शिक्षा का रूप ले चुकी है, व्यक्ति को बेरोजगारी रूपी भयावह स्थिति से त्राण दिला सकती है अर्थात इन की शिक्षा का उद्देश्य बेरोजगारी से मुक्त दिलाना है।
- वह शाश्वत मूल्य, जिसकी आज आधुनिक शिक्षा में आवश्यकता है, जिसके अभाव में शिक्षा निर्देश एवं दिशाविहीन हो गयी है तथा युवा वर्ग दिग्भ्रमित हो रहा है। ऐसी स्थिति में इनके शैक्षिक विचारों को शिक्षा में अपनाकर शिक्षा को सार्थक बनाना है।
- अध्यापक की गरिमा को स्वीकार कर उसे उचित एवं सम्मानजनक स्थान प्रदान करना।

❖ **सिंह,नीलम (1999)** ने भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा योगदान तथा वर्तमान समय में उपायदेता का अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-

➢ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इन मिशनरी विद्यालयों के स्तर में भी सुधार हुआ है, कुछ विद्यालय हाईस्कूल तथा कुछ इंटरमीडिएट स्तर के हो गये हैं।

➢ इन अधिकांश विद्यालयों में शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी है एवं अधिकांश मिशनरी विद्यालय में लिखित प्रवेश परीक्षा द्वारा प्रवेश होने के कारण अच्छे मानसिक स्तर के छात्रों के पहुंचने से अच्छे परीक्षा परिणाम दृष्टिगत होते हैं।

➢ यह मिशनरी विद्यालय छात्रों को आधुनिकता अथवा भौतिकवाद की दौड़ में आगे ले जाने के लिए प्रयासरत है।

➢ मिशनरीयों ने यह कार्य उस समय किया जब प्राचीन भारती शिक्षा यावनों द्वारा पदाक्रांत की जा चुकी थी और मुस्लिम शिक्षा अपने शिक्षकों के अभाव में डगमगा रही थी। ऐसे समय में मिशनरीयों ने एक नवीन प्रणाली का सूत्रपात करके इस देश की जनता का अकथनीय हित किया।

➢ अंग्रेजी शिक्षा भारत के सामाजिक कुरीतियों और रूढ़िवादिता को दूर करने में असफल रही, जो शिक्षा व्यवस्था विकसित हुई उससे राष्ट्रीय एकता समाप्त हो गयी और देशी परावलंबी हो गयी।

➢ अंग्रेजी शिक्षा को अधिकारियों ने शिक्षा की अनेक गलत नीतियों का अनुसरण, भारतीय भाषाओं की उपेक्षा आदि ऐसी नीतियां थी, जो राष्ट्रीय शिक्षा के विकास में बाधक रही।

❖ **तिवारी,सुधा(2004)** ने लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गांधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष प्राप्त किये-

➢ पंडित दीनदयाल जी शिक्षा के द्वारा परिश्रम, त्याग एवं बलिदान का पाठ पढ़ाना चाहते थे।

➢ उपाध्याय जी ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण के साथ-साथ राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का पुनीत कार्य किया।

➢ राष्ट्र की पुनर्रचना के लिए बालक और बालिकाओं में भेद को दूर करते हुए समान रूप से शिक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

➢ इन्होंने हिंदू राष्ट्र का आह्वान करते हुए कहा कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि विचारों पर अधारित पुरुषार्थ एवं आदर्श जीवन हमें किसी भी संकट से उबार सकते हैं।

- महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का स्तर बालक के शरीर, मन एवं आत्मा में नई समझ क्षमताओं का सर्वोन्मुखी विकास करना है। साक्षरता ना तो शिक्षा का प्रारम्भ है ना ही अंत है।
- महात्मा गांधी के मौलिक विचार एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार साम्य रखते हैं।
- दोनों सामाजिक समस्याओं के समाधान में ही शिक्षा के महत्व प्रेरित करते हैं।
- सत्य के प्रति दोनों के विचार एक तरह से समान है। महात्मा गांधी जी का सत्य है। इनका सापेक्षिक सत्य शब्द प्रायोगिक है, परीक्षणीय है।
- गुप्ता,सत्येंद्र (2005) ने बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-
- इन संस्थाओं में छात्रों के शरीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों एवं उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य है।
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में छात्रों के लिए कंप्यूटर शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है।
- छात्रों के मानसिक बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु समुचित मात्रा में संसाधन उपलब्ध है।
- संस्थान में छात्रों के मानसिक बौद्धिक एवं भाग में विकास हेतु संतोषजनक रूप में क्रियाकलापों का आयोजन कर रहे हैं।
- इस संस्थान में आचार्यों का वेतन ना तो सरकारी वेतन के रूप में है और ना ही इन्हें त्रिलाभ प्राप्त हो रहे हैं।
- इस संस्थान में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास हेतु सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं।
- डॉ०शर्मा,शशिकांत ( 2007) ने गिजूभाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा पर देश में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-
- गिजूभाई छोटी कक्षा के अध्यापक की भूमिका और दायित्व महत्वपूर्ण मानते हैं।
- ग्रामीण शिक्षक पर अज्ञानता कुरीतियों व अंधविश्वासों को दूर करने का महत्वपूर्ण दायित्व है।
- गिजूभाई शिक्षक संघ की भूमिका इंगित करते हुए कहते हैं उस साकार शिक्षण अधिगम पैसों में सुधार के लिए संघर्ष करना है।
- शिक्षा को अंतर्मुखी होना चाहिए अन्यथा बहिर्मुखी होकर वहगैर शैक्षणिक कार्यों में लिप्त रहेगा।

- मांटेसरी पद्धति को अपनाने व फैलाने के लिए दृढ़संकल्प थे। उनका कहना था कि भारतीय मांटेसरी पद्धति को भारत में अपनाते वक्त हम इसे भारतीय प्राण से अलंकृत करेंगे।
- देश के शास्त्री दृश्य अवलोकन करके उसके आंकड़ों पर बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए। गिजूभाई राष्ट्र विकास का मूल ग्रामोदय में ही देखते थे। ग्राम्यशिक्षा का हल करके ही राष्ट्रीय प्रगति का लक्ष्य हासिल करना सम्भव है।

सिंह,राजेश (2008) ने बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-

- बौद्ध शिक्षा में आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लाभ के विषय में कभी पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।
- वैदिक शिक्षा की भांति बौद्ध शिक्षा में भी शस्त्रार्थ तथा अनुसन्धान को महत्व दिया जाता था। कतिपय छात्र ज्ञान प्राप्त हेतु अपना पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर देते थे।
- शिक्षा प्रदान करने में वर्ण व्यवस्था का कोई महत्व नहीं था। योग्य छात्र किसी भी वर्ग से सम्बन्धित थे, उन्हें निष्पक्षता से शिक्षा प्रदान की जाती थी।
- बौद्ध धर्म ने ब्राह्मण शिक्षा के समान्तर बिहारों तथा मठों में शिक्षा का कार्य करना प्रारंभ कर दिया। कालान्तर में इन बिहारों ने विश्वविद्यालय का रूप ले लिया, जिसके परिणाम स्वरूप तक्षशिला, नालन्दा, बल्लभी, विक्रमशिला तथा अनेक शिक्षा केंद्रों एवं विश्वविद्यालय का उदय हुआ।
- इन शिक्षा केंद्रों तथा विश्वविद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में मानदंड स्थापित किये, जिनका महत्व सम्पूर्ण विश्व में आज भी दिखायी देता है।

त्रिपाठी, आशुतोष (2014) ने पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण से शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान का अध्ययन करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये-

- आचार्य श्री ने जहां एक ओर प्रचलित आडम्बरों से अध्यात्म को मुक्त कराया वहीं दूसरी ओर वह ऐसे अध्यात्म को आत्मसात करने की बात कहते हैं, जो कोरे कर्म कारणों से दूर विशुद्ध वैज्ञानिकता पर आधारित है।
- शिक्षा समाज निर्माण का साधन बनती है। स्वस्थ शैक्षिक समाज के निर्माण हेतु हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में उन गतिविधियों और शैक्षिक क्रियाकलापों को समाहित करना होगा, जो आध्यात्मिक आधारभूत मूल्यों पर आधारित हैं।

- एन.सी.एफ.-2005 में शांति शिक्षा को विशेष रुप से सन्दर्भित किया गया। आचार्य श्री का अध्यात्म और एन.सी.एफ. की इस अवधारणा को आधार भूमि प्रदान करता है, जो इस बात का उल्लेख करता है कि हम छात्रों में कुछ ऐसी गतिविधियां कराएं, जो उनमें विश्व शांति की स्थापना के मूल और आचरण विकसित कर सकें।
- 21वीं सदी को 'नारी सदी' के रूप में उद्घाटित करते हैं। सुशिक्षित नारियां राष्ट्र के विकास की धुरी होती हैं। आने वाले समय में शासन व्यवस्था की जिम्मेदारी नारी के हाथों में होगी पुरुष उसका सहायक मात्र होगा।
- आचार्यश्री ने अपने अध्यात्म में नारी को पुरुषों के साथ बराबर का दर्जा दिया है। एक शिक्षित मां पूरे परिवारको शिक्षित करती है और इस प्रकार समाज शिक्षित और सुसंस्कारित होता है।
- इनका अध्यात्मवाद छात्रों को आदर्श नागरिक के रूप में विनिर्मित कर उन्हें शांति का संवाहक और विश्वबंधुत्व का सर्जक बनाने में पूर्णता: समर्थ है।

## 2.3 अध्ययन सम्बंधित पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें तथा ऑनलाइन सुविधाएँ आदि

**पत्रिकाएँ**




**चित्र सं0 -2.3.1**

- ❖ चिन्मय चन्द्रिका (हिंदी, मासिक)
- ❖ चिन्मय प्रदीपिका (अंग्रेजी, मासिक)
- ❖ वानप्रस्थ (अंग्रेजी, मासिक)
- ❖ चिन्मय वानप्रस्थ (अंग्रेजी, मासिक)
- ❖ चिन्मय (अंग्रेजी, मासिक)
- ❖ तपोवन प्रसाद (अंग्रेजी, मासिक)
- ❖ चिन्मय उद्घोष (अंग्रेजी, मासिक)

**किताबें**

- ❖ स्वामी चिन्मयानन्द सार
- ❖ चिन्मय मिशन सार
- ❖ चिन्मय विद्यालय सार (अंग्रेजी)

**चिन्मय मिशनऑनलाइन (ज्ञान की व्यापकता)**

**चिन्मय मिशन आनलाइन : (ज्ञान की व्यापकता)**

चिन्मय मिशन ने वैश्विक स्तर पर वेदान्त ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आधुनिकतम तकनीक को भी अपनाया है। सभी साधकों से सतत और सक्रिय सम्पर्क बनाये रखने में इन्टरनेट वेबसाइट, फेसबुक, व्हाट्स अप आदि ने आश्चर्यजनक सुविधा प्रदान की है।

www.chinmayamission.com चिन्मय मिशन की अधिकृत वेबसाइट है। इससे आध्यात्मिक साधकों को विभिन्न जानकारी लेने और विश्वव्यापी चिन्मय परिवार से सतत जुड़े रहने का सुनहरा अवसर मिलता है। चिन्मय मिशन की अन्य वेबसाइटस् इस प्रकार हैं -

www.chinmayamission.org - चिन्मय मिशन वेस्ट
www.chinmayakids.org - बाल विहार
www.chinmayayuvakendra.org - चिन्मय युवा केन्द्र
www.chykwest.com - चिन्मय युवा केन्द्र वेस्ट
www.chinfo.org - चिन्मय इन्टरनेशनल फाउन्डेशन
www.cord.org.in - चिन्मय आर्गेनाइजेशन फार रूरल डेवेलपमेंट
www.cordusa.org - चिन्मय आर्गेनाइजेशन फार रूरल डेवेलपमेंट वेस्ट
www.cordsrilanka.org - चिन्मय आर्गेनाइजेशान फार रूरल डेवेलपमेंट श्रीलंका
www.cirschool.org - चिन्मय इन्टरनेशनल रेसीडेन्शियल स्कूल
www.chinmayanaadabindu.org - चिन्मय नाद बिन्दु
www.upnishadganga.com - उपनिषद् गंगा धारावाहिक
eshop.chinmayamission.com - चिन्मय प्रकाशन स्टोर्स

**सोशल मीडिया :**

चिन्मय मिशन सोशल मीडिया में भी बहुत सक्रिय है। यह फेस बुक, ट्विटर, पिन्टरेस्ट आदि के माध्यम से निरन्तर सम्पर्क में रहता है। यू-ट्यूब पर चिन्मय चैनल भी है जिससे चिन्मय मिशन आचार्यों के प्रवचन व भजन सतत उपलब्ध होते हैं।



**चित्र सं0 -2.3.2**

**समाचार पत्र**



जइइ मस म चिन्मय क बच्चा का उम्मदा प्रदर्शन, 215 हुए सफल

शिक्षकों के मार्गदर्शन व बच्चों की मेहनत का फल

प्रतियोगिता, विजेताओं को बांटे पुरस्कार

जयपुर | चिन्मय मिशन की ओर से गीता जयंती के अवसर पर आयोजित गीता श्लोक पाठ प्रतियोगिता के नगर स्तरीय अंतिम चरण की प्रतियोगिता व पारितोषिक वितरण समारोह सोमवार को अजमेर रोड स्थित रोटरी भवन में हुआ। भगवत गीता के प्रथम अध्याय पर आयोजित इस प्रतियोगिता में जयपुर के नीरजा मोदी स्कूल, रुक्मणि बिरला स्कूल, टैगोर पब्लिक स्कूल, माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल सहित तेरह विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता के आयु के हिसाब से चार वर्गों में बांटा जाता है, प्रत्येक वर्ग के प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमश 3000, 2000 व 1000 रुपए का पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष 4 से 6 वर्ष की आयु के अ ग्रुप में रुक्मणि बिरला स्कूल की चारुवी शर्मा, टैगोर विद्या भवन मानसरोवर के नक्श सोनी तथा टैगोर पब्लिक स्कूल की फिजा अनवर

प्रतियोगिता सम्पन्न

चिन्मय मिशन की प्रतियोगिता, विजेता

श्लोक पाठ प्रतियोगिता के विजेता पु

**चित्र सं0 -2.3.3**

## 2.4 निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध ग्रंथों के अध्ययन से स्पष्ट है कि स्वामी चिन्मयानंद द्वारा स्थापित चिन्मय मिशन का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में चिन्मय मिशन के द्वारा शिक्षा के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण कार्य भी परिचालित किये जा रहे हैं, साथ ही मिशन के द्वारा व्यक्तियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। चिन्मय मिशन नैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने पर भी बल देता है। शोधकर्ता द्वारा पाया गया कि अभी तक चिन्मय मिशन के शैक्षिक योगदान पर कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। अत: चिन्मय मिशन के अद्यतन को समाहित करते हुए शोधकार्य किया जा रहा है और इस क्षेत्र में शोध करने की महती आवश्यकता है। शोधार्थी द्वारा इस क्षेत्र में कार्य करने का उद्देश्य यह जानना है कि अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एवं शिक्षा के क्षेत्र में चिन्मय मिशन का क्या योगदान है? इस विषय पर कार्य करने से चिन्मय मिशन की संपूर्ण गतिविधियों की जानकारी मिल सकेगी।

# तृतीय अध्याय

## स्वामी चिन्मयानन्द जी का जीवन परिचय

- स्वामी चिन्मयानन्द (8 मई 1916 – 3 अगस्त 1993) हिन्दू धर्म और संस्कृति के मूलभूत सिद्धान्त वेदान्त दर्शन के एक महान प्रवक्ता थे। उन्होंने सारे भारत में भ्रमण करते हुए देखा कि देश में धर्म सम्बन्धी अनेक भ्रांतियां फैली हैं। उनका निवारण कर शुद्ध धर्म की स्थापना करने के लिए उन्होंने गीता ज्ञान-यज्ञ प्रारम्भ किया और 1953 ई. में चिन्मय मिशन की स्थापना की। उन्होंने सैकड़ों संन्यासी और ब्रह्मचारी प्रशिक्षित किये। हजारों स्वाध्याय मण्डल स्थापित किये। बहुत से सामाजिक सेवा के कार्य प्रारम्भ किये, जैसे- विद्यालय, अस्पताल आदि। स्वामी जी ने उपनिषद्, गीता और आदि शंकराचार्य के 35 से अधिक ग्रन्थों पर व्याख्याएं लिखी। गीता पर लिखा उनका भाष्य सर्वोत्तम माना जाता है

### 3.1 आरम्भिक जीवन



**चित्र 3.1.1. स्वामी चिन्मयानन्द**

स्वामी चिन्मयानन्द जी का जन्म 8 मई 1916 को दक्षिण भारत के केरल प्रान्त में एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम **बालकृष्ण** था। उनके पिता न्याय विभाग में एक न्यायाधीश थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पाँच वर्ष की आयु में स्थानीय विद्यालय श्री राम वर्मा ब्याज स्कूल में हुई। उनकी मुख्य भाषा अंग्रेजी थी। उनकी बुद्धि तीव्र थी और पढ़ने मे होशियार थे। उनकी गिनती आदर्श छात्रों मे थी।

स्कूल की पढ़ाई के बाद बालकृष्ण ने महाराजा कालेज में प्रवेश लिया। वहाँ भी उनकी पढ़ाई सफलतापूर्वक चली। उस समय एक गरीब बालक शंकर नारायण उनका मित्र बना। वे कालेज में विज्ञान के छात्र थे। जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और रसायन शास्त्र उनके विषय थे। यहाँ इण्टरमीडिएट पास कर लेने पर उनके पिता का स्थानान्तरण त्रिचूर के लिए हो गया। यहाँ उन्होंने विज्ञान के विषय छोड़ कर कला के विषय ले लिये। इस पढ़ाई में भी उनका अधिक मन नहीं लग रहा था। पिता ने उनके लिए घर पर अलग से शिक्षक भी लगाया, किन्तु वह भी कारगर नहीं हुआ। यद्यपि वहाँ से उन्होंने बी.ए. पास कर लिया। किन्तु मद्रास विश्व विद्यालय ने उन्हें एम.ए. में प्रवेश नहीं दिया, इसलिए उन्हें लखनऊ विश्व विद्यालय जाना पड़ा।

### 3.2 स्नातकोत्तर

लखनऊ विश्वविद्यालय में बालकृष्ण को एम.ए. करने की तथा साथ ही एल.एल.बी. की परीक्षा पास करने की स्वीकृति मिल गयी। वहाँ उन्होंने सन् 1940 में प्रवेश लिया। अंग्रेजी साहित्य पढ़ने में उन्होंने अपनी रुचि पायी। उसी को पढ़ने में उनका अधिक समय जाता था।

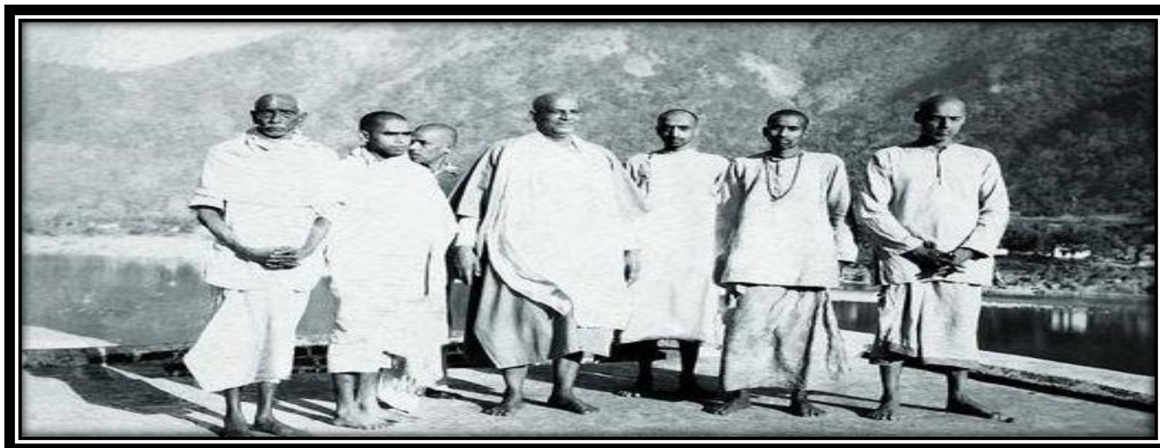
लखनऊ विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त करने के बाद बालकृष्ण ने पत्रकारिता का कार्य प्रारम्भ किया। उनके लेख **मि. ट्रैम्प** के छद्म नाम से प्रकाशित हुए। इन लेखों मे समाज के गरीब और उपेक्षित व्यक्तियों का चित्रण था। एक तरह से ये उस समय के सरकार और धनी पुरुषों का उपहास था।

### 3.3 रुझान

सन् 1948 में बालकृष्ण ऋषिकेश पहुँचे। वे देखना चाहते थे कि भारत के सन्त महात्मा कितने उपयोगी अनुपयोगी है। वहाँ पहुंचने पर उन्हें स्वामी शिवानन्द की जानकारी हुई। वे दक्षिण के रहने वाले थे और उनकी भाषा

अंग्रेजी थी। इस कारण बालकृष्ण उनके ही आश्रम में जा पहुँचे। वहाँ वे स्वामी जी की स्वीकृति से अन्य आश्रमवासियों के साथ रहने लगे। यद्यपि वे उस समय किसी धार्मिक कृत्य में विश्वास नही रखते थे, किन्तु श्रद्धालु पुरुष की भांति आश्रमवासियों का अनुकरण करते हुए रहने लगे। वे प्रात:काल गंगा जी में स्नान करते, सायंकाल प्रार्थना में सम्मिलित होते और आश्रम के काम भी करते।

## 3.3 दीक्षा



चित्र सं0 3.3.1 सन्यास के दिन गुरु शिवानन्द सरस्वती के साथ चिन्मयानन्द तथा उनके अन्य गुरुभाई

इसी समय वे स्वामी शिवानन्द जी से प्रभावित हुए और उनसे संन्यास की दीक्षा ले ली। **अब उनका नाम स्वामी चिन्मयानन्द हो गया।** वे अपने गुरु से मार्गदर्शन पुस्तकालय की एक - एक पुस्तक लेकर अध्ययन करने लगे। दिन भर पढ़ने के लिए पर्याप्त समय रहता। उन दिनों आश्रम में बिजली नहीं थी। इसलिए रात के समय पढ़ने की सुविधा नही थी। स्वामी जी उस समय दिन भर पढ़े हुए विषयों का चिन्तन करते थे। कुछ दिनों बाद उनका अध्ययन गहन हो गया और वे बड़े गम्भीर चिन्तन में व्यस्त रहने लगे। उनकी यह स्थिति देखकर स्वामी शिवानन्द जी ने उन्हें स्वामी तपोवन जी के पास उपनिषदों का अध्ययन करने के लिए भेज दिया। उन दिनों स्वामी तपोवन महाराज उत्तरकाशी में वाश करते थे। उनके पास रहकर लगभग 8 वर्ष उन्होंने वेदान्त अध्ययन किया। तपोवन जी को कोई जल्दी नहीं थी। वे एक घण्टे नित्य पढ़ाते थे। शेष समय शिष्य मनन-चिन्तन में व्यतीत करता था। यह अध्ययन बौद्धिक तो था ही, किन्तु व्यावहारिक भी था। स्वामी जी को अपनी गुरु के शिक्षानुसार संयमी, विरक्त और शान्त रहने का अभ्यास करना होता था। इसके परिणामस्वरूप स्वामी जी का स्वभाव बिल्कुल बदल गया। जीवन और जगत् के प्रति उनकी धारणा बदल गयी।

## 3.4 देहान्त

स्वामी चिन्मयानन्द जी ने अपना भौतिक शरीर 3 अगस्त 1993 ई. को अमेरिका के सेन डियागो नगर में त्याग दिया।

## 4.5 सामाजिक सेवाएं

**"तुम्हारे आगे पीछे और आसपास जो है उससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है, तुम्हारे अन्दर क्या है?"**

**-स्वामी चिन्मयानन्द**

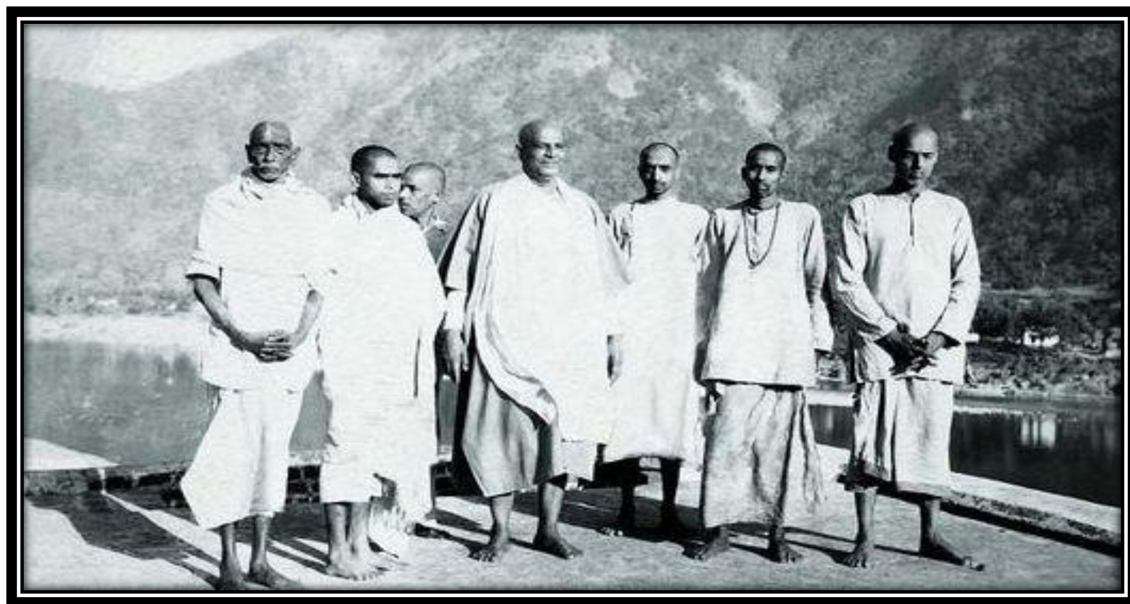
लोक सेवा अध्ययन समाप्त करने के बाद स्वामी जी के मन में सामाजिक सेवा करने का विचार प्रबल होने लगा। तपोवन जी से स्वीकृति पाकर वह दक्षिण भारत की ओर चले और पुणे पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपना प्रथम ज्ञान यज्ञ किया। यह एक प्रकार का नया प्रयोग था। प्रारम्भ में श्रोताओं की संख्या चार या छह ही थी। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगी। लगभग एक महीने के ज्ञान  बाद वह मद्रास चले गए और दूसरा ज्ञान यज्ञ प्रारम्भ किया। पहले यह ज्ञान यज्ञ भारत के बड़े शहरों में हुए, फिर छोटे शहरों में। कुछ समय बाद स्वामी जी विदेश भी जाने लगे। अब इन यज्ञों की इतनी अधिक मांग हुई कि उसे एक व्यक्ति द्वारा पूरा करना असम्भव हो गया। इसलिए स्वामी जी ने **मुम्बई संदीपनी** की स्थापना की और ब्रह्मचारियों को प्रशिक्षित करना प्रारम्भ कर किया। दो-तीन वर्ष पढ़ने के बाद ब्रह्मचारी छोटे यज्ञ करने लगे, स्वाध्याय मण्डल चलाने लगे और अनेक प्रकार के सेवा कार्य करने लगे। इस समय देश में 175 केंद्र और विदेशों में लगभग 40 केंद्र कार्य कर रहे हैं। इन केंद्रों पर लगभग 150 स्वामी एवं ब्रह्मचारी कार्य पर लगे है, यह संख्या हर वर्ष बढ़ रही है। स्वामी चिन्मयानन्द जी का पूरा जीवन लोगों को आन्तरिक जीवन का महत्व समझाने में व्यतीत हो गया। जो भी युवा, वृद्ध आदि उनके सम्पर्क में आये, उन्होंने प्रेम और करुणा से भरकर बस यूं ही पाठ पढ़ाया -"अपने अंदर सच्चिदानन्द को खोजो, जो तुम्हारा आत्मस्वरुप है।" उन्होंने 42 वर्षों तक अनवरत देश और विदेश सभी का आध्यात्मिक ज्योति जगाने का अभियान चलाया। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर असंख्य साधकों तथा जिज्ञासुओं का जीवन सुंदर और आनन्दमय भी हो रहा है।

प्रेम और करुणा से आप्लावित समाज सेवक स्वामी चिन्मयानन्द जी देश-विदेश में अनवरत ज्ञान यज्ञ करते हुए मंदिरों का निर्माण, वेदान्त प्रचार के लिए संस्थाओं की स्थापना स्कूल कॉलेज, हॉस्पिटल आदि का

संचालन, ग्रामीण विकास व जनकल्याण की योजनाओं को मूर्त रूप देते हुए भी वे आत्म स्वरूप में लीन रहते थे। उनका हृदय आत्मानन्द व असीम शान्ति में डूबा रहता था और हाथ पैर समाज सेवा में। उनके संरक्षण में स्थापित चिन्मय मिशन प्रभावशाली ढंग से वेदान्त ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहा है और इससे जुड़े असंख्य कार्यकर्ता न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी सामाजिक उत्थान में योगदान कर रहे हैं ।

## 4.6 जीवन की नई दिशा

विद्यार्थी जीवन में साधु-संत के प्रति उनका दृष्टिकोण संशयात्मक था। परन्तु उनके अन्दर की आत्म-जिज्ञासा ने उन्हें हिमालय के सुन्दर तीर्थ ऋषिकेश में स्वामी शिवानन्द जी के पास पहुँचा दिया। इस सानिध्य और अन्तर्जिज्ञासा से उत्साहित होकर उन्होंने 25 फरवरी 1949 को स्वामी शिवानन्द जी से दीक्षा ली। 34 वर्ष का युवा बालकृष्ण मेनन स्वामी चिन्मयानन्द बन गया जिसका अर्थ होता है- शुद्ध चैतन्य के आनन्द में लीन।



चित्र स. 4.6.1- सन्यास दीक्षा के अवसर का चित्र जिसमें दाहिने से तीसरे स्वामी चिन्मयानन्द हैं.... 25 फरवरी 1949 शिवरात्रि के दिन स्वामी शिवानन्द जी ने बालकृष्ण मेनन को सन्यास दीक्षा दी। उनका नया नाम स्वामी चिन्मयानन्द हुआ।

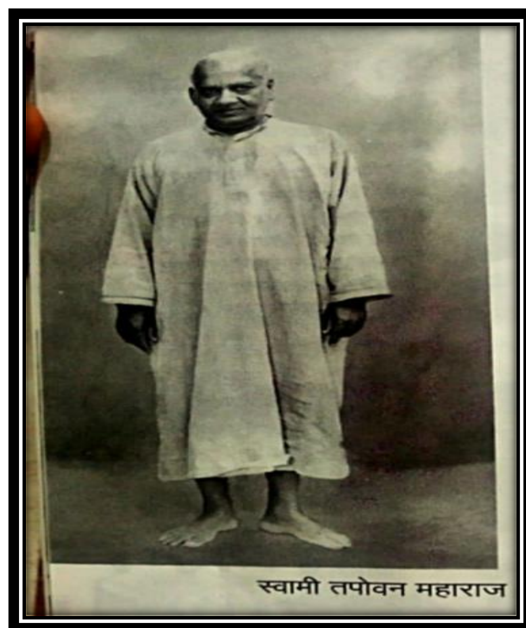


चित्र स. 4.6.2- मई 1949 को ऋषिकेश में स्वामी शिवानन्द जी के साथ प्रातः कालीन कक्षा के समय।

इसमें स्वामी शिवानन्द जी बायें से चौथे व स्वामी चिन्मयानन्द जी दायें से चौथे हैं.....यही वह समय था जब पूर्व में स्वामी शिवानन्द के लेखों व पुस्तकों से पढ़ी शिक्षा युवा सन्यासी के जीवन में मूर्तरूप ले रही थी।

शिवानन्द जी ने युवा सन्यासी स्वामी चिन्मयानन्द को प्रेरित किया कि वह वेदान्त के महान अध्येता स्वामी तपोवन जी से शास्त्रों का गहन अध्ययन करे। स्वामी तपोवन जी उत्तरकाशी में रहते थे। ग्रीष्मऋतु में स्वामी तपोवन जी पवित्र गंगा के उद्गम स्थान गंगोत्री में रहते थे।

यह दस हजार फिट ऊँचाई पर स्थित है।

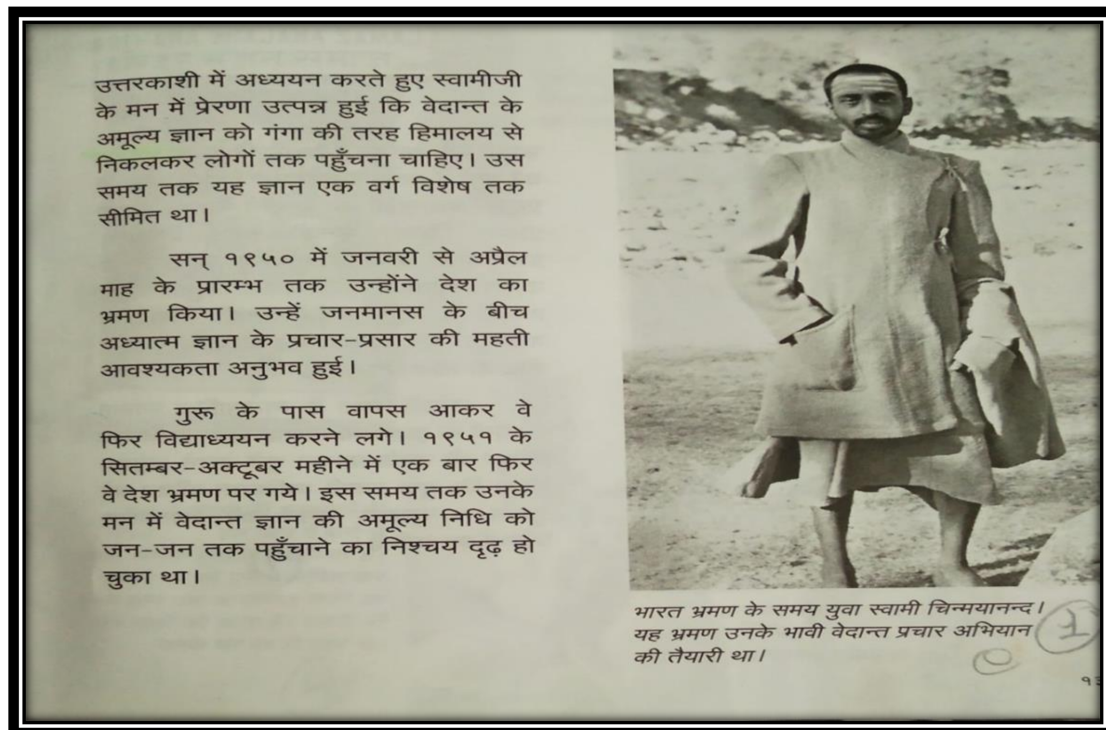



चित्र स. 4.6.3 स्वामी तपोवन महाराज



गंगोत्री में स्वामी जी की कुटिया का चित्र

चित्र सं0-4.6.6



उत्तरकाशी में अध्ययन करते हुए स्वामीजी के मन में प्रेरणा उत्पन्न हुई कि वेदान्त के अमूल्य ज्ञान को गंगा की तरह हिमालय से निकलकर लोगों तक पहुँचना चाहिए। उस समय तक यह ज्ञान एक वर्ग विशेष तक सीमित था।

सन् १९५० में जनवरी से अप्रैल माह के प्रारम्भ तक उन्होंने देश का भ्रमण किया। उन्हें जनमानस के बीच अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार की महती आवश्यकता अनुभव हुई।

गुरू के पास वापस आकर वे फिर विद्याध्ययन करने लगे। १९५१ के सितम्बर-अक्टूबर महीने में एक बार फिर वे देश भ्रमण पर गये। इस समय तक उनके मन में वेदान्त ज्ञान की अमूल्य निधि को जन-जन तक पहुँचाने का निश्चय दृढ़ हो चुका था।

*भारत भ्रमण के समय युवा स्वामी चिन्मयानन्द। यह भ्रमण उनके भावी वेदान्त प्रचार अभियान की तैयारी था।*



चित्र सं0-4.6.5

➤ स्वामी चिन्मयानंद महारा...
आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं ... शरीर, आत्मा के साथ
...की उपेक्षा नहीं की। शिक्षा के द्वारा बुद्धि, मस्तिष्क,



*१९५१ में पूना के प्रथम ज्ञान यज्ञ में प्रवचन देते स्वामी जी...........*

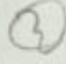
प्रारम्भिक वर्षों में स्वामी जी के प्रवचन सत्र दीर्घकालीन जैसे ४१ दिन या १०० दिन के हुए। बाद के वर्षों में प्रचार क्षेत्र व्यापक होने से प्रवचन-सत्र की अवधि ७ से १० दिन पर स्थिर हो गई थी।

परम्परानुसार अग्निहोत्र रूप यज्ञ पद्धति को स्वामी जी ने ज्ञान-यज्ञ का स्वरूप प्रदान किया। ज्ञान यज्ञ में अज्ञान रूप समिधा की आहुति ज्ञानाग्नि में सांकेतिक रूप से की जाती है। यह ज्ञान यज्ञ परम्परा भी शास्त्रों के अनुसार ही है। शास्त्रनिष्ठ व ब्रह्मनिष्ठ गुरू से वेदान्त का श्रवण करने से ज्ञानाग्नि प्रज्जवलित होती है जिसमें अज्ञान जल कर भस्म हो जाता है।

पूरे भारत एवं विश्व के अनेक देशों में स्वामीजी के ज्ञान यज्ञ हुए। बाद के वर्षों में स्वामी जी के आवासीय आध्यात्मिक शिविर भी होते थे जिनमें वे ज्ञान यज्ञों की तरह ही वेदान्त-अध्ययन कराते थे। भौतिक जीवन की आपा-धापी व शोर-गुल से दूर इन आध्यात्मिक शिवरों में साधक ज्यादा लाभान्वित होते थे।




पूना का वह स्थान जहाँ से दिसम्बर १९५१ में आध्यात्मिक अभियान प्रारम्भ हुआ।





पूना में स्वामी जी भक्तगणों के साथ....... इस चित्र में बायें से दूसरी श्रीमती सुशीला मुदलियार हैं। स्वामी जी को पूना आमंत्रित कर प्रथम ज्ञान यज्ञ आयोजित करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। स्वामी जी उनके घर पर ही ठहरे थे।

## स्वामी जी के कार्य

**"आत्मज्ञानी के लिए ध्यान और कार्यों के द्वारा पाने या खोने को कुछ नहीं होता।"**

**स्वामी चिन्मयानन्द**

---

सन् 1953 ई. में मद्रास के कुछ वेदान्त जिज्ञासुओं ने मिलकर स्वामी जी के मार्गदर्शन में 'चिन्मय मिशन' की स्थापना की। कालान्तर में स्वामी जी की ज्ञान गंगा से सराबोर अनेकों श्रद्धालु व जिज्ञासु इससे जुड़ते चले गये। स्वामी जी इतनी स्पष्टता व प्रभावशाली ढंग से वेदान्त ज्ञान की दैनिक जीवन में उपयोगिता को समझाते थे कि लोग जाति, वर्ग, धर्म और देश की सीमाओं से परे आत्मज्ञान के इस अभियान में शामिल होते चले गए। चिन्मय मिशन का कार्य क्षेत्र न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी फैला। वास्तव में उनके सद्प्रयास से वेदान्त ज्ञान विश्व की धरोहर बन गया। सन् 1993 ई. में जब स्वामी जी ने महासमाधि ली उस समय चिन्मय मिशन के पूरे विश्व में करीब 200 केन्द्र वेदान्त प्रचार का कार्य कर रहे थे। आज यह संख्या लगभग 300 है।

स्वामी जी का कार्य हम सबके प्रति उनके प्रेम की अभिव्यक्ति था। उनके कार्य रूपी पहिऐ की धुरी वेदान्त ज्ञान था। जीवन में वेदान्त की प्रासंगिकता को उन्होंने ज्ञान यज्ञ, आध्यात्मिक शिविर, सांदीपनी साधनालय के वेदान्त कोर्स, स्वाध्याय मंडल व विपुल साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने आध्यात्मिक जाग्रति के लिए समर्पित अपने जीवन के 42 वर्षों में 576 ज्ञान-यज्ञ व अनेक आध्यात्मिक शिविर देश व विदेश में किए। उनके प्रवचनों में हजारों श्रद्धालु उपस्थित होकर लाभ लेते थे। पवई मुम्बई में स्थित सांदीपनी साधनालय में विधिवत् एक वेदान्त कोर्स चलता है। यह संस्थान वेदान्त ज्ञान की शिक्षा देने का प्रमुख केन्द्र है। यहीं पर सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट का मुख्यालय है जो सभी चिन्मय मिशन केन्द्रों का मार्गदर्शन करता है।

स्वामी जी ने वेदान्त ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए कई परियोजनाओं को प्रारम्भ किया। इनमें से एक चिन्मय इन्टरनेशनल फाउन्डेशन (सी.आइ.एफ.) है जहाँ भारत के प्राचीन साहित्य. संस्कृत भाषा ज्ञान, विभिन्न धर्मों व दर्शन के मूल तत्त्वों आदि का अध्ययन व शोध कार्य हो रहा है। इसी प्रकार चिन्मय आर्गेनाइजेशन प्रयास

किया। इस कार्य में लगे शिक्षकों व चिन्मय मिशन के कार्यकर्ताओं को वे सतत मार्गदर्शन देते थे। उनके अनुसार बच्चे व युवा किसी भी समाज एवं देश के महत्वपूर्ण घटक हैं। वे आने वाले भविष्य का आधार होते हैं इसलिए उनको जीवन की सही दिशा देना अत्यन्त आवश्यक है।

चिन्मय मिशन में 5 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए 'बाल विहार ' तथा 13 से 28 वर्ष के युवाओं के लिए 'युवा केन्द्र' चलाए जाते हैं। इनमें पौराणिक कहानियों, संतो के जीवन चरित्र, रामायण, भागवत्, भगवद्गीता की शिक्षा आदि के द्वारा आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है। शास्त्रों में वर्णित ईश्वर की प्रार्थनायें व भजन सिखाए जाते हैं तथा भारतीय संस्कृति की उच्च परम्पराओं से अवगत कराया जाता है ताकि जीवन सुन्दर बन सके। उन्हें माता-पिता के प्रति आदरपूर्ण भक्ति सिखाई जाती है। अभी दो नये कार्यक्रम भी सम्मलित किये गये हैं- एक शिशु विहार २ से ४ वर्ष की आयु के छोटे बच्चों के लिए तथा दूसरा सेतुकारी अर्थात् समाज में सेतु की भूमिका निभाने वाले 29 से 40 वर्ष की आयु वर्ग के लिए।

चिन्मय मिशन में कुछ सांस्कृतिक केन्द्र भी बनाये गए हैं जैसे नई दिल्ली में चिन्मय सेन्टर आफ वर्ल्ड अन्डरस्टेन्डिंग व चेन्नई में चिन्मय हेरिटेज सेन्टर। स्वामी जी से प्रेरणा पाकर बहुत सारे विदेशी नागरिक भी अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासा को शान्त करने वेदान्त ज्ञान की तरफ उन्मुख हुए। वेदान्त ज्ञान की पवित्रता एवं युक्तियुक्तता ने उन्हें बहुत प्रभावित किया।

स्वामी जी को सभी लोग प्रेम, आदर और कृतज्ञता से भरकर "गुरुदेव" कह कर पुकारते हैं। परम पूज्य गुरुदेव की दृष्टि व शिक्षा आज भी चिन्मय मिशन के माध्यम से देश व विदेश में आध्यात्मिक जिज्ञासुओं तक पहुँच रही है। प्राचीनतम और यथार्थ वेदान्त ज्ञान अब नयी संचार तकनीक की सहायता से सुदूर साधकों का जीवन भी आलोकित कर रहा है।

## स्वामी चिन्मयानंद जी की विरासत

**"उस मन को खोजो जो अज है अर्थात जो जन्म लेने के पहले भी था।"  -स्वामी चिन्मयानन्द**

अनेक लोगों उन्हें जानते थे। अनके उनका आदर करते थे और अनेक उनके भक्त व शिष्य थे। कुछ उनके

आलोचक और कुछ उनसे असहमत भी थे। परन्तु इस सबके बावजूद सभी एक मत से मानते थे कि गुरुदेव ने देश और विदेश के असंख्य साधकों के मन व हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। निश्चित ही उनकी शिक्षा और कार्य आने वाली अनेक पीढ़ी को सन्मार्ग की तरफ प्रेरित करेगी।

गुरुदेव ने जो कार्य किया वह सचमुच में महान था। इतना ही नहीं वे भावी कार्यों की जो रूप-रेखा दे गये वह उससे भी ज्यादा वृहद एवं कल्याणकारी है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इतना सारा कार्य, परियोजनायें और हजारों साधकों की जिज्ञासा का समाधान करते हुए भी उन्हें आत्मानन्द व आत्मशांति से कभी च्युत नहीं देखा। उनके व्यक्तित्व से दिव्यता और परिपूर्ण ज्ञान की अनुभूति का तेज सदैव स्पष्ट रूप से झलकता रहता था।

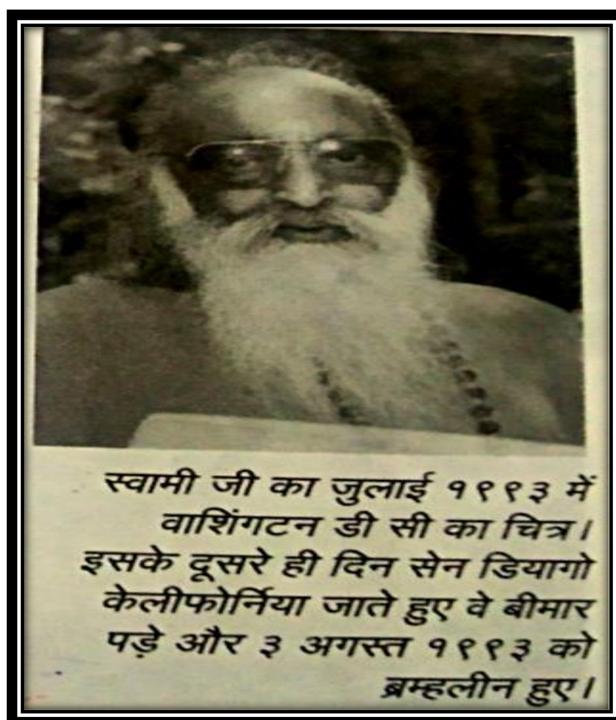
स्वामी जी के रूप में आत्मज्ञानी, निस्वार्थ और करुणामयी गुरू का प्रादुर्भाव अपने- आप में एक महत्वपूर्ण घटना है। उन्हें सदैव आत्मानन्द और शान्ति से युक्त कार्य करते हुए देखने का अवसर मिलना वरदान के समान होता था। उनका जीवन स्वयं में शिक्षा था।

चाहे किसी भावी मंदिर का नक्शा देख रहे हों या हास्पिटल का प्रारूप, नर्सरी स्कूल के लिए चन्दा एकत्र कर रहे हों या किसी आश्रम में निर्माण कार्य का अवलोकन, स्वामी जी सदैव शान्त, सरल, प्रसन्न और ओजस्वी दिखाई देते थे। जिसने भी उनके सानिध्य में कुछ क्षण बिताये हैं वह जानता है कि वे सदैव सहृदयी, विनोदपूर्ण और सरल चित्त रहते थे। उनकी निश्चिन्तता इस बात का प्रतीक थी कि ईश्वर के नाटक में वे मात्र अभिनेता की तरह अपना कार्य करते थे। इसी कारण वे सदैव सजग, स्पष्ट और प्रेममय रहते थे।

वेदान्त के सिद्धांतों को इस प्रस्ताव से समझाते हुए और जन कल्याण के कार्य करते हुए उनका अपार प्रेम स्पर्श लगता था वह विधान दर्शन का मूर्तिमान रूप थे इसलिए उनके शब्दों एवं कार्यों की अपेक्षा उनका व्यक्तित्व ही अपने आप में शिक्षा थी। उनका एक-एक शब्द इतना प्रभावी होता था कि साधक बड़ी सरलता से वेदान्त सिद्धान्त के अभिप्राय को समझ कर अपने दिव्य स्वरूप का अनुभव करने लगता। उन्हें कार्य करते हुए देखना भी बहुत प्रेरणादायक होता था। वास्तव में उनके जीवन का प्रत्येक पक्ष अद्वैत वेदान्त की शिक्षा देता था । भक्तों के लिए उनका जीवन उदाहरण स्वरूप था।

उनकी आन्तरिक शान्ति भक्तों की स्तुति या निन्दा से कभी भंग नहीं होती थी। उनका प्रेम इतना विस्तृत था कि उसने हर जाति, धर्म, वर्ग, अच्छे-बुरे, समर्थक-विरोधी सभी को एक समान अनुग्रहीत किया। लगभग 40 वर्षों तक उन्होंने प्रेम व करुणा से भरकर वेदान्त का संदेश बिना किसी भेदभाव के सभी को दिया। जिसने भी उनकी शिक्षा को अपनाया उसका जीवन सुन्दर व सार्थक हो गया। उनके द्वारा बाँटा गया ज्ञान आज भी चिन्मय मिशन के माध्यम से गूंज रहा है और असंख्य लोग उससे प्रेरणा लेकर आत्म-स्वरूप के आनंद से अभिभूत हैं। हर सच्चा साधक उनकी शिक्षा का अनुसरण करके दुःख पूर्ण जीवन से छुटकारा पाकर कभी भंग न होने वाली असीम शान्ति को पा सकता है। उनके ये शब्द कि - "स्वयं को बदलो तो आस-पास.की दुनिया अपने आप बदल जाऐगी" आज भी प्रतिध्वनित हो रहे हैं। इससे प्रेरित होकर अनेक लोग सन्मार्ग पर अग्रसित हैं।

हमें "स्वयं की खोज" के लिए हमेशा उत्प्रेरित करने वाले परम पूज्य गुरुदेव कहते थे "जो स्वयं का स्वामी होता है वही दूसरों का पथ प्रदर्शक भी"। उन्होंने इस कथन की सत्यता को स्वयं अपने जीवन द्वारा सिद्ध भी किया।


स्वामी जी का जुलाई १९९३ में वाशिंगटन डी सी का चित्र। इसके दूसरे ही दिन सेन डियागो केलीफोर्निया जाते हुए वे बीमार पड़े और ३ अगस्त १९९३ को ब्रम्हलीन हुए।

# चतुर्थ अध्याय

# चिन्मय मिशन का परिचयात्मक विवरण

## 4.1 चिन्मय मिशन की स्थापना

चिन्मय मिशन सन् 1953 में स्थापित एक आध्यात्मिक, शैक्षिक तथा धार्मिक संस्था है। इसकी स्थापना स्वामी चिन्मयानन्द ने की थी। इसका मुख्यालय मुंबई में है, जिसका परिचालन सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट द्वारा होता है। इसकी स्थापना स्वामी चिन्मयानन्द के शिष्यों द्वारा किये जा रहे कार्यों को संगठित स्वरूप प्रदान करने के लिए की गयी थी। इस समय भारत एवं विश्व के अन्य भागों में 300 से अधिक केन्द्र चल रहे हैं।

## 4.2 सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट

यह एक आध्यात्मिक, शैक्षिक एवं सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्थापित न्यास है।

### 4.2.1 सेन्ट्रल चिन्मय ट्रस्ट की स्थापना

सन् 1947 में सैकड़ों वर्षों की पराधीनता के बाद भारतवर्ष को राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, किन्तु समाज के प्रमुख लोगों में ही लुप्त हो गया था। हिन्दू धर्म का महत्व हिन्दुओं के मन में ही लुप्त हो गया था। धर्म और संस्कृति ही किसी राष्ट्र की आत्मा होती है। उसके आच्छादित हो जाने पर जनता के मन में दुर्बलता आ जाती है। उसे दूर करने के लिए देश के विद्वानों ने अनेक धार्मिक सुधार के आन्दोलन प्रारम्भ किये। उसी समय सन् 1951 में सनातन धर्म को आधार बनाकर चिन्मय आन्दोलन का उदय हुआ। इस आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी चिन्मयानन्द थे। उन्होने स्वामी शिवानन्द से सन्यास की दीक्षा ली थी और स्वामी तपोवन महाराज से वेदान्त ग्रन्थ पढ़े थे तथा उनके निर्देशन में आध्यात्मिक साधन की थी। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि अरविन्द, महर्षि रमन आदि का साहित्य पढ़ा था। उनके सामने भावी राष्ट्र का एक आदर्श चित्र था; वे उसे मूर्तिमान करना चाहते थे। उसके लिए उन्होंने ज्ञान यज्ञों की योजना बनायी, जिसका सिलसिला पुणे नगर से प्रारम्भ हुआ।

दो वर्ष बाद 8 अगस्त 1953 को स्वामी जी से प्रभावित होकर कुछ भक्तगणों ने अध्ययन और विचार विमर्श हेतु उत्तर काशी गये। उन्होंने उत्साह के साथ अपनी योजना व ‘चिन्मय मिशन’ नामक नये संगठन का

निर्माण करने का प्रस्ताव रखा। इस पर स्वामी जी कहा, “ मैं यहाँ प्राचीन सन्तोष का सन्तों का आदेश देने आया हूँ। मैं उनसे लाभान्वित हुआ हूँ। यदि मैंने तुम्हें किसी प्रकार से लाभान्वित किया हो तो तुम भी इसे जारी रखो।” भक्तों ने स्वामी जी को फिर लिखा कि ‘चन्मय मिशन’ का प्रारम्भ किया।

चिन्मय मिशन का उद्देश्य यही है कि संसार के सभी क्षेत्र के व्यक्तियों को वेदान्त ज्ञान प्रदान कर उसे आत्मोन्नति करते हुए सुख व समृद्धि प्राप्त करने में और समाज का उपयोगी अंग बनने में सहायता करे। स्वामी जी के अथक परिश्रम के फलस्वरूप इसका सन्देश विश्व के अनेक देशों में तथा भारत के कोने-कोने में फैलता गया। इसका आधार सनातन धर्म, उसके धर्म ग्रन्थ, रामायण, उपनिषद आदि हैं। जनता में इसका ज्ञान कराने के लिए आठ-दस दिनों के ज्ञान-यज्ञ किये गये और इसके बाद श्रोताओं ने स्वध्याय मण्डल स्थापित कर अपने ग्रन्थों का अध्ययन प्रारम्भ किया।

इस प्रकार दस वर्ष तक अनेक नगरों में चिन्मय मिशन का विस्तार होता गया। अब यह आवश्यता समझ में आने लगी कि सभी स्थानीय केन्द्रों में सामंजस्य रखने के लिए तथा उनके मार्ग-निर्देशन देने के लिए एक केन्द्रीय संगठन बनाया जाये। अतः सन् 1964 में मुम्बई में एक शिखर संस्था की स्थापना हुई और उसका नाम रखा गया ‘सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट’। इस प्रकार यह एक रजिस्टर्ड संस्था बन गई और इसका कार्य विधिवत होने लगा। इस समय ‘सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट’ द्वारा विश्व में 243 मिशन केन्द्रों के अतिरिक्त, भारत में स्थापित 37 सेवा ट्रस्टों के कार्य-कलापों पर भी नियन्त्रण रखा जाता है।

सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, साकी बिहार रोड, संदीपनी साधनालय, मुम्बई-400072

फोन-091-022-28572367, 28575806

## 4.3 एक आयोजन जो आन्दोलन बन गया

पुणे के एक प्राचीन गणपति मंदिर में बहुत थोड़े से श्रोताओं को स्वामी चिनमयानन्द जी ने वेदान्त पढ़ाना प्रारम्भ किया। यह ज्ञान यज्ञ 31 दिसम्बर 1951 को प्रारम्भ हुआ था। स्वामी जी अंग्रेजी में उपनिषद पढ़ाते थे। यह छाटा-सा आयोजन ही कालान्तर में चिन्मय आन्दोलन का रूप लेकर पूरे विश्व में फैल गया। आज देश-विदेश के विभिन्न शहरों में चिन्मय मिशन के लगभग 300 केन्द्र आध्यात्मिक जागृति लाने के लिये कार्य रहे हैं।

## 4.4 चिन्मय मिशन के उद्देश्य

**"अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक समय तक अधिक से अधिक सुख देना।"**

**स्वामी चिन्मयानन्द**

हमारे शास्त्रों में सुखी जीवन के तीन मार्ग बताए गये हैं- कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग। ये तीनों एक-दूसरे के परिपूरक हैं। साधक अपनी योग्यता अथवा मानसिक प्रवृत्ति के अनुरूप किसी एक से प्रारम्भ कर अन्य दो की सहायता से पूर्णतः सुखी हो सकता है। चिन्मय मिशन का कार्य शास्त्रों का यही ज्ञान लोगों तक यथार्थ रूप में पहुँचा कर उन्हें सुखी जीवन की कला सिखाना है। यह चिन्मय दृष्टि है। इसे अलग-अगल आयु वर्ग के लोगों को उनको रूची व प्रवत्ति के अनुरूप भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के द्वारा देने का प्रयास होता है।

विद्यालयों, महाविद्यालयों, अनाथलयों , अशक्तों, अपंगों और पीड़ितों के आश्रयग्रहों अकाल निवारण-कार्यों तथा इसी प्रकार के अन्य शैक्षणिक एवं धर्माथ कार्यों व संस्थाओं की प्रतिष्ठा करना, उनका निर्वाह, परिचालन व सहायता करना तथा जन समूह में शिक्षा कार्य का परिचालन करना।

## 4.5 चिन्मय मिशन के वर्तमान संचालक

## पूज्य गुरुजी तेजोमयानन्द

पूज्य गुरुजी तेजोमयानन्द वेदान्त के एक उत्कृष्ट शिक्षक हैं। उनकी सादगी और विनम्रता के नीचे एक गहन गहराई है। उनके पास अपने गुरु के दृष्टिकोण को वास्तविक तथा मजबूत बनाने के लिए एक सरल दृढ़ विश्वास है। वह वर्तमान में चिन्मय मिशन मे प्रमुख हैं।

गुरुजी तेजोमयानन्द जी का जन्म 30 जून 1950 को मध्यप्रदेश के एक सुसंस्कृत महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ था। उनके पिता एक वकील थे और उच्च सम्मान में रहते थे। एक छात्र के रूप में उन्होने संगीत, नाटक और कई सहपाठक्रम गतिविधियों में गहरी रूचि ली। सुधाकर कैतवाडे (जैसा कि उन्हें पहले कहा गया था) ने भौतिकी से स्नातक किया, इसके बाद वह संदीपनी साधनालय में शामिल हुए। 1970 में मुम्बई में एक छात्र ब्रह्मचारी के

रूप में उन्होंने भारत और अमेरिका में मिशन के संदीपों (वेदांत गुरूकुलों) में आचार्य के रूप में कार्य किया। उनके कई छात्र आज वेदान्त के शिक्षक हैं। धाराप्रवाह अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी और संस्कृत में स्वामी जी ने अनेक लेखनी लिखी है। वे कई वेदान्त ग्रन्थों और साथ ही मूल रचनाओं के लेखक हैं। वे दुनिया भर में प्रवचन देते हैं। प्रभु के लिए भक्ति उनके दर्शन को उत्साह में रखती है। वह एक बच्चे के खेल और ज्ञान के लिए तत्पर, कारण और तर्क के लिए एक युवा पेंसिल और परिपक्व सोच के लिए एक वयस्क की क्षमता साझा करते हैं। धीरज और विनय की भावना के साथ वह अपने दर्शकों के साथ एक त्वरित तालमेल बनाते हैं।

अगस्त 1993 में पूज्य गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द की महासमाधि पर पूज्य गुरु स्वामी तेजोमयानन्द जी चिन्मय मिशन के प्रमुख बने। मिशन ने अपनी कोमल, प्रेममूर्ण देखभाल व मार्गदर्शन के तहत इसकी सुगन्ध को दूर-दूर तक फैलाया है। अपने गुरु और ईश्वर की असीम कृपा और आशीर्वाद के साथ, वे उन सभी जिम्मेदारियों और चुनौतियों को सम्भालते हैं, जो उसकी स्थिति, परिपक्वता और अवस्था के साथ होती है। यह केवल स्वाभाविक है कि असंख्य भक्तों ने वास्तव में अनुभव किया है और पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द की दिव्य कृपा को अनुभव करना जारी रखेंगे, जो उनके शिष्य और उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी तेजोमयानन्द के माध्यम से बह रही है।

स्वामी तेजोमयानन्द जी गुरुभक्ति के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। गुरुदेव की शिक्षा व कार्य के प्रति वे पूरी तरह से समर्पित हैं। उनके नेतृत्व में चिन्मय मिशन का कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है। सबको साथ लेकर, सबके सहयोग से चिन्मय दृष्टि के विस्तार के लिए नये-नये प्रकल्पों को सहजता से कार्यान्वित करने की उनमें अद्भुत क्षमता है।



चित्र सं0 4.5.1 स्वामी तेजोमयानन्द

## 4.6 चिन्मय मिशन

चिन्मय मिशन के 'चिन्मय' शब्द का अर्थ है- 'सच्चा ज्ञान'।

चिन्मय मिशन एक ऐसा संगठन है, जहाँ सत्य के साधक उपनिषदों की प्राचीन शिक्षाओं को प्राप्त करने और प्रदान करने के लिए एक साथ आते हैं।

## 4.7 चिन्मय मिशन-दृष्टि

व्यक्तियों के आन्तरिक परिवर्तन जिसके परिणाम स्वरूप उनके आसपास एक खुशहाल दुनिया बनी।

### 4.8 मिशन स्टेटमेंट (वाक्य)

वेदान्त के ज्ञान, आध्यात्मिक विकास और खुशी के लिए व्यावहारिक साधनों से किसी भी व्यक्ति को प्रदान करने के लिए उन्हें समाज के लिए सकारात्मक योगदानकर्ता बनने में सक्षम बनाना।

### 4.9 मिशन मोटो (आदर्श वाक्य)

अधिक से अधिक संख्या में, अधिकतम सुख देने के लिए, अधिकतम लोगों को, अधिकतम अवधि के लिए हमारा धर्म है।

### 4.10 देदीप्यमान दृष्टि

#### 4.10.1 संदीपनी साधनालय : (आधुनिक गुरुकुल)

स्वामी चिनमयानन्द जी कहते थे कि आज हमें शास्त्रनिष्ठ धर्म प्रचारकों की बहुत आवश्यकता है, ताकि उपनिषदों का संदेश घर-घर में पहुँचाया जा सके। स्वामी विवेकानन्द की तरह उत्साही व समर्पित साधकों की एक सेना होनी चाहिए, जो वेदान्त सिद्धान्त के व्याहारिक पक्ष को समझा सकें और तदनुरूप जीवन व्यतीत कर उदाहरण प्रस्तुत कर सकें।

इस आवश्यकता की पूर्ती हेतु उन्होंने आधुनिक गुरुकुल के रूप में कई स्थानों पर 'संदीपनी साधनालय' स्थापित किये गये। इनमें युवा स्त्री-पुरूष को अद्वैत वेदान्त की विधिवत शिक्षा दी जाती है। यहाँ से प्रशिक्षित विद्यार्थी फिर स्वेच्छा से देश-विदेश में वेदान्त ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते हैं।

प्रथम संदीपनी साधनालय मुम्बई में स्थापित किया गया था, जो अंग्रेजी में वेदान्त की शिक्षा देता है। 1989 में हिमांचल प्रदेश के सिद्धवारी आश्रम में भी संदीपनी साधनालय की स्थापना हुई। इसमें हिन्दी में वेदान्त कोर्स चलता है। इसके प्रथम आचार्य स्वामी तेजोमयानन्द जी थे।

सन् 1979 में द्विवर्षीय वेदान्त कोर्स संदीपनी वेस्ट पियर्सी कैलीफोनिया में भी प्रारम्भ किया गया। विदेश में स्थापित यह प्रथम संदीपनी साधनालय था।

स्वामी जी पूरे भारतवर्ष में संदीपनी साधनालय जैसे प्रशिक्षण केंद्र  खोलना चाहते थे, ताकि जिज्ञासु साधकों को वेदान्त ज्ञान दिया जा सके। इसी दृष्टि से आंर्धप्रदेश के चिन्मयारण्यम्, उ.प्र. के इलाहाबाद, केरल के कासरगोड़, तमिलनाडु  के कोयम्बटूर, कर्नाटक के चोक्काहली व महारष्ट्र के कोल्हापुर आश्रम में प्रादेशिक भाषा में वेदान्त पाठयक्रम किये गये। इसी तरह वेस्टइन्डीज, साउथ अक्रीका और श्रीलंका में भी नियमित वेदान्त पढाने का कार्य प्रारम्भ हुआ।

संदीपनी आश्रम में विद्यार्थियों को सांसरिक जीवन से दूर शान्त व पवित्र वातारण में शस्त्रों में निहित तत्व दर्शन को समाज के अन्य लागों तक पहुँचाने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है।

दो वर्ष के वेदान्त कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को अनुशासन में रहकर आध्यात्मिक शास्त्रों का मनन-चिन्तन व साधना के लिए प्रेरित किया जाता है। ये विद्यार्थी ही स्वेच्छा से चिन्मय मिशन के विभिन्न केन्द्रों में आचार्य बन कर वेदान्त ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते हैं।

### 4.10.2 आचार्यगण

चिन्मय मिशन अर्थात आध्यत्मिक जाग्रति अभियान का कार्य पूरे विश्व में फैलाने वाले इसके आचार्यगण हैं। वे अपने-अपने केन्द्र के में निःस्वार्थ भाव व समर्पण के साथ वेदान्त शस्त्रों को पढ़ाते हैं और जिज्ञासु साधकों का मार्गदर्शन करते हैं। उनका स्वयं का जीवन वेदान्तमय होने के कारण अन्य साधकों के लिए प्रेरणदायक होता है।

कुछ आचार्य शुभ्र वस्त्र धारण करते है, जो मनसा-वाचा-कर्मणा की पवित्रता का प्रतीक है। उन्होंने विद्यार्थी के रूप में सेवा कार्य करने का संकल्प लिया होता है। जो आयार्य पीत वस्त्र धारण करते हैं, वे ब्रह्मचारी कहलाते हैं। पीत वस्त्र ज्ञान व संयम का प्रतीक है। इन आचार्यों ने अपना पूरा जीवन वेदान्त प्रचार के लिए न्योछावर कर दिया। जो आचार्य सन्यास दीक्षा से सम्पन्न होते हैं, वे गेरूआ वस्त्र धारण करते है। गेरूआ रंग त्याग व पूर्णता का द्योतक है। चिन्मय मिशन के समपूर्ण कार्य व सफलता का श्रेय इन सभी आचार्यों को जाता है।

### 4.10.3 ज्ञानयज्ञ

भगवद्गीता (अ. 4.33) में भगवान कहते हैं- ''हे परेतय! द्रव्यों से सम्पन्न होने वाले यज्ञ की अपेक्षा ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है। सम्पूर्ण कर्मों की परिसमाप्ति ज्ञान में होती है।'' 'ज्ञान यज्ञ' आध्यात्मिक शास्त्रों के गहन अध्ययन की

प्रक्रिया है, जिससे उत्पन्न ज्ञानाग्नि में अज्ञान की आहुति होती है।

चिन्मय मिशन केन्द्रों में सभी के सहभाग व सहयोग से ज्ञानयज्ञों का आयोजन होता है। इसमें आचार्य भगवद्गीता, उपनिषद या अन्य वेदान्त शास्त्र से परिचित कराने के लिए 5-7 दिनों तक प्रवचन करते हैं। दैनिक जीवन की उथल-पुथल के बीच ही वेदान्त ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को समझाया जाता है, ताकि लोगों का जीवन सुन्दर व शान्तिपूर्ण बन सके। ये प्रवचन हिन्दी, अंग्रेजी व प्रादेशिक भाषाओं में होते हैं।

स्वामी चिन्मयानन्द जी कहते थे- "भगवद्गीता व उपनिषदों में शाश्वत् जीवन मूल्यों का इतना स्पष्ट व युक्तियुक्त वर्णन है कि उसे जानने पर सहज ही, अपने-आप हृदय परिवर्तन हो जाता हैं। मेरा अपना अनुभव है कि यदि किसी विद्यार्थी को यह ज्ञान एक बार स्पष्टता से दे दिया जाए, तो वह उसके हृदय में अमिट रूप में अंकित हो जाता है।"

### 4.10.4 आध्यात्मिक शिविर एवं आवासीय पाठ्यक्रम

चिन्मय मिशन के आश्रमों में समय-समय पर आचार्य के आध्यत्मिक शिविर आयोजित किये जाते हैं। इनमें साधक सांसारिक जीवन की उथल-पुथल व संघर्ष के उपरान्त शास्त्रों का अध्ययन, श्रवण-मनन व आत्मानुसन्धान करता है। यह आयोजन ज्ञान व भक्ति में डूबने का सुन्दर अवसर देता है। शिविर के दैनिक कार्यक्रम में प्रवचनों के अतिरिक्त ध्यानभ्यास, सामूहिक चर्चा, भजन, प्रश्नोत्तर व सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए भी समय निर्धारित होता है।

कई आश्रमों में अल्पकालीन आवासीय वेदान्त कोर्स भी आयोजित किये जाते हैं। इनमें से एक 'धर्म सेवक कोर्स' है, जिसमें 6 से 8 सप्ताह तक वेदान्त दर्शन की प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है। शास्त्रों में निहित सिद्धान्तों की स्पष्टता होने से आध्यात्मिक साधना सुगम व सार्थक हो जाती है।

आध्यात्मिक शिविर व आवासीय पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होने से देश-विदेश के अन्य साधकों से मिलने व उनके अनुभव जानने का अवसर मिलता है। आश्रमों में चलने वाली विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं तथा सेवा-कार्यों से भी अवगत होते हैं। आध्यात्मिक शिविरों के लिए पुणे के पास चिन्मय विभूति, सिद्धबारी आश्रम व उत्तरकाशी आश्रम बहुत लोकप्रिय है।

### 4.10.5 चिन्मय प्रकाशन

यह चिन्मय मिशन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसने साधकों के लिए विपुल वेदान्त साहित्य उपलब्ध किया है। स्वामी चिन्मयानन्द जी चाहते थे कि वेदान्त शास्त्रों की सरल व्याख्या तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उनका व्यावहारिक स्वरूप स्पष्टता के साथ उपलब्ध होना चाहिए। उनके अनुसार साधकों में आन्तरिक परिवर्तन तथा शान्त व आनन्दमय जीवन के लिए साहित्य सतत मार्गदर्शन का सशक्त माध्यम है। स्वामी जी की दृष्टि के अनुरूप ही चिन्मय प्रकाशन ने अपने नाम के अनुरूप जिज्ञासु साधकों हेतु परमार्थ मार्ग आलोकित करने में अहम भूमिका निभायी है।

चिन्मय प्रकाशन की पुस्तकें अंग्रेजी व हिन्दी के अतिरिक्त अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलबध हैं। 'चिन्मय वाणी' के नाम से पुस्तक बिक्री केन्द्र चिन्मय मिशन के सभी आश्रमों तथा देश-विदेश के केन्द्रों में कार्य कर रहे हैं, ताकि यह विपुल साहित्य लोगों तक आसानी से पहुँच सके। चिन्मय प्रकाशन सोशल मीडिया व इन्टरनेट के माध्यम से भी लोगों तक पहुँचाने के लिए कई आनलाइन स्टोर्स से भी सम्बद्ध है।

### 4.10.6 चिन्मय क्रिएशन

**'चिन्मय क्रिएशन'** के द्वारा चिन्मय मिशन आध्यात्मिक ज्ञान को टी. वी. व फिल्म के प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम का उपयोग कर लोगों तक पहुँचा रहा है। 'चिन्मय क्रिएशन सेन्ट्रल' चिन्मय मिशन ट्रस्ट (मुख्यालय) का एक विभाग है, जो इस दिशा में नये-नये प्रयोग कर रहा हैं। इसने 'उपनिषद गंगा' नाम से 52 प्रसंगो का एक टी. वी. धारावाहिक बनाया है, जो उपनिषदों की शिक्षा पर आधारित है। इसका प्रसारण दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल से हुआ था।

'उपनिषद गंगा' की संकल्पना स्वामी तेजोमयानन्द जी ने की थी। इसका उद्देश्य उपनिषदों का संदेश उपकथाओं के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना था। इस धारावाहिक का लेखन व निर्देशन डॉ. चन्दप्रकाश द्विवेदी ने किया, जिन्होंने **'चाणक्य'** नामक प्रसिद्ध धारावाहिक बनाया था।

'उपनिषद गंगा' धारावाहिक अब तीन डीवीडी के सेट में उपलब्ध है, ताकि लोग वास्तव में इससे लाभान्वित होते रहें। यह शोध, शिक्षण संस्थाओं व साधकों के लिए एक उपयोगी संग्रह है।

चिन्मय क्रिएशन की दूसरी भेंट 'आन-ए-क्वेस्ट' फीचर फिल्म है। यह फिल्म स्वामी चिन्मयानन्द जी की जीवन यात्रा व उनकी शिक्षा पर प्रकाश डालती है। स्वामी जी के जन्म प्रति श्रद्धा व कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। इसका प्रदर्शन दिसम्बर 2014 में हुआ।

इस फिल्म में वेदान्त के महान अध्येता और प्रचारक स्वामी चिन्मयानन्द जी के जीवन के सभी पक्षों का बड़ा सुन्दर चित्रण हैं। उनकों शिक्षा व कार्य से परिचित होकर दर्शक भाव-विभोर हो जाता है। इसकी पटकथा स्वामी मित्रानन्द व युवा वीर सदस्यों ने मिलकर तैयार की है, जिसके निर्देशक आर.एस. प्रसन्ना जी हैं। देश और विदेश सभी जगह यह फिल्म लोकप्रिय हुई है।

चिन्मय क्रिएशन का यह प्रयास सदियों तक याद किया जायेगा। वेदान्त गुरु के जीवन, उनकी शिक्षा और उनके कार्य का यह प्रभावशाली चित्रण दर्शकों के मानस पटल पर अमिट छाप डालने वाला है।

## 4.11 चिन्मय मिशन की गतिविधियाँ

### 4.11.1 केन्द्र व आश्रम

चिन्मय मिशन का मुख्य आधार पूरे भारत व विदेशों में फैले स्थानीय केन्द्र है। यहाँ चिन्मय मिशन से जुड़े सदस्य स्वाध्याय, प्रवचन व धार्मिक अनुष्ठान करने एकत्र होते हैं। इन केन्द्रों में अलग-अलग आयु वर्ग के लागों के लिए नियमित वेदान्त कक्षाएँ होती हैं। सभी सदस्य अपनी-अपनी रूचि व सामर्थ्य के अनुरूप केन्द्र की गतिविधियों में सहभाग व सहयोग करते हैं। इनके द्वारा ही विश्वस्तरीय योजनाओ जैसे 'आन ऐ क्वेस्ट' फिल्म का प्रदर्शन, 'गीता गायन प्रतियोगिता' आदि का कार्यान्वयन होता है। प्रत्येक केन्द्र किसी आचार्य या फिर वरिष्ठ साधक के मार्गदर्शन में सदस्यों की एक समिति चलाती है।

शहरों व बड़े नगरों में केन्द्र होने के अतिरित्त कुछ शान्त व सुरम्य स्थानों में चिन्मय मिशन के आश्रम भी हैं। ये आश्रम साधकों को भौतिक जगत की आप-धापी से दूर शान्त व पवित्र वातारण में नियमित सत्संग व आत्म-चिन्तन का अवसर देते हैं। इनमें समय-समय पर आवासीय, आध्यात्मिक शिविर आयोजित किये जाते हैं। पूरे दिन कुछ वेदान्त शास्त्रों का गहन अध्ययन, ध्यान, सामूहिक चर्चा व भजन आदि का कार्यक्रम होने से साधक अपने अन्दर नयी ऊर्जा का अनुभव करते हैं। यहाँ अल्पकालीन वेदान्त कोर्स भी आयोजित होते हैं।

### 4.11.2 शिशु विहार

**'शिशु विहार'** चिन्मय मिशन की नई गतिविधि है, जिसमें जन्म से 4 वर्ष तक के छोटे शिशुओं को बड़े रोचक और अभिनव ढंग से शिक्षा दी जाती है। शिशुकाल बहुत नाजुक समय होता है। इसमें वातावरण तथा आसपास उपस्थित व्यक्तियों के व्यवहार का बड़ा गहरा प्रभाव शिशु पर पड़ता है। इसलिए शिशु के साथ माता-पिता भी शिशु विहार में सम्मिलित होते हैं। घर का वातावरण बाहरी शोर गुल से मुक्त शान्त व पवित्र रखा जाता है। बच्चों को खेलने या करने के लिए बहुत सारे खिलौने, आकृतियाँ, रंग-बिरंगें टुकड़े, पोस्टर्स, चार्टस् व क्राफ्ट का सामान उपलब्ध रहता है। 'शिशु विहार' की संकल्पना व प्रारम्भ का श्रेय हाँगकाँग के चिन्मय मिशन केन्द्र को जाता है।

### 4.11.3 बाल विहार

स्वामी चिन्मयानन्द जी कहते थे कि -''बच्चे कोई पात्र नहीं हैं, जिसमें कुछ भरना है। वे तो दीपक हैं, जिन्हें प्रज्ज्वलित करना है।'' इसी भावना के अनुरूप चिन्मय मिशन में 4 से 12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए **'बाल विहार'** आयोजित होते हैं।

चिन्मय मिशन के वर्तमान प्रमुख स्वामी तेजोमयानन्द जी के अनुसार- ''बाल विहार का उद्देश्य खेल-खेल में जीवन मूल्य सिखाना, उन्हें चन्द्रमा की तरह चमकदार व शीतल बनाना तथा सूर्य की तरह तेजस्वी बनाना है।''

बाल विहार कक्षाएँ साप्ताहिक 60 से 90 मिनट की होती हैं। इनमें बच्चों के अन्दर उच्च जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का परोक्ष व अपरोक्ष प्रयास किया जाता है। बाल विहार सेवक खेल-खेल में, कभी अभिनय करके तो कभी तरह-तरह की भंगीमाएँ बना कर बच्चों का ध्यान आकृष्ट करते हैं और सहज ही उनके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास में योगदान करते हैं।

### 4.11.4 चिन्मय युवा केन्द्र

स्वामी चिन्मयानन्द जी कहते थे कि- ''जब युवा पीढ़ी जागेगी, तो इसका प्रवाह इतना तीव्र होगा कि हर हृदय नई ऊर्जा व सद्भाव से भर जायेगा।'' इसी कार्य को मूर्त रूप देने में **'चिन्मय युवा केन्द्र'** प्रयत्नशील है। यह

चिन्मय मिशन की युवा शाखा है, जो विश्वस्तर पर कार्य कर रही है। इसमें 13 से 28 वर्ष के युवा सम्मिलित होते हैं।

सन् 2003 में चिन्मय युवा केन्द्र ने युवा-वीर कार्यक्रम प्रारम्भ किया। यह युवाओं को ज्ञान व कर्म की शिक्षा देने वाला अनूठा आवासीय कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य वाक्य-''सीखो, उसे करो और विकास करो।'' युवा वीर प्रशिक्षण के बाद एक वर्ष तक किसी चिन्मय मिशन सेन्टर में रहकर-रहकर देश सेवा का कार्य करते हैं।

### 4.11.5 चिन्मय सेतुकारी

चिन्मय वर्ल्ड वर्कर्स् सम्मेलन जो दिसम्बर 2012 में आयोजित हुआ था, उसी में इस नयी शाखा का शुभारम्भ हुआ। इसमें 21 से 40 आयु वर्ग के व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। इसके ज्यादातर सदस्य युवा केन्द्र के ही सदस्य रहे होते हैं।

सेतुकारी गतिविधियों में स्वाध्याय मण्डल, ज्ञान-यज्ञ आयोजन, आध्यात्मिक शिविर, पूजा-पाठ, अर्चना-वन्दना, केन्द्र की प्रशासनिक व्यवस्था आदि सम्मिलित हैं। इनमें सभी सदस्य सक्रिय रूप से सहयोग करते हैं।

### 4.11.6 चिन्मय स्वाध्याय मण्डल

ज्ञान यज्ञ में स्वामी चिन्मयानन्द जी के प्रवचनों से उत्साहित होकर जिज्ञासु साधक नियमित शास्त्र अध्ययन की आवश्यकता अनुभव करते थे। सतत ज्ञानार्जन की इस पिपासा से ही '**स्वाध्याय मण्डल**' प्रारम्भ हुआ। इसमें 90 मिनट की कक्षा होती हैं, जिसमें शास्त्र अध्ययन व उस पर विचार विमर्श होता है। सामूहिक चर्चा से शास्त्रों में निहित ज्ञान को आत्मसात् करने में सरलता होती हैं। साधक अपने-अपने मत व व्यक्तिगत साधना के अनुभव आपस में बाँटते हैं, जो लाभदायक होता हैं। चिन्मय मिशन के जाग्रति अभियान को देश के कोने-कोने तथा विदेश में फैलाने का श्रेय 'स्वाध्याय मण्डल' को जाता है।

## 4.11.7 देवी ग्रुप

''जब माँ आध्यत्मिक होती है, तो पूरे घर का वातावरण बदल जाता है। ऐसे परिवार को फिर किसी स्वामी को सुनने की आवश्यकता नहीं। यदि माताएँ बदल जाये तो परिवेश स्वयं में बदल जायेगा।''

"माँ सबसे बड़ी गुरू व प्रेरणा होती है।" **स्वामी चिन्मयानन्द**

केवल महिलाओं का चिन्मय स्वध्याय मण्डल सर्वप्रथम चेन्नई में नवम्बर 1948 में प्रारम्भ हुआ था। महिला स्वाध्याय मण्डल का नाम ही 'देवी ग्रुप' है। इसकी रूप-रेखा व पाठयक्रम चिन्मय स्वाध्याय मण्डल जैसा ही होता है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है, कि शास्त्र अध्ययन, चर्चा, शंका-समाधान व आधात्मिक साधना के अतिरिक्त अन्य बातें न हों।

### 4.11.8 वानप्रस्थ संस्थान

**'वानप्रस्थ संस्थान'** का उद्देश्य वाक्य है-''आधात्मिक जीवन के द्वारा उपयोग वृद्धावस्था।'' सेन्ट्रल चिन्मय वानप्रस्थ संस्थान वयोवृद्ध लोगों को यह सिखाने का प्रयास करता है कि कैसे स्वस्थ, प्रसन्न एवं आध्यत्मिक मूल्यों के अनुरूप रहकर उपयोगी व सार्थक जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

चिन्मय मिशन वरिष्ठ नागरिकों की सेवा बडे अनूठे ढंग से करता है। इसने पूरे भारत में 8 पितामह सदन बनाये हैं।

### 4.11.9 चिन्मय विभूति

यह आश्रम पुणे-मुम्बई के बीच कोलवान गाँव में स्थित है। चिन्मय विभूति वास्तव में गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द जी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। 62 एकड़ में फैला यह आश्रम चारों तरफ मनोहारी सह्याद्री पर्वत मालाओं से घिरा अति सुन्दर परिक्षेत्र है। सच पूछो तो चिन्मय विभूति चिन्मय दृष्टि का मूर्तमान रूप है।

इसका विशेष आकर्षण 'चिन्मय जीवन दर्शन' है, जिसमें स्वामी जी के जीवन उनकी शिक्षा, उनकी दृष्टि व उनके कार्य की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की है। इसमें सुन्दर चित्रों, मूर्तियों, छायाचित्रों व उद्धरणों का बोधगम्य सम्मिश्रण है, जिसे अडियो-वीडियो तथा मल्टी-मीडिया तकनीकी से प्रदर्शित किया गया। यह स्मारक गुरुदेव के चरणों में अनुपन श्रद्धाँजलि है।

### 4.11.8 चिन्मय आर्गेनाइजेशन फार रूरल डेवेलपमेन्ट

"तुम्हारे पास जो कुछ भी है उससे प्राणी मात्र की हर समय हर जगह सेवा करो। यही कार्य है अन्यथा श्रम मात्र।"

**स्वामी चिन्मयानन्द**

चिन्मय आर्गेनाइजेशन फार डेवेलपमेन्ट चिन्मय मिशन की एक शाखा है, जो समाज सेवा के लिए समर्पित है। यह एक ट्रस्ट है, जो एन.जी.ओ. के रूप में कार्यरत है। इसमें उड़ीसा, तामिलनाडु, कृषि विकास, रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण, ग्रामोद्योग ,उत्पादन व विपणन के द्वारा बहुत सार्थक सेवा कार्य हो रहा है। कॉर्ड की गतिविधियों में माइक्रो बैंकिंग, महिला एवं युवा मण्डल, परामर्श सेवा, स्वास्थ्य शिविर, साक्षरता, विधिक सहायता जैसे कार्य सम्मिलित हैं।

### 4.11.9 चिन्मय मिशन हास्पिटल

चिन्मय मिशन हास्पिटल इंदिरा नगर बेंगलुरू में है। यहाँ करीब 100 विशेषण चिकित्सक अपनी सेवाये देते हैं। यहाँ श्रेष्ठ चिकित्सा उपलब्ध है। यह आई.एस.ओ. सर्टीफाइड हास्पिटल है। इसे कर्नाटक चिन्मय सेवा ट्रस्ट के संरक्षण में चलाया जाता है।

इस हस्पिटल में प्रतिमाह लगभग 1000 रोगियों की चिकित्सा ओ.पी.डी. के द्वारा निःशुल्क की जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ 19 प्रतिशत शय्या (बेड) असहाय व निर्धन रोगियों के लिए आरक्षित हैं, जिनमें रियायती दर पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। यहाँ वरिष्ठ नागरिकों को भी 20 प्रतिशत छूट दी जाती है।

# पंचम अध्याय

# शिक्षा अभियान

## 5.1 चिन्मय शिक्षा अभियान

20 मई सन् 1965 को केरल के कोलोन गोड स्थान पर 'चिन्मय शिक्षा अभियान' की शुरुआत हुई थी। आज यह बृहद रूप में पूरे देश व विदेश में फैल चुका है। इसके अन्तर्गत लगभग 88 स्कूल व कालेज, एक चिन्मय अन्तर्राष्ट्रीय रेसिडेंशियल स्कूल सी.आई.आर.एस. और एक चिन्मय विद्यालय त्रिनिडाड (वेस्टइंडीज में) है। सभी शिक्षा संस्थाओं का परिचालन सी.सी.एम.टी. एजुकेशनल सेल (CCMTEC) द्वारा होता है। इसका मुख्यालय चिन्मय गार्डेन्स, कोयम्बटूर में है। अब तक लगभग 10 लाख विद्यार्थी इन शिक्षण संस्थाओं से निकल चुके हैं। 'चिन्मय शिक्षा अभियान' की सफलता का मुख्य श्रेय 'चिन्मय दृष्टि कार्यक्रम' को जाता है। इसका ध्येय है-

"शिक्षा को आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण दृष्टि विद्यार्थी को देना। संकुचित दृष्टि विभाजित है, व्यापक दृष्टि विस्तारक और पूर्ण दृष्टि सबको अपने में समा लेती है।"

**स्वामी विवेकानन्द**

वास्तव में आज 'चिन्मय शिक्षा अभियान' विस्तृत रूप में पूरे देश व विदेश में भी फैल चुका है। इसके अन्तर्गत लगभग 'चिन्मय दृष्टि कार्यक्रम' पूर्ण दृष्टि पर आधारित है। यह 1916 में कार्यान्वित हुआ। इसमें भारतीय संस्कृति, वेदान्त दर्शन और शैक्षणिक पाठ्यक्रम को समावेशित कर बोधगम्य शिक्षा प्रणाली विकसित की गयी है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में जीवन की समस्याओं व चुनौतियों का सकारात्मक भाव से सामना करने की क्षमता विकसित करना तथा सफल जीवन की कला सिखाना है। यह विद्यार्थी प्राणी मात्र के प्रति करुणा व दया से भरकर समाज की तरह - तरह से सेवा करते हैं। चिन्मय दृष्टि कार्यक्रम सी.वी.पी. के कार्यान्वयन से चिन्मय शिक्षण संस्थाओं की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। आज यह संस्थान शिक्षण जगत में विशेष स्थान रखते हैं। इसमें विद्यार्थी के अतिरिक्त माता-पिता, शिक्षक व प्रबन्ध समिति की भूमिका पर भी अधिक महत्व दिया गया है। इसमें विद्यार्थी के विकास हेतु चार मुख्य बिन्दुओं को आधार बनाया गया है –

(1) सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास)

(2) भारतीय संस्कृति

(3) देशभक्ति   तथा

(4) विश्व बन्धुत्व।

## 5.2 शिक्षा पर पूज्य गुरुदेव

शिक्षा में पूज्य गुरुदेव सिर्फ बच्चों का निवेश ना करें। बच्चे में भी निवेश करें।

- इन्वेस्टमेन्ट से आन्तरिक विपन्नता और स्थायी समृद्धि सुनिश्चित होती है।
- सच्ची शिक्षा बच्चे में निवेश के साथ पूरक पर निवेश है।
- बच्चों के लिए बर्तन नहीं है, लेकिन दीप जलाए जाने हैं।
- शिक्षा ना केवल सूचना का आधार है, बल्कि परिवर्तन का प्रकाश भी है।
- किसी की आजीविका अर्जित करना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। समझदार पुरुष चौतरफा  शिक्षा चाहते हैं।
- आधुनिक समय में शिक्षा मुख्य रूप से रोजगार उन्मुख होनी चाहिए, जबकि सांसारिक दृष्टि से अकेले स्मार्टनेस को महत्व दिया जाता है।
- यह शिक्षा वास्तव में फलदायी और मात्र एक श्रम है, जो छात्रों में श्रेष्ठ गुणों को बनाए रखता है।
- विश्वविद्यालय की डिग्रियों से लैस युवा भटकते नजर आते हैं। वे इधर-उधर रोजगार मांग रहे हैं।
- उनके पास साहस, दक्षता, स्वतन्त्रता जैसे गुणों की कमी है। आत्मनिर्भरता और दूरदर्शिता उनके भविष्य को बचाने के लिए आवश्यक है।

जीवन की दृष्टि और सेवा की भावना के बिना शिक्षा अधूरी है, जैसे शून्य वह कार्य है, जो ईश्वर को समर्पित नहीं है।

## 5.3 उत्पत्ति ( चिन्मय शिक्षा आन्दोलन की उत्पत्ति)

'चिन्मय शिक्षा आन्दोलन' समाज में चिन्मय मिशन के सबसे बड़े महत्वपूर्ण योगदानों में से एक है। इसमें 77 विद्यालय, आठ महाविद्यालय, एक हरिहर विद्यालय और एक अन्तर्राष्ट्रीय आवासीय विद्यालय शामिल है। ये संस्थाएं सी.सी.एम.टी. शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा संचालित हैं और 'चिन्मय विजन प्रोग्राम' की नींव पर बने हैं। एक सन्यासी को एक शिक्षा स्नातक आन्दोलन क्यों शुरू करना चाहिए? यद्धपि पूज्य गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द एक दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे जानते थे कि बच्चे हमारी पीढ़ी के क्रीम हैं, शासक हैं और कल के निर्माता हैं। उन पर हमारे राष्ट्र का भविष्य निर्भर है। उन्होंने कहा- "मुझे यकीन है कि चिन्मय शिक्षा आन्दोलन पुरुषों और महिलाओं की नई पीढ़ी को ढालने और आगे बढ़ाने के लिए एक आध्यात्मिक कार्यशाला के रूप में काम करेगा, जो महान नैतिक कद और नैतिक सुन्दरता को विकसित करेगा। भारत के भविष्य के लिए इस मजबूत नींव की शुरुआत 1967 में केरल के कोलेन गोड में हुई थी। तब से कई दीपक जलाए गए हैं और कई दिलों को जलाया गया है। लगभग 40 वर्षों में एक लाख से अधिक छात्रों ने चिन्मय शैक्षणिक संस्थानों से स्नातक किया है। वर्तमान में वह 50,000 से अधिक छात्रों को पढ़ा रहे हैं। वह 3500 से अधिक संकायो को समर्पित टीम द्वारा निर्देशित है और लगभग 1000 प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा समर्पित हैं। हर साल 10000 से अधिक बच्चे संस्थानों में शामिल होते हैं। इस प्रकार 'चिन्मय शैक्षिक आन्दोलन' का यह विशाल नेटवर्क वैश्विक रुप से चिन्मय परिवार और बड़े पैमाने पर समाज का पोषण करता है। चिन्मय शैक्षणिक संस्थान विश्वविद्यालयों और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थाओं से सम्बद्ध है। केन्द्रीय (सी.बी.एस.ई., आई.सी.एस. आदि) या शिक्षा के राज्य बोर्ड उच्च गुणवत्ता की शिक्षा की गारण्टी उनके पास अप टू डेट उपकरणों के साथ उत्कृष्ट बुनियादी ढांचा है, जो प्रभावी शिक्षण को सक्षम बनाता है। अलग-अलग क्षेत्रों के स्कूल स्थानीय लोगों की जरूरतों को पूरा करते हैं। इन संस्थानों का नेतृत्व प्रेरित प्रधानाध्यापक, समर्पित शिक्षक, सहायक प्रबंधक और सहकारी अभिभावक करते हैं। पाठ्यक्रम और अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियां सीखने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है। कहने की जरूरत नहीं है कि यह कोलकता संस्थान विभिन्न क्षेत्रों में टॉपर पैदा करते हैं।

**"चिन्मय विद्यालय वास्तव में एक अन्तर वाले विद्यालय है।"**

## 5.3 **अभिप्राय और उद्ददेश्य**

बच्चों को एक मूल आधारित और समग्र शिक्षा प्रदान करना, जो भारतीय संस्कृति के ज्ञान से समृद्ध, व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पहलुओं के समेकित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है, एक भावना देशभक्ति और एक सार्वभौमिकता को दर्शाता है।

- बच्चों को नैतिक शक्ति के युवा पुरुषों और महिलाओं में ढ़ालना, जो एक मुस्कुराहट के साथ आम जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और अपने सकारात्मक योगदान से दुनिया में बदलाव ला सकते हैं।
- एक व्यावहारिक न्याय पूर्ण देने के लिए शैक्षणिक संयोजन।
- उत्कृष्टता, पाठयेतर खोज।
- चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास।

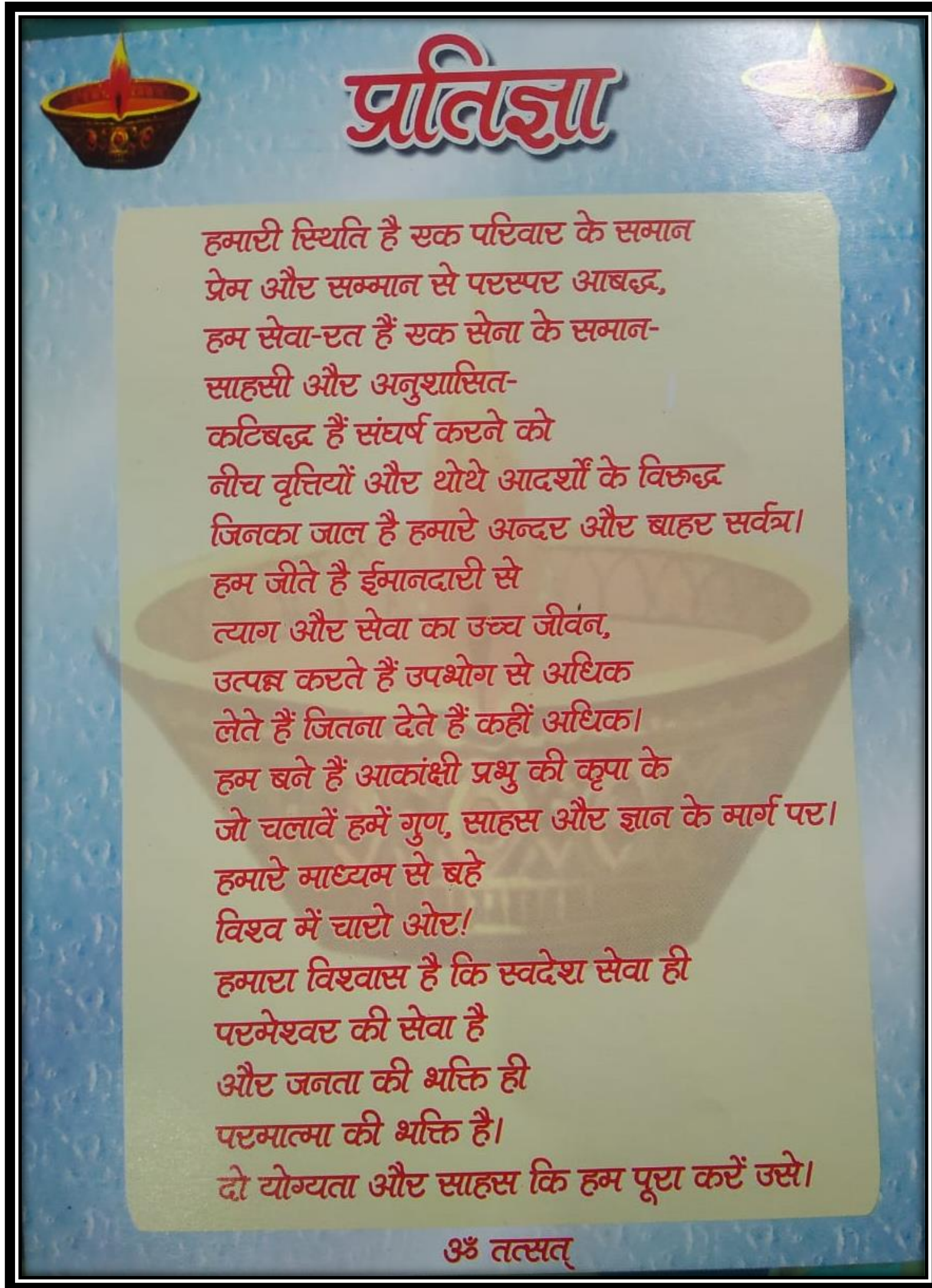
## 5.4 **CCMT शिक्षा से आदर्श वाक्य**

**"विद्या फल स्यात असतो निवृत्तिः।"**

सच्चा ज्ञान हमारे जीवन में जो कुछ भी झूठ है, उसे दूर करता है। यह हमारी अज्ञानता गलत धारणाओं और गलत दृष्टिकोण को हटाता है।

गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द जी ने चिन्मय विद्यालय को आदर्शवाद **"मुस्कुराते रहो"** के साथ आशीर्वाद दिया। चिन्मय विद्यालय बच्चों को एक मुस्कान के साथ जीवन का सामना करने में सक्षम बनाने के लिए एक आन्तरिक जीवन के साथ तैयार करता है। चिन्मय परिवार एक हरिओम के साथ सभी को बधाई देता है, जो एक-दूसरे से मिलने में विनम्रता, सम्मान, प्रेम और आनन्द को समर्पित करता है।

## 5.6 चिन्मय मिशन और विद्यालय की प्रतिज्ञा



## 5.7 चिन्मय विद्यालय का गीत

भारत मां के लाल हम, एक राग गायेंगे,

तन अनेक प्राण एक, भाव एक गाएंगे

चिन्मया विद्यालया लायेगा नवीनता

चिन्मया विद्यालय लायेगा एकता

कर्म धर्म प्रेम की ज्योति को जलाएंगे

विनम्रता मनुष्यता सहिष्णुता सिखायेंगे।

रूढ़ि रीति- नीति और मूढ़ता मिटायेंगे

सुमधुर स्वर्ग सी सभ्यता बनायेंगे ॥ चिन्मया....

भक्ति ज्ञान श्रद्धा के महत्त्व को बतायेंगे,

विद्युत गति से हम परिवर्तन लायेंगे।

सर्वक्षेम के स्वर्ण बीज को हम बोयेंगे,

वसुधैव कुटुंबकम की भावना फैलायेंगे ॥

'मुस्कुराते रहो सदा' छंद को हम गाएंगे,

भारतीय संस्कृति को खूब हम सजायेंगे ॥ चिन्मया...

## 5.8 चिन्मय विद्यालय का ध्वज




Chinmaya Vidyalaya Flag



- पीला रंग एक सकारात्मक दृष्टिकोण या जीवन के दृष्टिकोण को दर्शाता है।
- ज्ञान मुद्रा जीवन और उसके उद्देश्य के ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है।
- तिरंगा हमारे देश और उसकी संस्कृति के लिए प्यार और गर्व का प्रतीक है।
- चिन्मय विद्या विश्व सार्वभौमिक दृष्टिकोण के लिए खड़ा है।
- विद्यालय का आदर्शवाद "मुस्कुराते रहो" हमें सभी चुनौतियों का सामना करने पर मुस्कुराते रहने का संदेश देता है।
- ओम चिन्मय विद्यालय ध्वज में उनके हस्ताक्षर।

## 5.9 चिन्मय दृष्टिकोण कार्यक्रम

चिन्मय दृष्टि कार्यक्रम वह है, जो चिन्मय शिक्षा संस्थाओं को एक अन्तर के साथ स्कूल बनाता है। यह गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द के शिक्षा के दृष्टिकोण को समेटता है। उनके माध्यम से इस दृष्टिकोण का प्रकाश समाज में फैलता है।

**यथा दृष्टि तथ्य सृष्टि** के रूप में दुनिया हमें दिखायी देती है। समन्वित विकास यदि मनुष्य के दृश्य के रूप में दुनिया हमें दिखायी देती है, जहाँ मनुष्य परेशान है, दुनिया भी उसे भारी लगती है, यही दृष्टि व्यापक और प्रेम से भरी है, तो यह भी उसकी दुनिया है। पूज्य गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द द्वारा विशेष शिक्षा के दर्शन को सुनिश्चित करने के लिए दृष्टिकोण कार्यक्रम शुरू किये गये थे, जो कि हर बढ़ते बच्चे के दिल में उसके लिए सबसे अच्छा है। ये दृष्टि कार्यक्रम स्कूलों के लिए एक व्यापक और शैक्षिक कार्यक्रम हैं, जो हमारी संस्कृति और शिक्षा के दर्शन में सबसे को एकीकृत करते हैं, इनका उद्देश्य बच्चों को सकारात्मक और अच्छी तरीके से चुनौतियों का सामना करने और समाज में दिल से योगदान करने में मदद करने के लिए जीवन की सच्ची दृश्य देना है। बच्चा इस कार्यक्रम का केंद्र बिंदु है। कार्यक्रम भी स्कूल प्रबन्ध, शिक्षकों और माता-पिता उनके माध्यम से इस दृष्टि का प्रकाश बड़े पैमाने पर समाज, देश और दुनिया में फैलता जा रहा है। **चिन्मय दृष्टिकोण कार्यक्रम** की पहचान चार प्रमुख के तहत की जा सकती है। समय की विकास का उद्देश्य शारीरिक रूप से बच्चे के समग्र प्रदर्शन करने, उसके व्यक्तित्व को विकसित करने तथा उसके मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्तर के विकास करने से है।

### शरीरिक विकास

इस विकास से तात्पर्य है बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और समुचित विकास से उनके समग्र कल्याण की अनुकूलतम अभिव्यक्त होती है। इसमें शारीरिक स्वास्थ्य, पोषण स्वच्छता मूल्यांकन, बीमारियों की रोकथाम और उनके विकास शामिल हैं।

### मानसिक विकास

इसका उद्देश्य बच्चे को भावात्मक रूप से सन्तुलित व्यक्ति बनाना है। इससे उसे स्वयं और दुनिया के साथ सद्भाव से रहने में मदद मिलती है। इसमें भावात्मक विस्तार, भावनाओं को संभालना, रिश्तो को संभालना, लिंग

विशिष्ट शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य मूल्यांकन और परामर्श शामिल है।

## बौद्धिक विकास

मनुष्य में आसीम बौद्धिक क्षमता होती है। इस शिविर के तहत सी.बी.पी. का उद्देश्य बच्चे को उसकी अंतर्निहित बौद्धिक क्षमताओं को प्रकट करने और मौजूदा लोगों को बढ़ाने में मदद करना है। इसमें बौद्धिक के किड्लिंग, स्वतन्त्र सोच, प्रबन्धन कौशल शामिल हैं। सौंदर्य शास्त्र, बौद्धिक मूल्यांकन समन्वित विकास और मार्गदर्शन भी शामिल हैं

## भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति से आशय केवल कला, रूपों, त्योहारों और अनुष्ठानों से नहीं है, अपितु इन सब से अधिक है सांस्कृतिक विविधता, उसकी सोच व जीवन जीने के तौर-तरीके, जो उसे विशिष्ट बनाते हैं। बच्चों को हमारी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं, संस्कृति जागरूकता, भारत की विशाल साक्षरता, कलात्मक व वैज्ञानिक विरासत की प्रशंसा, रीति-रिवाजों व परम्पराओं की व्याख्या, विभिन्न परियोजनाओं आदि के माध्यम से व्यापक प्रेरणा दी जाती है। फोकस के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में नागरिकता में शिक्षा शामिल है। नागरिक चेतना भारतीय होने में गर्व को बढ़ावा देना और विविधता में एकता जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सरोकार हैं। इस उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना है, जो राष्ट्र की सेवा करने में वास्तविक गर्व करते हैं।

## यूनिवर्सल आउटलुक

यह सार भावी मुद्दों की सराहना, संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। क्रिकेट के ना समझ स्तम्भ के वर्षों के बाद दुनिया को जीवन के सार्वभौमिक दृष्टिकोण बच्चे को खुद को खुद दुनिया के एक जिम्मेदार नागरिक रूप में देखने में मदद करता है। दुनिया के मुद्दों सहित निर्माण (पर्यावरण शिक्षा और विज्ञान धर्म के बीच संश्लेषण) के साथ सद्भाव में रहते हैं और साथ ही मेट्रो का कसम के आंतरिक भाग होने के बारे में जानते हैं जिनमें दृष्टि कार्यक्रम इस ज्ञान पूर्ण प्रयास में शिक्षकों अभिभावकों और वनों की भूमिका को बढ़ाता है। शिक्षक को सीबीपी मैनुअल सेमिनार और समाचार पत्र की मदद से इस कार्यक्रम में निर्देशित किया जाता है शिक्षक मूल्यांकन तराजू उसे आत्मा और

प्रभावशीलता का आकलन करने में सक्षम बनाते हैं। स्कूल प्रबंधन अपनी सक्रिय भागीदारी के माध्यम से इस कार्यक्रम में काफी मदद करता है जिसका उद्देश्य एक बच्चे के विकास के अन्य पहलुओं की कीमत पर चौतरफा मानव निर्माण शिक्षा और ना केवल 6 दिनों से इस प्रकार सिग्मा दृष्टि कार्यक्रम अकादमी उत्कृष्टा के पूरक बच्चों के चरित्र मॉडलिंग और व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण सफलता देता है जो कि सच्ची शिक्षा है सीबीपी एक गतिविधि नहीं है बल्कि एक भ्रष्ट वितरण कार्यक्रम है विद्यालय में सभी गतिविधियों के पीछे बहुत भावना यह एक मूल जोड़ी नहीं है लेकिन विद्यालय संस्कृति विभाग आधारित नहीं है बल्कि दृष्टिकोण आधारित है कि बीपी मूल शिक्षा और मूल्यों के आवंटित किया जाता है तब है जब कहानियों के माध्यम से मूल्यों को विश करने के लिए एक विशिष्ट समय आवंटित किया जाता है सभी विषयों के माध्यम से और विद्यालय के छात्रों के माध्यम से दिया जाता है

## सीबीपी उपलब्धियां

चिन्मय विजन कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत जून 1996 में हुई जब इसे चिन्मया विद्यालय में शुरू किया गया था सीआईएमटी शिक्षा प्रकोष्ठ ने इसके बाद संसाधन सामग्री सीबीपी मैनुअल एवं मूल शिक्षा संखला स्वयं सुधार रामा हाथ किताब रघुवर दास एबीपी न्यूज लेटर ऑडियो कैसेट सिद्ध गतिविधियां बुक आदि का आयोजन किया इस कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से मार्गदर्शन और कार्यान्वित करने में 2000 से अधिक स्कूलों और कालेजों के प्रतिनिधियों के लिए पेश किया गया है और ढाई सौ से अधिक शहरों के माध्यम से भारत के 20 राज्यों में चला चल गया इसने भारत के तटों को भी पार कर लिया। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड सीबीएसई ने अपने विंग के तहत 6000 से अधिक स्कूलों के साथ चीन में विद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों में से एक रूप में शिक्षकों के लिए अपने मूल शिक्षा पुस्तिका में दिखाया।

## 5.10 सीसीएमटी शिक्षा प्रकोष्ठ- चिन्मय

शिक्षा प्रकोष्ठ चिन्मय गार्डन कोयंबटूर से संचालित शिक्षा आंदोलन कार शासी निकाय है उस गुरुजी गुरुजी स्वामी तेजोमयानन्द इकाई के अध्यक्ष हैं जो चले क्या करता है मनीटर स्ट्रीमलाइन उन्नयन मानक और सभी चीन में

शिक्षा संस्थाओं के सम्मानीय और सुचारू रखरखाव और आगे के विकास को सुविधाजनक बनाता है यह कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है अध्यापकों का प्रबंधन पूरे संस्थाओं के आंदोलन के लिए व्यावहारिक यथार्थवादी और तरीके से इन योजनाओं का परिवार भावना बालों को बड़ा और मजबूत करने के लिए उदाहरण है अखिल भारतीय विचारों और संस्थानों के लिए आ गया था।

**5.10 चिन्मय शिक्षा सेल छात्रवृत्ति**

खाद्य अन्नाधानम मनुष्य को एक दिन के लिए संतुष्ट करता है, लेकिन मनुष्य को उसे विद्याधानम शिक्षित करके अपनी खुद की आई विंग बनाने के लिए उसे अपने और अपने आश्रितों को अपने जीवन भर का समर्थन करने में सक्षम बनाता है। सीसीएमटी शिक्षा प्रकोष्ठ ने चिन्मय विद्यालय के छात्रों के लिए चीन में शिक्षा प्रकोष्ठ छात्रवृत्ति का गठन किया है, जो अकादमी रूप से अच्छे है। लेकिन हमारे विद्यालय में अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता है छात्रवृत्ति को सेल और विद्यालय द्वारा साझा किया जाता है, जिसके द्वारा दोनों के सेवा करने के शानदार अवसर से पूरा किया जाता है। छात्रवृत्ति उत्तर दाताओं द्वारा आयोजित की जाती है वित्तीय सहायता में विद्यालय की फीस, वर्दी किताबें स्टेशनरी और छात्र परिवहन में शामिल है। एक साल के लिए छात्र विद्यालय में अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए बाद के वर्षों में अपनी पढ़ाई पूरी करने वस्तुओं की छाल दो जाई रखता है। उसी के लिए चुना जाता है चुना गया हो।

**5.11 चिन्मय शिक्षा आवार्ड**

चिन्मय दृष्टि पुरस्कार उन संस्थानों में दिए जाते हैं जो चीन में दृष्टि कार्यक्रम को लागू करते हैं। सीसीएमटी शिक्षा प्रकोष्ठ ने चीन में शिक्षा संस्थानों के ईमानदार प्रयासों को पहचानने के लिए चीन में शिक्षा पुरस्कार की स्थापना की है।

- चिन्मय  संस्थान में कार्यरत प्रबंधक, प्रिंसिपल, शिक्षक, छात्र को अपने अच्छे काम को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- उन्हें दूसरों के लिए आदर्श और मॉडल बनने के लिए प्रेरित करें।

चिन्मय संस्थान में दिए जाने वाले पुरस्कार निम्न है-

- **चिन्मय विजन अवॉर्ड**
- **सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार**
- **प्रबंधन पुरस्कार।**
- **छात्र पुरस्कार।**
- **चिन्मय गौरव पुरस्कार।**

## 5.12 चिन्मय विद्यालयों की उपलब्धियाँ

इन विद्यालयों की कुछ निम्न उपलब्धियां हैं-

### 5.12.1 शैक्षणिक उत्कृष्टता

- 1982: संजना सी. एस. - प्रथम स्थान कॉमर्स, कालीकट विश्वविद्यालय।
- 1991: रमेश कृष्ण- प्रथम स्थान सी वी एस ई कक्षा -10
- 1993: रिजवान अमीर -राष्ट्रीय प्रतिभा रिसर्च अवॉर्ड
- 2000: रोसिता इमाइली गोवीज- प्री - डिग्री रैंक होल्डर

### 5.12.2 खेल में उत्कृष्टता

1990: स्वपन सेवास्टैन -नेशनल रिकॉर्ड इन पेटाथालान।

2001: जानकी राव - रिप्रेजेंटेड इंडिया इन यूएसए -टेनिस

### 5.12.3 संस्कृति प्रदर्शन

1995: मंजू वारियार - कलातिलकम पुरस्कार

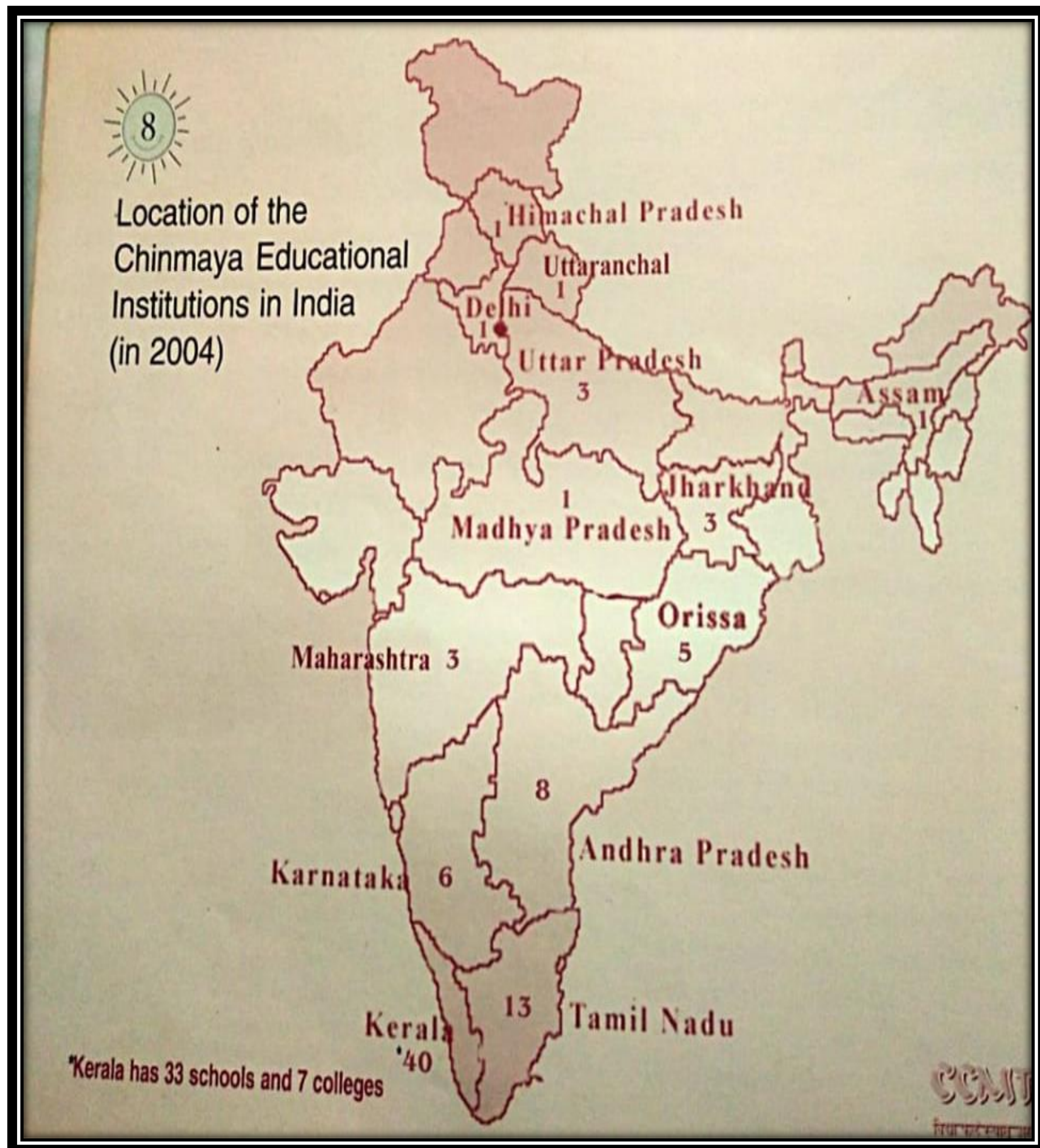
1998:चांदनी - प्रथम राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता।

## 5.13 चिन्मय विद्यालय एक विशिष्ट विद्यालय

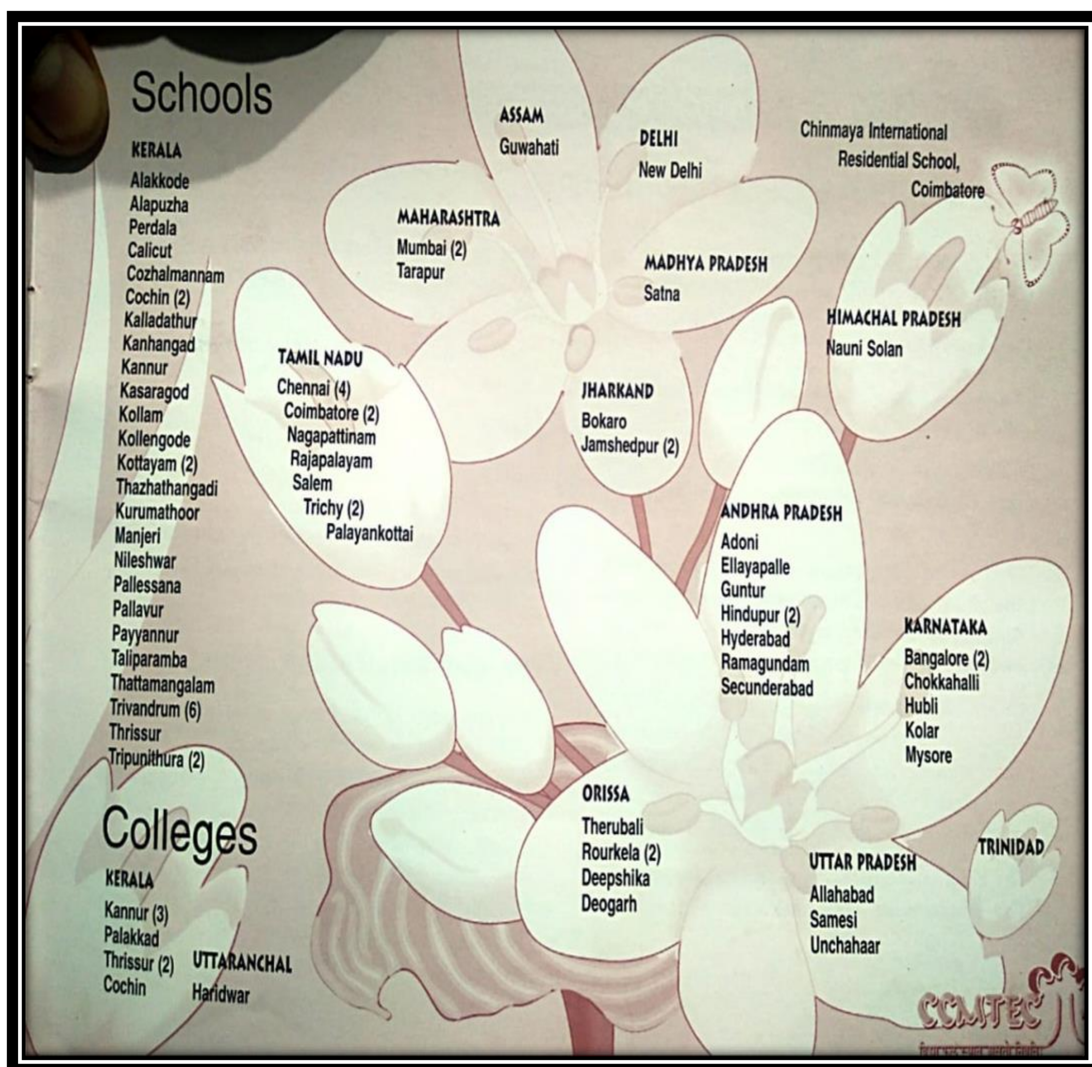
चिन्मय विद्यालय अंतर विद्यालय का अर्थ है स्वाद, स्वाद का मतलब चिन्मया विद्यालय में एक विशेष स्वाद है वह एक अंतर के साथ स्कूल है यह स्वाद है क्योंकि हम प्रबंधन प्रधानाचार्य बनाने का प्रयास करते हैं शिक्षा पर माता-पिता एक अंतर के साथ जो स्कूल और छात्रों के लिए एक अलग दृष्टिकोण और सहायक और वंदन के साथ बनाता है वह विकास संसाधनों के कुशल प्रबंधन के लिए रणनीतिक योजना प्रदान करता है और संपूर्ण दृष्टि का समर्थन करते हैं जो इसे अपने दृष्टि में एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

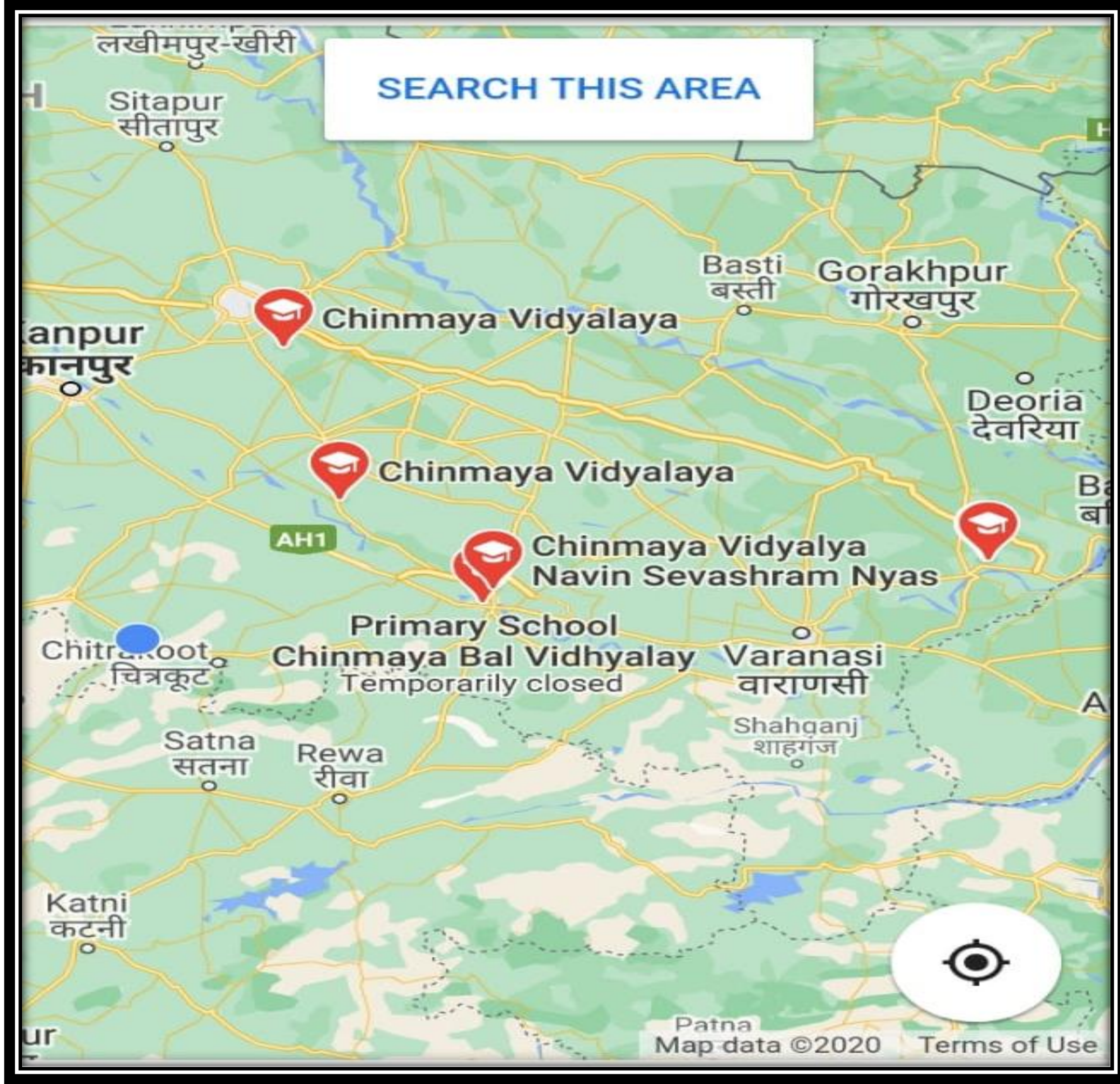
- केंद्रित प्रधानाचार्य विद्यालय की महान दृष्टि से प्रेरित होते हैं और बदले में (सीईओएस) को प्रेरणा दायक बनाते हैं जो स्कूलों को अधिक से अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाते हैं।
- समर्पित और कुशल शिक्षक इसके अलावा वह अच्छी तरह से योग होने के साथ-साथ ज्ञान शिक्षा में बच्चों से भी प्यार करते हैं और मूल्यों और संस्कृत को प्रभावी ढंग से प्रसारित करते हैं
- संवेदनशील और सहकारी माता-पिता हुए अपने बच्चों को प्यार दे एक बार और आज सुमित के साथ वारिस करते हैं। छात्र चिन्मय विद्यालय में ईमानदारी से एक अंतर के साथ छात्रों को बाहर लाने का प्रयास करता है जो ज्ञान के साथ संपन्न होते हैं सेवा की आत्मा (नानाम सेवा च कौशलमी  हमसे जुड़ें और हमें एक अंतर के साथ एक समाज बनाने में मदद करें) ।

### 5.14 भारत में प्रमुख चिन्मया मिशन के शैक्षिक संस्थान



## उत्तर प्रदेश के चिन्मय संस्थान






- चिन्मय विद्यालय गजियाबाद उत्तर प्रदेश
- चिन्मय विद्यालय लखनऊ उत्तर प्रदेश
- चिन्मय विद्यालय रायबरेली उत्तर प्रदेश
- चिन्मय विद्यालय नवीन सेवाश्रम प्रयागराज उत्तर प्रदेश

# षष्ट अध्याय

# चिन्मय विद्यालय नवीन सेवाश्रम न्यास: एक अवलोकन

## 6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विश्व के आध्यात्मिक इतिहास में स्वामी चिन्मयानन्द जी का स्थान अद्वितीय है। उनका जीवन धर्म और आध्यात्म की एक विस्तृत प्रयोगशाला थी। उनके जीवन में सेवा भाव एवं आध्यात्मिक अनुभूति का परम स्थान था। भारत में लोगों को आन्तरिक जीवन का महत्व समझाने वाले स्वामी चिन्मयानन्द जी ने 'चिन्मय मिशन' की स्थापना की। चिन्मय मिशन के द्वारा कई केन्द्र बनाये गये। उन केन्द्रों में चिन्मय विद्यालय न्यास प्रयागराज एक है।

## 6.2 चिन्मय विद्यालय की स्थापना

चिन्मय विद्यालय रसूलाबाद तेलियरगंज को वास्तव में चिन्मय विद्यालय नवीन सेवाश्रम न्यास के नाम से जाना जाता है, जिसकी स्थापना सन् 1986 में स्वामी चिन्मयानन्द जी ने किया था। स्वामी चिन्मयानन्द जी के स्थापना के बाद यहाँ के स्थानीय आचार्य स्वामी चैतन्यानन्द जी वर्तमान संचालक  के रूप में कार्य कर हैं। 34 वर्षों से संचालित यह विद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।  इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके निकले छात्र- छात्राएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर अपनी प्रतिभा एवं ज्ञान-कौशल से देश को आलोकिक व गौरवान्वित कर रहे हैं।

## 6.3 चिन्मय विद्यालय के उद्देश्य

चिन्मय विद्यालय बच्चों को एक मूल आधारित और समग्र शिक्षा प्रदान करते हैं, जो भारतीय संस्कृति ज्ञान से समृद्ध शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और व्यक्तित्व के सहज पहलुओं के समेकित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। नैतिक शक्ति वाले युवा पुरुषों, महिलाओं व बच्चों में जो मुस्कान के साथ आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना कर सके और अपने सकारात्मक योगदान से दुनिया में बदलाव ला सके, ऐसी शिक्षा दी जाती है। विद्यालय में चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व निर्माण, व्यावहारिक और विवेकपूर्ण संयोजन उत्कृष्टा का भी ज्ञान कराया जाता है। चिन्मय विद्यालय

केन्द्र में स्वरोजगार, जनसेवा, स्वास्थ्य सेवा व वृद्ध सेवा संचालित कर युवाओं को एक अच्छा नागरिक बनाने के लिये प्रेरित किया जाता है। साथ ही साथ युवाओं को प्रेरित करने के लिए, अच्छे कार्य करने के लिए समय-समय पर महापुरुषों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

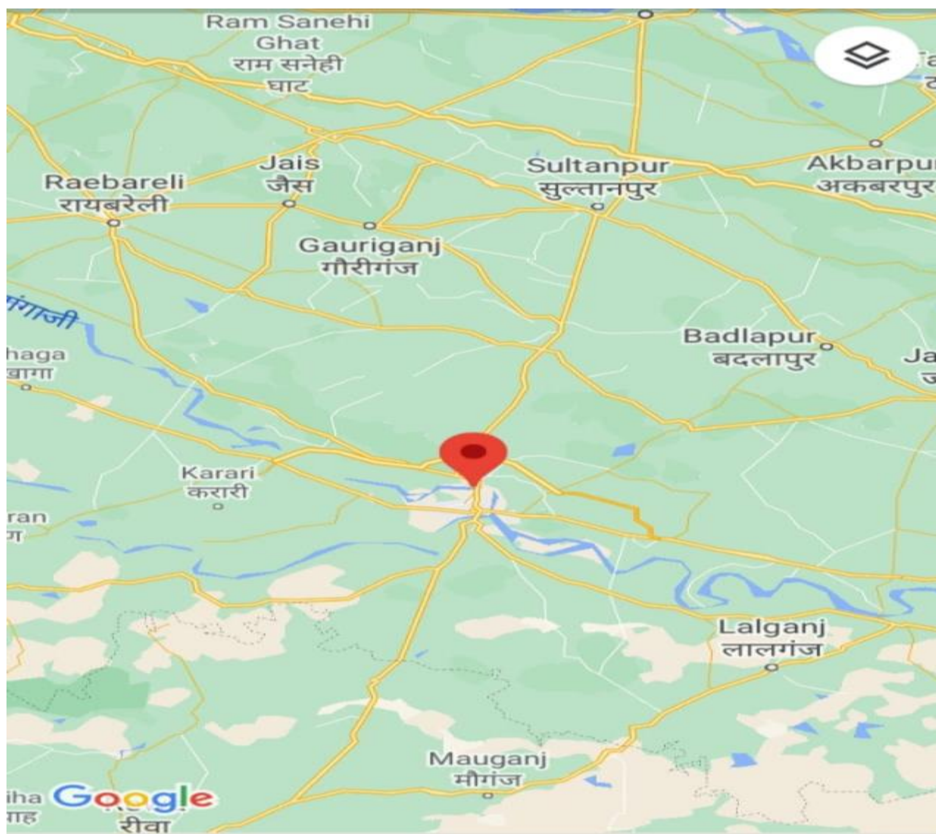
## 6.4 विद्यालय का प्रकार

स्कूल,कॉलेज या शैक्षणिक संस्थान।

## 6.5 चिन्मय विद्यालय की मान्यता

यह विद्यालय **यू.पी. बोर्ड इलाहाबाद** द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय है।

## 6.6 विद्यालय की अवस्थिति



## 6.7 विद्यायल का वातावरण

विद्यालय का वातावरण आश्रम पद्धति पर आधारित है। विद्यालय में एक पार्क है, जो पेड़-पौधों एवं पुष्पों से हरा भरा है और एक तालाब है, जिसके किनारे पुष्पों के छोटे-छोटे पौधे लगे हुए हैं, जो बहुत ही सुन्दर एवं मनमोहक दृश्य को प्रकट करता है।



चित्र सं0-6.7.1

## 6.8 विद्यालय की प्रबन्ध समिति

चिन्मय विद्यालय रसूलाबाद इलाहाबाद के प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों एवम् सदस्यों की वर्तमान सूची :

पदाधिकारी :

1. डा0 श्रीमती कृष्णा गुप्ता (अध्यक्ष)
2. श्री आनन्द अग्रवाल (प्रबन्धक)
3. श्री हरिशचन्द्र श्रीवास्तव (उपाध्यक्ष)
4. श्री एस0 एस0 राठी (उप प्रबन्धक)
5. श्री सन्तोष कुमार शुक्ल (कोषाध्यक्ष)

सदस्य :

1. परम् पूज्य स्वामी चैतन्यानन्द (एजुकेशनल सेल प्रतिनिधि)
2. श्री शिव स्वरूप अग्रवाल (ट्रस्ट प्रतिनिधि सदस्य)
3. श्री रमाकान्त उपाध्याय
4. श्री अरूण निगम
5. डा0 श्रीमती विभा मिश्रा
6. श्रीमती गौरी चट्टोपाध्याय
7. श्री सुशील कुमार मिश्र (प्रधानाचार्य)
8. श्रीमती रेखा वर्मा (अध्यापक प्रतिनिधि)
9. श्री अशोक कुमार पाण्डेय (अध्यापक प्रतिनिधि)

## 6.9 विद्यालय की वित्तीय स्थिति

प्रबन्ध समिति के द्वारा छात्रों से प्राप्त शुल्क से विद्यालय की वित्तीय व्यवस्था की जाती है।

## 6.10 विद्यालय के प्रधानाचार्य

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुशील कुमार मिश्र जी हैं, जो व्यक्तित्व के धनी एवं योग्य शिक्षण के साथ-साथ कुशल नेतृत्व करते भी हैं।




चित्र सं.- 6.10- विद्यालय के वर्तमान प्रधानाचार्य (वर्ष- 2020)

## 6.11 विद्यालय के शिक्षक

विद्यालय के शिक्षक/शिक्षिका एवम् शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री सुशील कुमार मिश्र | प्रधानाचार्य | एम.ए.बी.एड (अंग्रेजी) |
| 2. | श्रीमती रेखा वर्मा | सह प्रधानाचार्य | एम.ए.बी.एड (हिन्दी) |
| 3. | श्री अशोक कुमार पाण्डेय | सह अध्यापक | एम.ए.बी.एड (संस्कृत) |
| 4. | श्रीमती बिन्दू श्रीवास्तव | सह अध्यापिका | एम.ए.बी.एड (सा. विषय) |
| 5. | श्रीमती अनीता मिश्रा | सह अध्यापिका | एम.ए.बी.एड (अर्थशास्त्र) |
| 6. | श्री ऊषा श्रीवास्तव | सह अध्यापिका | एम.ए.बी.एड (हिन्दी) |
| 7. | श्रीमती अनसुइया | सह अध्यापिका | एम. ए. (बाम्बे आर्ट (कला) |
| 8. | श्री शिवशंकर विश्वकर्मा | सह अध्यापक | बी.ए. डिप्लोमा मैकेनिकल (गणित) |
| 9. | श्री कृष्ण कान्त शुक्ल | सह अध्यापक | एम.एस.सी. (गणित) |
| 10. | श्री बाल गोविन्द | सह अध्यापक | बी.एस.सी.बी.एड. (विज्ञान) |
| 11. | श्री सुनील कुमार उपाध्याय | सह अध्यापक | बी.ए. पी.जी.डी.सी.ए. (कम्प्यूटर) |
| 12. | सुश्री रेखा वर्मा | सह अध्यापक | एम.ए. को. पा. (कम्प्यूटर) |
| 13. | श्रीमती सीमा तिवारी | सह अध्यापक | बी.ए. (नर्सरी अध्यापिका) |
| 14. | श्री अरूण दुबे | सह अध्यापक | एम.ए.यू.जी.सी. (संस्कृत) |
| 15. | श्री इन्द्र पाल शर्मा | (लिपिक) | बी.ए. |
| 16. | श्री विनय कुमार यादव | (परिचारक) | |
| 17. | श्रीमती फूल कली | (आया) | |

56

## 6.12 विद्यालय भवन

विद्यालय में 13 कमरे, एक कम्प्यूटर कक्ष, प्रधानाचार्य कक्ष एवं एक हाल भी है, जिसमें सभी छात्रों को बैठाकर सेमिनार का आयोजन एवं प्रेरक कक्षाएं चल आ जाती हैं। विद्यालय में एक बड़ा-सा खेल का मैदान है, जिसमें प्रतिदिन 2:00 बजे से 3:00 बजे तक खो -खो, कबड्डी आदि खेलों का आयोजन कराया जाता है।

## 6.13 विद्यालय का पाठ्यक्रम

विद्यालय का पाठ्यक्रम यू.पी. बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप संचालित कराया जाता है।

## 6.14 पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं

विद्यालय में शिक्षण कार्य प्रोजेक्टर, एल.सी.डी., चार्ट, मॉडल, मैप आदि शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग कर किया जाता है।

## 6.15 विद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया

विद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया कक्षा अनुसार प्रवेश परीक्षा करा कर पूर्ण की जाती है।

## 6.16 विद्यालय की निर्धारित शुल्क

विद्यालय के प्रबन्ध समिति द्वारा शुल्क निर्धारित की गयी है। नर्सरी से कक्षा 8 तक ₹500 तथा कक्षा 9 व 10 में ₹700 प्रति माह के दर से शुल्क ली जाती है।

## 6.17 विद्यालय की दिनचर्या

विद्यालय प्रातःकाल 9:00 बजे से खुलता है, 9:15 में प्रार्थना होती है, 1:00 बजे मध्य अवकाश होता है और

3:00 बजे विद्यालय बंद हो जाता है।

## 6.18 विद्यार्थियों की वेशभूषा

विद्यालय में छात्रों के लिए ग्रे रंग का पैंट एवं आसमानी रंग की टी शर्ट तथा छात्राओं के लिए आसमानी रंग की शर्ट एवं ग्रे कलर की स्कर्ट वेषभूषा के रुप में निर्धारित की गयी है।

## 6.19 कम्प्यूटर शिक्षा

विद्यालय में एक कम्प्यूटर कक्ष है, जिसमें आधुनिक विषय में कम्प्यूटर शिक्षा को विद्यालय में कक्षा- 3 से अनिवार्य कर दिया गया है। इसी उद्देश्य से विद्यालय में एक कम्प्यूटर लैब की स्थापना हुई है, जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं को योग्य कम्प्यूटर शिक्षक द्वारा उपयोगी ज्ञान प्रदान किया जाता है।



## 6.20 सामाजिक सेवा कार्य

विद्यालय के छात्र-छात्राओं को समाजोपयोगी सेवा हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अंतर्गत मलिन बस्ती के जन समुदाय को मोहल्ले में साफ-सफाई रखने, सामूहिक श्रमदान करने का व्यावहारिक ज्ञान विद्यालय के छात्र-छात्राओं के माध्यम से कराया जाता है। धूम्रपान से होने वाली बीमारियों के प्रति सचेत रहने का कार्य भी विद्यालय के छात्र-छात्राओं के माध्यम से समाज में करने का प्रयास किया जा रहा है। समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं अन्धविश्वास तथा रूढ़िवादी मान्यताओं के विरुद्ध कार्य करने हेतु विद्यालय के छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया जाता है। वर्ष 2005-06 में कैंसर एड्स सोसाइटी को कैंसर रोगियों के इलाज हेतु आर्थिक सहयोग राशि ₹10000 विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा एकत्र करके दिया गया। छात्र-छात्राओं के इस योगदान पर कैंसर सोसायटी द्वारा बच्चों को पुरस्कृत किया गया एवं विद्यालय को एक शील्ड भी प्रदान की गई।

## 6.21 विद्यालय की उपलब्धियाँ

विद्यालय में लगभग 250 छात्र-छात्राएं 13 शिक्षकों की टीम द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिसके अंतर्गत विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति पर आधारित मूल्य पर शिक्षा प्रदान की जा रही है। हाईस्कूल स्तर के विद्यालय में गत वर्ष छात्र-छात्राओं में 30 छात्र-छात्राएं प्रथम श्रेणी में शेष सभी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। विद्यालय का कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 90% रहा है।

प्रदेश स्तरीय गांधी प्रश्न मंच प्रतियोगिता में वर्ष 2006 में विद्यालय के छात्र अनूप मिश्र ने पूरे प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त किया था, जिन्हें प्रदेश के महामहिम राज्यपाल द्वारा एक शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था।

## 6.22 पत्र-पत्रिकाएं

विद्यालय में प्रतिवर्ष '**चिन्मय आलोक**', उद्घोष पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है।




चित्र सं.-6.22.1

## 6.23 विद्यालय की गतिविधियाँ

### 6.23.1 विद्यालय में महोत्सव

भारतीय परम्परा से जुड़े सभी त्यौहार जैसे- होली, दीपावली, श्री रामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अतिरिक्त पूज्य गुरुदेव का महा समाज दिवस गुरु पूर्णिमा, स्वामी तपोवन जयन्ती आदि का विद्यालय द्वारा विधिवत आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित अन्य लोग भी श्रद्धा पूर्वक भाग लेते हैं। विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व स्वतन्त्र दिवस, गणतन्त्र दिवस तथा गांधी जयन्ति बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं, जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा सारंग सांस्कृतिक का मनोहरी प्रदर्शन किया जाता है।

### 6.23.2 प्रतियोगिता का आयोजन

विद्यालय द्वारा यहाँ छात्रों को निम्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है -

- प्रदेश स्तरीय गांधी प्रश्न मंच प्रतियोगिता
- बाल दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता
- जनपद के ग्लोरी संस्थान द्वारा जी.के. आर्ट एवं अंग्रेजी की जनपद स्तरीय प्रतियोगिता
- गीता पाठ प्रतियोगिता इत्यादि।

विद्यालय में खेलकूद की समुचित व्यवस्था की गई है और समय-समय पर खेलकूद का आयोजन करके बच्चों को और अधिक चुस्त-दुरुस्त किया जाता है। खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय स्तर पर कराया जाता है और प्रतियोगिता में विशेष प्रतिभा दिखाने वाले खिलाड़ियों को पुरस्कृत करके उनका उत्साहवर्धन किया जाता है।

### 6.23.3 पुरस्कार वितरण

छात्र-छात्राओं के उत्साह संवर्द्धन हेतु विद्यालय कोष से प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं को समय-समय पर पुरस्कृत किया जाता है। प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्रा को ₹1000 का नगद पुरस्कार व शील्ड प्रदान की जाती है।

### 6.23.4 सेमिनार का आयोजन

छात्र-छात्राओं को अधिक तार्किक एवं निष्ठावान बनाने हेतु समय-समय पर चिन्मय मिशन के स्वामी, आचार्य एवं विद्वानों की सेमिनार कक्षाएं विद्यालय में आयोजित होती रहती हैं, जिसमें छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम किये जाते हैं। शिक्षक-शिक्षिकाओं को भी अधिक प्रखर में चिन्मय विजन कार्यक्रम से अनुरोध करने हेतु समय-समय पर पूज्य स्वामी जी तथा मिशन के वरिष्ठ संतो के मार्गदर्शन एवं वार्ता का लाभ प्राप्त होता है।

### 6.23.5 स्वास्थ्य परीक्षण

विद्यालय में बाल दिवस के अवसर पर सभी छात्र-छात्राओं का विद्यालय द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है, जिसमें नाक, आंख, कान एवं रक्त समूह आदि की जांच कुशल चिकित्सकों के द्वारा करायी जाती है और चिकित्सकों के परामर्श से अभिभावकों को अवगत कराया जाता है।




चित्र सं.-6.23.5.1

## 6.24 अन्य गतिविधियाँ

### 6.24.1 आश्रम

विद्यालय परिसर में **चिन्मय मिशन ट्रस्ट** द्वारा एक आश्रम की व्यवस्था भी की गई है, जिसमें यात्रियों के रुकने, योग ध्यान करने तथा भोजन की उचित सुविधा प्रदान की जाती है।

### 6.24.2 मंदिर

चिन्मय मिशन ट्रस्ट द्वारा 2004 में एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया।



चित्र सं.- 6.24.2- चिन्मय मिशन ट्रस्ट द्वारा स्थापित मंदिर

### 6.24.3 **वानप्रस्थ**

चिन्मय मिशन के आधुनिक सुविधाओं से युक्त वानप्रस्थ आश्रम प्रयाग, रीवा एवं मंधना में कार्यरत है, जहाँ साधक वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवा, भोजन एवं साधना की समुचित व्यवस्था है। इस संस्थान में अवकाश प्राप्त लोगों को 'योग ध्यान' की क्रिया सिखायी जाती है। अवकाश प्राप्त लोगों को कोर्स भी कराया जाता है और बची जिंदगी जीने का तरीका सिखाया जाता है। वृद्धों को ट्रेनिंग दी जाती है, जिसकी फीस ₹600 प्रति माह ली जाती है और यह कोर्स 5 महीने का होता है।




परम् पूज्य स्वामी चैतन्यानन्द जी
स्थानीय आचार्य
चिन्मय मिशन, प्रयाग

# सप्तम अध्याय

## निष्कर्ष एवं सुझाव

चिन्मय मिशन के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट किया गया है कि चिन्मय मिशन के शैक्षिक दर्शन में शिक्षा की अहम भूमिका है। शोधकर्ता को चिन्मय मिशन के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

- स्वामी चिन्मयानन्द महाराज के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं के प्रति भली-भांति जागरूक थे। इसलिए उन्होंने जीवन के कटु सत्य की उपेक्षा नहीं की। शिक्षा के द्वारा बुद्धि, मस्तिष्क, शरीर व आत्मा के साथ ही हाथों का परीक्षण करने के पक्ष में भी थे।
- व्यवसाय शिक्षा सम्बन्धित विचार स्वामी चिन्मयानन्द जी ने सबके समक्ष रखे। आज व्यक्ति को उसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो उसे बेरोजगारी से मुक्ति दिलाकर उसको जीविकोपार्जन करा सके। ऐसी स्थित में चिन्मयानन्द जी द्वारा समर्पित हस्त शिल्प एवं हस्त उद्योग जैसी व्यवसाय शिक्षा पर बल दिया गया है। इस महापुरुष के व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धित विचार आधुनिक शिक्षा जगत में प्रासंगिक ही नहीं अपितु सर्वमान्य होने चाहिए। स्वामी चिन्मय जी द्वारा स्थापित 'चिन्मय मिशन' में भारतीय संस्कृति, वेदान्त दर्शन और शैक्षणिक पाठ्यक्रम को समावेशित कर बोधगम्य शिक्षा प्रणाली को विकसित किया गया है। इनका उद्देश्य विद्यार्थियों में जीवन की समस्याओं व चुनौतियों का सकारात्मक भाव से सामना करने की क्षमता विकसित करना तथा सार्थक व सफल जीवन की कला सिखाना है।
- चिन्मय मिशन अपनी शिक्षा में धार्मिक प्रचार-प्रसार से लेकर शिशु विहार, बाल विहार, चिन्मय युवा केन्द्र व चिन्मय सेतुकारी जैसी संस्थाएं चलाकर बच्चों से लेकर युवाओं को जागरूक कर रोजगार दिलाने एवं विभिन्न प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराने पर जोर दिया है।

- हमें ऐसी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, जिससे चरित्र बने, मानसिक बल बड़े, बुद्धि का विकास हो और स्वरोजगार प्राप्त कर सके।
- हमारे देश में ज्ञान का दान सदा त्यागी पुरुषों द्वारा ही होता आया है। अत: ज्ञान दान का भार पुन: त्यागियों के कन्धों पर होना चाहिए।
- स्वामी जी के वेदान्त दर्शन में छात्र सत्य, एकता, सहयोग, धर्मपरायणता, मस्तिष्कोत्तेजना, दया, अहिंसा, अन्तःदर्शन, अनेकता में एकता, परमानन्द जैसे अनेकानेक आधारभूत तत्व विद्यमान है, जो छात्रों को आदर्श नागरिक बनाकर एक स्वास्थ्य शैक्षिक समाज के सृजन में सहायक है।
- स्वामी जी धर्म शिक्षा, रोजगार शिक्षा, महिला रोजगार, जनसेवा, जनसाधारण शिक्षा पर अधिक जोर दिया है। मनुष्य की आत्मा स्वभाव से स्वयं प्रकाशित है। अतः हमारे लिए प्रकाश का अस्तित्व सदा से ही है।
- गुरु के सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक होता है कि उन्हें शास्त्रों का ज्ञान हो। जो शास्त्रों के वास्तविक जानकार (ज्ञाता) हैं, वही असल में सच्चे धार्मिक गुरु हैं।
- जन शिक्षा के माध्यम से जीवन के हर शैक्षिक पहलुओं को आध्यात्मिक बनाने पर जोर दिया है।
- स्वामी जी का सम्पूर्ण भारतीय सांस्कृतिक एवं वेदान्त दर्शन व्यक्तित्व की अन्तर्निहित शक्तियों के सर्वांगीण विकास के अधारभूमि हैं। स्वामी जी का मानना है कि चरित्र निर्माण के संस्कार बालक को छात्र जीवन से ही देने होंगे, तभी वे एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में विकसित होंगे।

शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में स्वामी जी की विचारधाराएं वाह्य रूप से भिन्न होते हुए मूलतः एक थी। विभिन्न मार्गों से चलकर उन्हें एक ही राज को सामने रखा और वह था जीवन का शाश्वत मूल्य। वह शाश्वत मूल्य, जिसकी आज आधुनिक शिक्षा में आवश्यकता है।

## 7.2 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध **चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान** से प्राप्त निष्कर्षों के आलोक में हम यह कह सकते हैं कि यह अध्ययन शिक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों के लिए भी महत्वपूर्ण उपादेयता रखता है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में जब मानवीय मूल्य किताबों में कैद होकर रह गया एवं छात्र अति भौतिकवादी परिवेश में अपने सदाचरण व संस्कार विस्मित करते जा रहे हैं, तब इस संक्रमण काल में छात्रों के आधारभूत मानवीय मूल्यों को जीवन्त रखने में यह लघु शोध प्रभावी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत लघु शोध में समाज निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावशाली और श्रेष्ठ बनाने के लिए स्वरोजगार उपलब्ध कराने तथा भावी आदर्श नागरिकों के निर्माण हेतु कुछ आधारभूत तत्व (जनसेवा, वृद्ध सेवा, स्वरोजगार सेवा आदि) को उद्घाटित किया गया है। इन आधारभूत तत्वों को पाठ्यचर्या में समाहित कर एक स्वस्थ शैक्षिक समाज का निर्माण करने में सहायक है।

**चिन्मय मिशन** द्वारा जन शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, उपयोग शिक्षा आदि पर जोर दिया गया है। मिशन द्वारा उपरोक्त शिक्षा पर जोर देना आज पूर्णरूपेण प्रसांगिक है, क्योंकि जब तक इस प्रकार की व्यवस्था सुसंगठित एवं सुचारु रूप से नहीं होगी, तब तक शिक्षा द्वारा उन्नति और राष्ट्र की कोई संभावना नहीं है।

चिन्मय मिशन में शिक्षाभ्यास के साथ अध्यात्म की आवश्यकता सर्वोपरि है। साधना, उपासना, आध्यात्मिक ज्ञान से ओत प्रोत साहित्य के निरंतर स्वाध्याय, मनन, चिंतन व्रत उपवास आदि की आवश्यकता शिक्षा को प्रभावी बनाती है।

चिन्मय मिशन का शैक्षिक दर्शन इस विश्व को समस्याओं एवं उत्पीड़नों से मुक्त कर सम्पूर्ण मानव जाति को सुखी जीवन बिताने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

चिन्मय मिशन के दार्शनिक स्वरूप यथार्थ, शाश्वत और पूर्णानन्द की प्राप्ति का पाथेय माना जाता था। आज भी यह आदर्श जीवन स्थापित करने का पर्याय माना जाता है, इसलिए उस तथ्य पर ज्यादा जोर दिया जाता है, जो व्यक्ति के आंकड़ों का परिवर्तन करती है। स्वामी जी के दार्शनिक सिद्धान्तों का आज भी मानवीय कृतियों में अधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

## 7.3 अध्ययन के सुझाव

- शोधकर्ता की यही धारणा है कि चिन्मय मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अप्रतिम है। चिन्मय मिशन के शैक्षिक प्रयासों को अधिकाधिक विस्तारित किए जाने की आवश्यकता है इस हेतु सरकार एवं समाज का अधिक सहयोग अपेक्षित है ताकि देश में भारतीय जीवन मूल्यों से मुक्त आधुनिक शिक्षा का स्वप्न स्वीकार  किया जा सके।
- चिन्मय मिशन का शैक्षिक दर्शन इस बीच को समस्त उत्तीर्णो से मुक्त कर संपूर्ण मानव जाति को सुखी जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त सकता है।
- इन संस्थानों को वर्तमान युग के लिए आवश्यक कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करने की औपचारिकता निभाते हुए गंभीर पैसों की ओर ध्यान देना चाहिए।
- छात्रों को और अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए इन संस्थाओं द्वारा सर्वप्रथम आचार्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने एवं चिंताओं को कम करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- इन संस्थाओं को अपने यहां पुस्तकालय, क्रीड़ा कक्षाओं,  क्रीड़ा क्षेत्र एवं संगीत कक्षाओं की उपलब्धता एवं सुनिश्चितता तथा  उनकी स्थिति में   सुधार करने की ओर ध्यान देना चाहिए।
- छात्रों के मनोरंजन एवं सर्वांगीण विकास के उद्देश्यों के अंतर्गत विभिन्न पाठ्य का आयोजन प्रतिवर्ष नियमित रूप से होना चाहिए।
- किशोरावस्था के छात्रों की विभिन्न समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए इन संस्थानों को अपने यहां निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं, स्वास्थ्य सेवाओं एवं रोजगार पर कौशलों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए
- इन संस्थानों पर चलाए जा रहे हैं वृद्ध सेवा जनसेवा, स्वास्थ्य रक्षा सेवा पर नियम तरीके से कार्य करना चाहिए।
- युवाओं के लिए चलाए जा रहे हैं प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए।
- मिशन के द्वारा चलाए जा रहे हैं विद्यालय में पाठ सामग्री का प्रयोग अनिवार्य रूप से होना चाहिए।
- प्राथमिक स्तर के बच्चों को खेल के माध्यम से अध्ययन कर आना चाहिए।

- चिन्मय मिशन का शैक्षिक दर्शन को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए।
- देश के चारित्रिक विकास एवं विश्व बंधुत्व से प्रेरित इस चिन्मय मिशन की संस्थाएं देश के कोने कोने में स्थापित की जानी चाहिए जिससे हमारे राष्ट्र निर्माण सही अर्थों में और ठीक ढंग से हो सके।
- आज की परिस्थिति में स्वामी चिन्मयानंद के विचारों पर आधारित चिन्मय मिशन की शिक्षा तथा उनका संदेश हमारे लिए कितना मूल्यवान है, इसे आंकना सहज नहीं है। हमारे जीवन का कोई पहलु नहीं, ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका हमें उनकी शिक्षा में ना मिल जाता हो- वे समस्याएं चाहे किसी व्यक्ति को ही या समाज की हो अथवा देश की हो। इसलिए चिन्मय शिक्षा अभियान का अधिक से अधिक का प्रचार प्रसार करना आवश्यक है।

## 7.4 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध कार्य के निष्पादन के पश्चात शोधकर्ता को कतिपय सुझाव दृष्टिगोचर हुए जो अधोलिखित हैं-

- भावी शोध में चिन्मय मिशन द्वारा संचालित अन्य चिन्मय विद्यालयों का अध्ययन किया जा सकता है।
- चिन्मय मिशन संस्थाओं का अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के कार्यों से तुलनात्मक अध्ययन।
- चिन्मय मिशन संस्थाओं में अध्ययनरत छात्रों का सामाजिक एवं धार्मिक आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन।
- चिन्मय मिशन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की पृष्ठभूमि एवं सामाजिक स्थिति का उनके छात्रों एवं शैक्षणिक कार्यों पर प्रभाव।
- भावी शोध में शिक्षा में चल रहे अभिनव प्रयोगों को सम्मिलित किया जा सकता है।

  * चिन्मय मिशन के अन्य शिक्षण संस्थाओं का अध्ययन
  * अरविन्द आश्रम पुडुचेरी
  * विवेकानन्द केन्द्र का शैक्षिक योगदान
  * विश्व जागृति मिशन का शैक्षिक योगदान
  * इस्कॉन का शैक्षिक योगदान।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


- गुप्ता, अर्चना कुमारी।(1999 )। महात्मा गांधी एवं बिनोवा भावे के शैक्षिक विचारों का नवीन शिक्षा नीति के परिपेक्ष में आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन  पी०एचडी०- शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी
- सिंह,नीलम।(1999)। भारत में  मिशनरी शिक्षा योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता पी०एचडी०- शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।<http://hdl.handle.net/10603/12268>
- गुप्ता,सत्येंद्र।(2005)। बुंदेलखंड उत्तर प्रदेश क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन पी०एचडी०- शिक्षाशास्त्र,बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।<http://hdl.handle.net/10603/13596>
- तिवारी,शिवकांत।(2001- 2002)। बुंदेलखंड क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षिक योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन   पी०एचडी०-शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।<http://hdl.handle.net/10603/15303>
- सिंह, रेनू। (2008) भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का शैक्षणिक योगदान विशेष रुप से दलितों के शैक्षणिक उत्थान में पी०एचडी०- शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।<http://hdl.handle.net/10603/12262>
- शर्मा, डॉ० शशिकांत। (2007)। गिजुभाई बधेका का  शैक्षणिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता पी०एचडी०- शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। <http://hdl.handle.net/10603/12530>
- राजेश। (2008)। बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रसंगिकता पी०एचडी०- शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। http://hdl.handle.net/10603/10747
- त्रिपाठी,आशुतोष। (2014)। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के आध्यात्मिक अध्यात्मवाद का व्यवहारिक दृष्टिकोण से शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान एवं समीक्षात्मक अध्ययन पी०एचडी०-  शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।http://hdl.handle.net/10603/225812

- गुप्ता, (प्रो o) एस०पी० ।(2017)। अनुसंधान संदर्शिका, प्रयागराज: शारदा पुस्तक पब्लिकेशन। पांडेय, आर ० एस ०। (2011)। उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
- पाठक, पीo डीo। (2010)। भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन
- पांडेय, आर ० एस ०। (2011)। उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
- स्वामी चिन्मयानंद -विकीपीडिया - https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A5%80_%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%82%E0%A4%A6
- चिन्मय मिशन : विकीपीडिया
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%AF_%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A4%A8।
- चिन्मय मिशन पत्रिका।(2015) ।प्रकाशन साकी विहार रोड, मुंबई।
- स्वामी चिन्मयानंद ।(2015)। चिन्मय प्रकाशन साकी विहार रोड, मुंबई।

Spiritual living
is the science
that teaches us
how to repair our broken hearts
and draw the music out of them.

– Swami Chinmayananda




ISBN 978-93-5473-773-2
9 789354 737732 >